

रजिस्टर्ड नं० पी०/एस० एम० 14.



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्यशासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, शनिवार, 1 दिसम्बर, 1984/10 अग्रहायण, 1906

हिमाचल प्रदेश सरकार

वित्त विभाग

अधिसूचना

शिमला-2, 26 नवम्बर, 1984

संख्या एक०आई० एन० 2 (सी) (ए) 4-1/82.—हिमाचल प्रदेश राजपत्र (असाधारण) तारीख 30 जुलाई, 1984 में प्रकाशित सम संख्यांक अधिसूचना तारीख 24 मई, 1984 का अधिक्रमण करते हुए, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल, चिट फण्ड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम 40) की धारा 89 द्वारा प्रदत्त प्रशक्तियों का प्रयोग करते हुए भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से निम्नलिखित हिमाचल प्रदेश चिट फण्ड नियम, 1984 बनाते हैं ।

हस्ताक्षरित/-
संयुक्त सचिव ।

हिमाचल प्रदेश चिट फण्ड नियम, 1984

अध्याय—I

प्रस्तावना

1. संक्षिप्त नाम.—(1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम हिमाचल प्रदेश चिट फण्ड नियम, 1984 है।
(2) ये नियम हिमाचल प्रदेश में 1 दिसम्बर, 1984 से प्रवृत्त होंगे।
2. परिभाषाएं.—इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—
 - (क) “अधिनियम” से चिट फण्ड अधिनियम, 1982 (केन्द्रीय अधिनियम 1982 का 40) अभिप्रेत है;
 - (ख) “परिशिष्ट” से इन नियमों का यथास्थिति, परिशिष्ट i या परिशिष्ट ii अभिप्रेत है ;
 - (ग) “प्राधिकृत एजेंट” से वह व्यक्ति अभिप्रेत है जिसे भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (केन्द्रीय अधिनियम 1908 का XVI) की धारा 33 में निर्दिष्ट पद्धति से निष्पादित और प्रमाणित मुस्तार-नामे द्वारा प्राधिकृत किया गया हो या वह व्यक्ति जिसे सम्बन्धित व्यक्ति ने फार्म XV में विनिर्दिष्ट प्राधिकार पत्र द्वारा प्राधिकृत किया हो ;
 - (घ) “फार्म” से इन नियमों के परिशिष्ट i में दिया गया फार्म अभिप्रेत है ;
 - (ङ) “धारा” से अधिनियम की धारा अभिप्रेत है ;
 - (च) “राज्य सरकार” से हिमाचल प्रदेश सरकार अभिप्रेत है ; और
 - (छ) ऐसे शब्दों और पदों के जो इसमें प्रयुक्त हैं किन्तु परिभाषित नहीं हैं वे ही अर्थ होंगे जो अधिनियम में क्रमशः उनके हैं।

अध्याय—II

पंजीकरण

3. चिट को शुरू करने या उसे चलाने के लिए पूर्व अनुमति हेतु आवेदन.—चिट को शुरू करने या चलाने के लिए राज्य सरकार या इसके लिए प्राधिकृत अधिकारी को पूर्व अनुमति प्राप्त करने हेतु प्रत्येक आवेदन फोरमैन द्वारा फार्म i में किया जाएगा।
4. चिट शुरू करने या उसे चलाने की मंजूरी की अस्वीकृति की सूचना.—जहां चिट शुरू करने और उसे चलाने की मंजूरी के लिए अस्वीकृति दी जाती है वहां ऐसी अस्वीकृति के कारणों को लेख बद्ध किया जाएगा और उसकी एक प्रति आवेदक को भेजी जाएगी।
5. चिट के पंजीकरण के लिए आवेदन.—चिट के पंजीकरण के लिए फोरमैन द्वारा पंजीयक को किया जाने वाला प्रत्येक आवेदन फार्म ii में किया जाएगा।
6. चिट करार के पंजीकरण का अनुमोदन.—पंजीयक द्वारा जारी किया जाने वाला चिट करार के पंजीकरण का अनुमोदन फार्म iii में होगा।
7. चिट की पंजीकरण संख्या.—अधिनियम के अन्तर्गत पंजीकृत चिट को प्रत्येक कैलेण्डर वर्ष की अलग सीरीज में पंजीयक द्वारा क्रम संख्या दी जाएगी।

8. चिट के पंजीकरण की अस्वीकृति को सूचना.—यदि पंजीयक किसी चिट को पंजीकृत करने से इन्कार करता है तो वह इन्कार करने के कारणों का लिखित रिकार्ड रखेगा और आदेश अस्वीकृति की एक प्रति आवेदक को भेजेगा।

9. प्रारक्षित निधि में से किसी भी राशि के विनियोजन के लिए आवेदन.—प्रारक्षित निधि में से किसी भी राशि के विनियोजन के लिए पंजीयक को पूर्वानुमोदन प्राप्त करने के लिए प्रत्येक फार्म आवेदन iv में किया जाएगा।

10. चिट के सभी टिकटों की राशि के अभिदान के सम्बन्ध में प्रस्तुत की जाने वाली घोषणा.—चिट करार में निर्दिष्ट चिट में सभी टिकटों की पूरी राशि के अभिदान के बाद फोरमैन द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक घोषणा फार्म v में होगी।

11. चिट शुरू होने के सम्बन्ध में प्रमाण-पत्र का फार्म.—चिट शुरू होने के सम्बन्ध में फोरमैन को दिया जाने वाला प्रमाण पत्र फार्म vi में होगा।

12. चिट के सदस्यों को चिट करार की प्रति प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में प्रमाण-पत्र का फार्म.—चिट के प्रत्येक सदस्य को चिट करार की एक एक प्रति दे दी गई है इस सम्बन्ध में फोरमैन द्वारा पंजीयक को प्रस्तुत किया जाने वाला प्रमाण-पत्र फार्म vii में होगा।

13. चिट करार का फार्म.—अधिनियम के अन्तर्गत शुरू की गयी प्रत्येक चिट का चिट करार जहां तक संभव हो फार्म viii में दिये गये प्रोफार्म के अनुरूप होगा।

14. चिट करार में किसी परिवर्तन, परिवर्धन और विलोपन का पंजीकरण.—(1) चिट करार के किसी उपबन्ध में कोई परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन तब तक प्रभावी नहीं होगा जब तक ऐसे परिवर्तन या यथास्थिति परिवर्धन या यथास्थिति विलोपन पंजीकृत न हो। यदि फोरमैन चिट करार के किसी उपबन्ध में कोई परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन करता है तो वह उसे ऐसे परिवर्तन या परिवर्धन या विलोपन कम से कम दो प्रतियों में दो गवाहों द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित और प्रमाणित कर पंजीयक को चिट करार में यथास्थिति ऐसे परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन के पंजीकरण के लिए आवेदन-पत्र के साथ पंजीयक को प्रस्तुत करेगा।

(2) चिट करार के किसी उपबन्ध में परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन के सम्बन्ध में आवेदन-पत्र पर उसी ढंग से कार्रवाई की जाएगी जिस प्रकार से चिट करार के पंजीकरण के आवेदन-पत्र पर की जाती है।

15. चिट करार के किसी उपबन्ध में परिवर्तन, परिवर्धन और विलोपन लागू करने की तारीख.—चिट करार के किसी उपबन्ध में कोई परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन ऐसे किसी परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन के पंजीकरण की तारीख से पहले तब तक अमल में नहीं आयेगा जब तक पंजीयक द्वारा अन्यथा आदेश न दिया गया हो।

बशर्त कि पंजीयक चिट करार के किसी उपबन्ध में यथास्थिति परिवर्तन, परिवर्धन और विलोपन के पंजीकरण के लिए आवेदन की तारीख से पहले की तारीख से परिवर्तन, परिवर्धन और विलोपन को अमल में न लाये।

16. चिट के सदस्यों को नोटिस देने का फार्म.—धारा 16 के अन्तर्गत चिट के सदस्यों को फोरमैन द्वारा दिया जाने वाला प्रत्येक नोटिस फार्म ix में होगा। यह डाक प्रमाण-पत्र के अधीन प्रत्येक सदस्य को भेजा जाएगा और फोरमैन के कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर भी लगाया जाएगा।

17. कार्यवाही के कार्यवृत्त का फार्म.—धारा 17 की उप-धारा (2) में निर्दिष्ट विवरणों के अतिरिक्त कार्यवाही के प्रत्येक कार्यवृत्त में निम्नलिखित मुद्दों के पूरे विवरण होंगे अर्थात्,—

(क) पहले के डा की तारीख से धारा 22 की उप-धारा (1) और (2) के अन्तर्गत इन सभी राशि की जमा रकम, यदि कोई हो, के विवरण ;

- (ख) पहले के ड्रा की तारीख से धारा 30 की उपधारा (1) और धारा 33 की उपधारा (4) के अन्तर्गत जमा धन, यदि कोई हो, के विवरण ;
- (ग) अनुमोदित बैंक (बैंक के नाम का उल्लेख करें) से आहरित राशि और वह प्रयोजन जिस के लिए पिछले ड्रा की तारीख से, राशि आहरित की गयी ;
- (घ) चिट करार और टिकटों तथा इनाम की राशि के विवरणों के अनुसार इनाम दिया जाने वाला सदस्य कैसे सुनिश्चित किया गया । यदि इनाम प्राप्त सदस्य का निर्णय टिकट के अंश से सम्बन्धित है तो ऐसे प्रत्येक अंश के सम्बन्ध में विवरणों की प्रविष्टि की जाएगी ;
- (ङ) फोरमैन के अदा किये गये कमीशन और प्रत्येक सदस्य को दिये जाने वाले लाभांश के विवरण ; और
- (च) सदस्यों के नाम या उनके उन प्राधिकृत एजेंटों के नाम जिन्होंने आहरण के समय बोली लगायी, उनकी टिकट संख्याएं और हस्ताक्षर ।

अध्याय-III

फोरमैन

18. फोरमैन द्वारा दी गयी जमानत के मामले में क्रियाविधि- (1) धारा 20 की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अन्तर्गत पंजीयक के नाम अनुमोदित बैंक में जमा की गयी नकद राशि के मामले में चिट करार के उल्लिखित अनुमोदित बैंक द्वारा जारी की गयी रसीद या बही पंजीयक को सुपुर्द की जाएगी ।

(2) धारा 20 की उप-धारा (1) के खण्ड (ख) के अन्तर्गत पंजीयक के नाम अंतरित सरकारी प्रतिभूतियों के मामले में पंजीयक उन्हें किसी सरकारी खजाने में अपने नियंत्रण के अधीन सुरक्षित अभिरक्षा में रखेगा ।

(3) यदि ली जाने वाली जमानत अनुमोदित बैंक में जमा राशियों और सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न चल संपत्ति है तो यह सुनिश्चित करने के लिए कि जमा की गयी संपत्ति चिट को सुचारू रूप से चलाने के लिए उपलब्ध है, उसे पंजीयक या पंजीयक द्वारा अनुमोदित बैंक या एजेंसी के पास जमा करने के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करेगा ।

(4) धारा 20 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) के अन्तर्गत के पंजीयक के नाम अंतरित की जाने वाली न्यायिक प्रतिभूतियों के मामले में :-

(i) जहां जमानत अचल संपत्ति से भिन्न है वहां जमानत का मूल्य चिट की राशि के मूल्य से डेढ़ गुना से अग्र्यून नहीं ; और

(ii) अचल संपत्ति के सम्बन्ध में, जमानत का मूल्य चिट की राशि के मूल्य से दो गुना से अग्र्यून नहीं होगा ।

(5) चिट को सुचारू रूप से चलाने के लिए जमानत के रूप में चल या अचल सम्पत्ति देने का प्रस्ताव करने वाले चिट के फोरमैन को फार्म X में पंजीयक को आवेदन करना होगा । इस उप-नियम के अन्तर्गत आवेदन-पत्र में जमानत के रूप में दी जाने वाली संपत्ति के सम्बन्ध में सही और पूरी जानकारी दी जाएगी । (यदि जमानत के रूप में दी जाने वाली सम्पत्ति अचल है तो आवेदन पत्र के साथ संपत्ति का हक विलेख और संपत्ति से सम्बन्धित 30 वर्षों के लिए अधिकार सम्बन्धी प्रमाण-पत्र दिया जाना चाहिए) ।

(6) जहां जमानत के रूप में दी गयी अचल संपत्ति चिट पर अधिकार रखने वाले पंजीयक के अधिकार क्षेत्र से बाहर है तो संपत्ति का निरीक्षण सम्बन्धित राज्य सरकार के आदेशों के अन्तर्गत उस पंजीयक द्वारा किया जाएगा जिसे अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत ऐसी संपत्ति आती है, और वह पंजीयक जमानत की पर्याप्तता के सम्बन्ध में एक रिपोर्ट सम्बन्धित पंजीयक को भेजेगा ।

(7) यदि दी गयी जमानत पंजीयक द्वारा पर्याप्त मानी जाए तो वह आवेदन-पत्र के ऊपर लिखित रूप में फार्म-X में पर्याप्त सम्बन्धी प्रमाण-पत्र देना और किए गये मूल्यांकन का विवरण संलग्न करेगा ।

(8) यदि दी गयी जमानत पंजीयक द्वारा स्वीकार नहीं की जाती तो वह आवेदक को इस आशय का परांकन भेजेगा ।

19. अनाज चिटों में चिट की राशि का मूल्यांकन.—अनाज चिटों में धारा 20 के अन्तर्गत जमानत के प्रयोजन के लिए पंजीयक द्वारा अनाज का मूल्यांकन निम्न प्रकार किया जाएगा :—

- (क) सभी सदस्यों के चिट की एक किस्त में प्राप्य अनाज की कुल मात्रा सुनिश्चित की जाएगी ;
- (ख) इसके बाद खण्ड (क) में उल्लिखित कुल मात्रा का उस समय का बाजार मूल्य गिना जाएगा ;
- (ग) बाजार मूल्य का निर्धारण करते समय पंजीयक निकटस्थ तालुके, कस्बे के चालू बाजार मूल्यों को अपनाएगा जो उस तहसीलदार से सुनिश्चित किये जाएंगे जिसके अधिकार क्षेत्र में वह तालुका, कस्बा आता है ; और
- (घ) खण्ड (ख) में उल्लिखित बाजार मूल्य की सवा गुना राशि का धारा 20 की उपधारा (1) के अन्तर्गत फोरमैन द्वारा जमानत प्रस्तुत करने के प्रयोजन के लिए चिट की राशि के रूप में लिया जाएगा ।

20. जमानत का प्रतिस्थापन.—(1) चिट के चलने की अवधि के दौरान फोरमैन चिट को नयी जमानत द्वारा सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने द्वारा दी गयी जमानत के प्रतिस्थापन की अनुमति के लिए फार्म XII में पंजीयक को आवेदन कर सकता है ।

(2) पंजीयक निम्न बातों से संतुष्ट होने के बाद अनुमति दे सकता है :—

- (i) धारा 20 के अन्तर्गत जमानत के प्रतिस्थापन के लिए फोरमैन का अनुरोध आवेदन-पत्र में किये गये कारणों के लिए है ; और
- (ii) दी गयी जमानत पर्याप्त है ।

(3) नियम 18 में निर्धारित क्रियाविधि यथा परिवर्तित रूप में इस नियम के अन्तर्गत फोरमैन द्वारा दी गयी प्रतिस्थापित जमानत पर लागू होगी ।

21. नयी जमानत स्वीकार करने की क्रियाविधि.—(1) यदि फोरमैन चाहे तो पंजीयक फोरमैन की जिम्मेदारी पर मूल जमानत के संदर्भ में जमानत छुड़ाने सम्बन्धी विलेख निष्पादित और पंजीकृत कर देगा ।

(2) यदि वापस की जाने वाली जमानत सरकारी खजाने में जमा की गयी सरकारी तिभूतियां हैं तो पंजीयक यथास्थिति पास बुक (रसीद) या सरकारी प्रतिभूति (या अन्य अभिलेख) में पुनः अन्तरण का पृष्ठांकन करने के बाद फोरमैन द्वारा दी गयी प्रतिभूतियां लौटाने की व्यवस्था करेगा ।

(3) यदि लौटायी जाने वाली मूल जमानत प्रतिभूति से भिन्न चल संपत्ति है तो पंजीयक फोरमैन के नाम पुनः अन्तरण के लिए ऐसे विलेख को निष्पादित कर या ऐसा करांकन जो आवश्यक हो, करके ऐसी प्रतिभूति को लौटाने की व्यवस्था करेगा ।

22. जमानत छुड़ाने के लिए आवेदन.—चिट के समाप्त होने पर, फोरमैन अपने द्वारा दी गयी जमानत को छुड़ाने के लिए पंजीयक को आवेदन कर सकता है ।

23. फोरमैन द्वारा की जाने वाली घोषणा.—धारा 20 की उप-धारा (5) के अन्तर्गत जमानत छुड़ाने के लिए आवेदन-पत्र में फोरमैन द्वारा अलग से हस्ताक्षरित घोषणा होगी जिसमें यह उल्लेख होगा कि सभी सदस्यों के दावे पूरे कर दिये गये हैं और अधिनियम के अन्तर्गत फोरमैन द्वारा पंजीयक या किसी अन्य अधिकारी को देय पूरी राशि अदा कर दी गयी है ।

24. जमानत छुड़ाने की क्रिया विधि.—(1) (क) धारा 20 की उप-धारा (5) के अन्तर्गत जमानत छुड़ाने के प्रयोजन के लिए पंजीयक फोरमैन को रखे गये रजिस्टर और लखा बही की सत्य प्रतिलिपि के रूप में विधिवत् प्रमाणित प्रति प्रस्तुत करने के लिए कहेगा और अपने कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर एक नोटिस लगाएगा जिसमें यह उल्लेख होगा

कि जमानत छुड़ाये जाने का प्रस्ताव है और यदि किसी व्यक्ति को इस जमानत के छुड़ाये जाने पर कोई आपत्ति हो तो वह नोटिस लगाये जाने की तारीख से 15 दिन के भीतर आपत्तियों का विवरण पंजीयक को प्रस्तुत कर सकता है ; और

(ख) यदि सूचना में निर्दिष्ट अवधि के दौरान कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती तो पंजीयक जमानत लौटा देगा।

(2) यदि कोई आपत्तियां प्राप्त होती है तो पंजीयक उप-नियम (1) (क) में उल्लिखित नोटिस में निर्दिष्ट अवधि की समाप्ति की तारीख के बाद 14 दिन के भीतर स्पष्ट रूप से आपत्तियों के सम्बन्ध में छानबीन करेगा और लिखित रूप में अपना निर्णय देगा और उसकी एक प्रति फोरमैन और आपत्तिकर्ता को भेजेगा।

25. फोरमैन द्वारा रखी जाने वाली लेखा बहियां.—धारा 17 में उल्लिखित डा के कार्यवृत्त की बही के अतिरिक्त प्रत्येक फोरमैन निम्नलिखित रजिस्टर और लेखा बहियां प्रत्येक के सामने दिये गये या यथा संभव उनके बहुत निकट आने वाले फार्मों में रखेगा :—

- (1) सदस्यों का रजिस्टर फार्म—Xii में।
- (2) लैजर फार्म—Xiv में।
- (3) दैनिक बही फार्म—Xv में।
- (4) रसीद बही फार्म—Xvi में, जो पूरे पृष्ठों तक दो प्रतियों में फोरमैन द्वारा विधिवत प्रमाणित हो।
- (5) फोरमैन द्वारा सभी सदस्यों को जारी किये गये नोटिसों की प्रतियों की फाइल।
- (6) चिट करार में सदस्यता के लिए उनका नाम लिखने और चिट की नीलामी में भाग लेने के लिए सदस्यों के प्राधिकार-पत्रों की फाइल।
- (7) फोरमैन द्वारा की जाने वाली अदायगी के वाउचरों की फाइल।
- (8) इनाम प्राप्त सदस्यों द्वारा दी गयी जमानत से सम्बन्धित दस्तावेजों की फाइल।

26. तुरन्त लिखे जाने वाले लेखे.—(1) सदस्यों के रजिस्टर, लैजर या नियम 25 में उल्लिखित दैनिक बही में प्रत्येक प्रविष्टि घटना विशेष के होने पर तुरन्त की जाएगी।

(2) कोई भी राशि प्राप्त होने पर फोरमैन द्वारा फार्म—Xvi में रसीद तैयार की जाएगी या करवायी जाएगी और अदाकर्ता को दे दी जाएगी।

(3) प्रत्येक सूचना जारी करते समय फोरमैन नियम 25 के खण्ड (5) के अन्तर्गत उल्लिखित बही में उसकी एक प्रतिलिपि तैयार कर उसे सत्य प्रति के रूप में प्रमाणित करेगा तथा अपने हस्ताक्षरों और नोटिस भेजने की तारीख सहित उसका प्रविष्टि करेगा।

(4) प्राप्तकर्ता को अदायगी करते समय फोरमैन उससे विधिवत हस्ताक्षरित वाउचर प्राप्त करेगा और उसमें प्रविष्टि किये गये विवरणों की उपयुक्त जांच कर ऐसे वाउचर नियम 25 के खण्ड (7) में निर्दिष्ट फाइल में तुरन्त फाइल कर देगा।

(5) इनाम प्राप्त सदस्य द्वारा दी गयी जमानत से सम्बन्धित प्रत्येक दस्तावेज प्राप्त होते ही नियम (25) के खण्ड (8) में उल्लिखित फाइल में फाइल कर दिया जाएगा। फाइल में विषय सूची भी होगी जिससे कि दस्तावेजों की जांच करने में सुविधा हो।

27. वाउचरों को फाइल करना.—जैसे ही कोई अदायगी की जाती है, फोरमैन अदाकर्ता से एक वाउचर प्राप्त करेगा। वह जांच करेगा कि क्या वाउचर में यह प्रयोजन निर्दिष्ट किया गया है जिसके लिए अदायगी प्राप्त की गयी है और उस पर प्राप्तकर्ता द्वारा ठीक ढंग से हस्ताक्षर किये गये हैं तथा प्रत्येक कैलेंडर मास के लिए क्रम संख्या देने के बाद उसे नियम 25 के खण्ड (7) में उल्लिखित फाइल में रखेगा।

28. तुलनपत्र प्रस्तुत करने की तारीख.—(i) धारा 24 के उपबन्धों के अनुसार तैयार किया गया तुलन-पत्र संबन्धित अवधि की समाप्ति से तीन महीनों की अवधि के अन्दर रजिस्ट्रार को भेजा जायेगा।

- (ii) चिट की अवधि एक वर्ष से अधिक नहीं होने पर तथा एक वर्ष से अधिक होने पर आय और व्यय लेखे तथा प्रत्येक चिट समूह की आस्तियां और देयताएं दर्शाने वाला विवरण फार्म-XXI में रजिस्ट्रार को क्रमशः चिट की समाप्ति से दो महीनों की अवधि में और प्रत्येक बारह महीनों की अवधि की समाप्ति तथा चिट की समाप्ति पर प्रस्तुत किया जायेगा।

28-क. अधिनियम की धारा 28 (1) के उपबन्ध के अनुसार चूककर्ता अभिदाता द्वारा देय व्याज की दर 12 प्रतिशत वार्षिक से अधिक नहीं होगी।

29. चिट लेखा परीक्षक द्वारा परीक्षा.—(1) यदि फोरमैन द्वारा 61 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत नियुक्त लेखा परीक्षक द्वारा लेखा परीक्षित तुलनपत्र और हानि लेखा प्राप्त करना चाहता है तो फोरमैन तुलन-पत्र तैयार होने के तुरन्त बाद ऐसी लेखा परीक्षा के लिए उस पंजीयक को आवेदन करेगा जिसके अधिकार क्षेत्र में चिट चलायी जा रही है, आवेदन-पत्र में यह भी उल्लेख रहेगा कि लेखा परीक्षा फोरमैन के परिसर में होगी या नहीं। परिशिष्ट xii में दी गयी फीस की राशि भी आवेदन-पत्र के साथ भेजी जाएगी।

(2) पंजीयक यथा शीघ्र आवेदन-पत्र उस अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले चिटों के निरीक्षक को भेजेगा जो चिट लेखा परीक्षक द्वारा तुलन-पत्र और लाभ हानि लेखा की लेखा परीक्षा करवायेगा। आवेदन पत्र प्राप्त होने पर चिटों का निरीक्षक उसे चिटों के लेखा परीक्षक के पास भेज देगा जो उसे ऊपर फोरमैन से निश्चित तारीख, समय और स्थान पर चिट अभिलेख मंगवायेगा तथा फोरमैन तदनुसार सभी रजिस्टर, लेखा बहियां और चिट से सम्बन्धित अन्य अभिलेख प्रस्तुत करेगा तथा वह ऐसी सूचना प्रस्तुत करेगा और ऐसी सुविधाएं देगा जो चिट लेखा परीक्षक द्वारा निश्चित किये गये समय और स्थान पर तुलन-पत्र और लाभ हानि लेखा और व्यक्तिगत चिट की प्राप्ति और व्यय खाते की उपयुक्त लेखा परीक्षा के लिए आवश्यक या अपेक्षित हों।

(3) फोरमैन के परिसर में लेखा परीक्षा की तारीख तक या यथास्थिति रजिस्ट्रारों, लेखा बहियों और चिट कारोबार से सम्बन्धित अन्य रिकार्ड प्रस्तुत करने के लिए फोरमैन को सात दिन का नोटिस दिया जाएगा।

30. लेखा परीक्षा प्रमाण-पत्र और चिट लेखा परीक्षक की रिपोर्ट चार प्रतियों में दी जाए.—चिट लेखा परीक्षक अपनी रिपोर्ट और लेखा परीक्षा प्रमाण-पत्र चार प्रतियों में तैयार करेगा और एक प्रति फोरमैन को, दूसरी प्रति पंजीयक को, तीसरी प्रति चिटों के निरीक्षक को भेजेगा और चौथी प्रति अपनी फाइल के लिए रखेगा।

31. चिट लेखा परीक्षक या अन्य लेखा परीक्षकों द्वारा लेखा परीक्षित तुलन-पत्र प्रस्तुत करने का समय.—(1) जहां चिट लेखा परीक्षक द्वारा लेखा परीक्षा की जाती है वहां फोरमैन पंजीयक के पास लेखा परीक्षा प्रमाण-पत्र सहित तुलन-पत्र और लाभ हानि लेखे की एक प्रति और लेखा परीक्षा प्रमाण-पत्र प्राप्त होने की तारीख से एक महीने के भीतर चिट लेखा परीक्षक से प्राप्त लेखा परीक्षा रिपोर्ट या तुलन-पत्र में शामिल अवधि के अंतिम दिन से तीन महीने के भीतर, इन में से जो भी पहले हो, प्रस्तुत करेगा।

(2) कम्पनी अधिनियम, 1956 (केन्द्रीय अधिनियम 1956 का 1) के अधीन कम्पनियों के लेखा परीक्षक के रूप में कार्य करने की योग्यता प्राप्त किसी लेखा परीक्षक द्वारा लेखा परीक्षा किये जाने के मामले में फोरमैन पंजीयक के पास उप-नियम (1) में उल्लिखित दस्तावेज उस अवधि की समाप्ति के तीन महीने के भीतर प्रस्तुत करेगा जिसके संदर्भ में धारा 24 के अधीन नियम 28 के उप-नियम (2) में सन्दर्भित व्यक्तिगत चिट के मामले में 2 महीनों की अवधि में तुलन-पत्र तैयार किया गया है।

अध्याय-IV

चिटों का समापन

32. समापन और उपस्थापन के लिए याचिका का फार्म.—चिट के समापन के लिए याचिका में निम्नलिखित विवरण शामिल होने चाहिए, जैसे :—

- (1) याचिका दाता का पूरा नाम, वर्णन, पेशा और पता।
- (2) सभी नोटिस प्रक्रिया आदि के लिए उसके अधिवक्ता, यदि कोई हो, का पता।

(3) फोरमैन का पता।

(4) चिट का विवरण :

- (i) चिट करार के पंजीकरण की संख्या और तारीख ;
- (ii) किस कार्यालय में चिट करार पंजीकृत किया गया था ;
- (iii) चिट की राशि ;
- (iv) टिकटों की कुल संख्या ;
- (v) सदस्यों की संख्या और प्रत्येक ग्राहक द्वारा लिये गये टिकटों की संख्या ;
- (vi) याचिका की तारीख को गैर-इनामी सदस्यों की संख्या ;
- (vii) ऐसे सदस्यों, यदि कोई हों, की संख्या जिन्हें इनाम की राशि अदा नहीं की गयी है।

(5) याचिका के समर्थन में ऐसे तथ्य जिन पर याचिका दाता विश्वास करता है।

(6) यदि याचिका का आधार यह कि किसी सदस्य के पक्ष में फोरमैन से उसे प्राप्त राशि के संदर्भ में पंजीयक के निर्णय या आदेश पर जारी अन्य अनुवर्ती कार्य का निष्पादन पूर्ण रूप में या आंशिक रूप में असन्तुष्ट और वापिस लौटाये गये हों तो निर्णय और अन्य ऐसे अनुवर्ती कार्यों के निष्पादन से सम्बन्धित पूर्ण रूप या आंशिक रूप से असन्तुष्ट रूप में वापस लौटाये गये विवरण।

(7) यदि चिट के समापन के लिए धारा 48 के खण्ड (घ) के अधीन आवेदन किया गया हो और यदि उक्त खण्ड (क) लागू होता हो तो इस बात को दर्शाने वाले पूरे ध्योरे की धारा 49 के परन्तुक के खण्ड (क) में दी गयी शत पूरी की जाये।

(8) यदि धारा 49 के परन्तुक का खण्ड (ख) लागू होता हो तो क्या राज्य सरकार की पहले मंजूरी ली गयी है (राज्य सरकार के सम्बन्धित आदेश की प्रतिलिपि संलग्न की जाये)।

33. चिट आस्तियां जमा करने और वितरण के प्रस्ताव.—(1) प्राप्तकर्ता यथा शीघ्र निपटान करेगा और निम्नलिखित विवरण दर्शाते हुए पंजीयक को विवरण इसके बाद (अन्तिम विवरण के रूप में उल्लिखित) प्रस्तुत करेगा :

- (क) उन सदस्यों और अन्य व्यक्तियों के नाम जिनसे चिट हेतु धन प्राप्त होता है ;
- (ख) ऐसे सदस्य और अन्य व्यक्तियों के नाम जिनको चिट से धन देय है ;
- (ग) इस बारे में प्रस्ताव कि कैसे चिट आस्तियां जमा की जायें और उनकी देयताओं को निपटाने के लिए उनका कैसे उपयोग किया जाये ; और
- (घ) खण्ड (ख) में निर्दिष्ट व्यक्तियों में से प्रत्येक को अदा की जाने वाली प्रस्तावित राशि।

(2) अन्तिम विवरण की प्रतिलिपि सहित उसे तैयार करने का नोटिस प्रकाशित करना चाहिए और याचिका दाता सदस्यों और प्राप्तकर्ता द्वारा उल्लिखित अन्य व्यक्तियों को पंजीयक द्वारा बताये गये तरीके से नोटिस दिया जाना चाहिए। जिन व्यक्तियों को नोटिस दिया जाना है यदि उनकी संख्या अधिक है तो नोटिस में पंजीयक के विवेकानुसार केवल याचिका दाता को नोटिस दिया जाये और एक या अधिक दैनिक समाचार पत्रों में उसका विज्ञापन दिया जाये। नोटिस में वह तारीख निर्दिष्ट की जाये जब अन्तिम विवरण के सम्बन्ध में आपत्तियों के बारे में सुनवाई होगी और ऐसी आपत्तियां करने वाले किसी व्यक्ति को निम्नलिखित वे लिए बुलाया जायेगा :—

- (i) इस सम्बन्ध में पंजीयक द्वारा निर्धारित तारीख से पहले उसकी आपत्तियों का विवरण उसके लिए आधार जो शपथ-पत्र द्वारा समर्थित हो, प्रस्तुत करना ; और
- (ii) सुनवाई की तारीख को अपनी आपत्तियों के समर्थन में सभी प्रमाणों के साथ व्यक्तिगत रूप से या अधिवक्ता द्वारा उपस्थित होना।

34. समायोजन की अनुमति.—जब फोरमैन से सदस्य को धन देय होता है और साथ ही सदस्य से फोरमैन को धन प्राप्य होता है तो सदस्य को समायोजन का लाभ दिया जाएगा।

35. अंतिम विवरण के बारे में आपत्तियों की सुनवाई.—नियम 33 के उप-नियम (2) के अधीन आपत्तियों की सुनवाई के लिए निश्चित तारीख को पंजीयक आपत्तियों की जांच करेगा और उसके समर्थन में प्रस्तुत प्रमाण, यदि कोई हो, पर विचार करने के बाद आपत्तियों के सम्बन्ध में आदेश देगा तथा अपने आदेश के अनुसरण में अंतिम विवरण में, यदि आवश्यक हो, तो संशोधन के लिए प्राप्तकर्ता को बुलायेगा। पंजीयक ऐसी तारीख निश्चित करेगा, जिससे संशोधन किया जाना है और मौखिक रूप से या लिखित रूप से उन व्यक्तियों को ऐसी तारीख की सूचना देगा जो स्वयं अपने अधिवक्ता के माध्यम से सुनवाई की तारीख को उपस्थित हुए।

36. पंजीयक द्वारा निपटान का अंतिम आदेश.—(1) उसके बाद यथा शीघ्र और नियम 35 के अधीन निश्चित तारीख से कम से कम दस दिन पहले प्राप्त कर्ता पंजीयक को ऐसे सदस्यों या अन्य व्यक्तियों की नयी सूची प्रस्तुत करेगा जिनको धन देय है या जिन से धन प्राप्य है और यथा आवश्यक आगे जांच करने के बाद उपलब्ध चिट आस्तियों के वितरण के लिए नये प्रस्ताव प्रस्तुत करेगा। पंजीयक उक्त सूची और प्रस्तावों पर विचार करेगा और जिस तरह भी वह आवश्यक समझेगा उन्हें अनुमोदित या संशोधित करेगा। तदनुसार पंजीयक नियम 35 के अधीन चिट आस्तियों को जमा करने और वितरण के लिए निश्चित तारीख को अंतिम आदेश देगा। यदि ऐसी आस्तियां सदस्यों को अदा की जाने वाली राशि की पूर्ति करने के लिए अपर्याप्त हों तो पंजीयक उपलब्ध चिट आस्तियों के वितरण के लिए आवश्यक आदेश भी दे सकता है।

(2) पंजीयक द्वारा इस नियम के अधीन दिये गये अंतिम आदेश चिट आस्तियों में से निपटाये जाने वाले कई दावों के अकाट्य प्रमाण होंगे।

37. समापन के खर्च के लिए प्रावधान.—चिट आस्तियों के वितरण के लिए प्रस्ताव करते समय प्राप्त कर्ता, समापन की लागत की अनुमानित राशि का उल्लेख करेगा जिसमें प्राप्तकर्ता का पारिश्रमिक और समापन के सम्बन्ध में प्रासंगिक खर्च की अन्य मदें शामिल होंगी और इस प्रकार की अनुमानित राशि पहले चिट आस्तियों के मूल्य में से प्रदान की जायेगी और काटी जायेगी तथा शेष राशि भी अंतिम विवरण में और नियम 36 में उल्लिखित नयी सूची वितरण के लिए प्रस्तावित होगी।

38. प्राप्तकर्ता द्वारा अंतिम लेख प्रस्तुत करना.—(1) समापन से सम्बन्धित कार्यवाही समाप्त होने पर प्राप्तकर्ता ऐसे अंतिम लेखों के 15 दिन के भीतर पंजीयक द्वारा पारित किये जाने के लिए पंजीयक के पास अपने अंतिम लेख प्रस्तुत करेगा, प्राप्तकर्ता के पास रहने वाला शेष धन पंजीयक को अदा किया जायेगा। प्राप्तकर्ता यह भी बतायेगा कि शेष राशि का निपटान कैसे किया जाये और अपने प्रस्तावों के लिए कारण बतायेगा। वह पंजीयक के पास समाप्त किये गये चिट से सम्बन्धित सभी बहियां, खाते और अन्य अभिलेख जमा करेगा।

(2) उसके बाद प्राप्तकर्ता पंजीयक से प्राप्तकर्ता के रूप में अपने कार्य से विमुक्ति का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने और उसके तथा जामिनियों द्वारा भरे गये उसके मुचलका बांड, यदि कोई हो, से मुक्ति के लिए आवेदन करेगा। ऐसा आवेदन-पत्र प्राप्त होने पर पंजीयक ऐसी विमुक्ति और बांड से मुक्ति तथा चिट आस्तियों, यदि कोई हो, की रकम शेष रकम के निपटान के लिए आदेश दे सकता है।

39. पंजीयक द्वारा समापन का अंतिम आदेश.—(1) चिट कारोबार पूरी तरह समाप्त होने के बाद पंजीयक ऐसे समापन के तथ्य के बारे में आदेश देगा।

(2) ऐसे आदेश की एक प्रति पंजीयक के नोटिस बोर्ड पर लगायी जायेगी।

40. अभिलेखों का निपटान.—पूरी तरह बंद की गई चिट तथा प्राप्तकर्ता की बहियां और कागजात रखे जायेंगे और पंजीयक द्वारा बताये गये तरीके से निपटाये जायेंगे ।

41. बैठकें.—जब सदस्यों की संख्या अधिक हो और पंजीयक, चाहे प्राप्तकर्ता ने आवेदन किया हो या नहीं, किसी भी समय यह समझे कि ऐसी सभी पार्टियों की बैठक आवश्यक है जिससे कि किसी भी मामले में उनकी इच्छा को जाना जा सके, तो पंजीयक ऐसी बैठक करने के लिए आदेश दे सकता है । तदनुसार पंजीयक वह पद्धति और समय तथा स्थान बतायेगा जिसके अनुसार बैठक होगी तथा प्राप्तकर्ता बैठक बुलायेगा और आयोजित करेगा ।

अध्याय-V

फीस

42. फीस की सारणी.—धारा 62 और धारा 63 में निर्दिष्ट मामलों के लिए पंजीयक को देय फीस परिशिष्ट ii में दिये गये अनुसार होगी और नकदी में अदा की जायेगी ।

43. फीस के लिए रसीद.—पंजीयक उसके द्वारा प्राप्त की गयी समस्त फीस के लिए रसीद प्रदान करेगा ।

44. फीस लौटाना.—पंजीयक निर्धारित राशि से अधिक उसे अदा की गयी या अनर्जित फीस लौटा सकता है ।

स्पष्टीकरण.—इस नियम में “अनर्जित फीस” अभिव्यक्ति से आशय है चिट करार के पंजीकरण दस्तावेज प्रस्तुत करना या जहां पंजीयक द्वारा इस प्रकार का पंजीकरण या प्रस्तुतीकरण वास्तव में नहीं किया गया है वहां प्रदान की जाने वाली अन्य सेवा या जो सेवा वास्तव में प्रदान नहीं की गयी है, के सम्बन्ध में अदा की गयी फीस ।

अध्याय-VI

विवाद और पंचनिर्णय

45. विवाद का संदर्भ.—धारा 54 के अधीन विवाद का संदर्भ फार्म xvii में पंजीयक को लिखित रूप में भेजा जाएगा । जहां आवश्यक हो वहां पंजीयक उसके पास भेजे गये विवाद के बारे में पार्टी से ऐसे संदर्भ पर विचार करने से पहले ऐसे सम्बन्धित अभिलेखों की प्रमाणित प्रतिलिपि जिस पर विवाद आधारित है और उसके द्वारा अपेक्षित अन्य विवरण या अभिलेख प्रस्तुत करने के लिए कह सकता है ।

46. विवाद के विद्यमान होने के सम्बन्ध में पंजीयक की संतुष्टि.—जहां पंजीयक को विवाद का कोई संदर्भ भेजा जाता है या कोई मामला उसके ध्यान में लाया जाता है वह पंजीयक फार्म xvii में उसे भेजे गये संदर्भ (यदि कोई हो) और उसके द्वारा प्रस्तुत सम्बन्धित अभिलेखों और विवरणों के आधार पर कारण बताते हुए अपना निर्णय देगा कि वह धारा 64 के आशय के भीतर विवाद विद्यमान होने के बारे में संतुष्ट है या नहीं । इस प्रकार का निर्णय देना यथास्थिति मामला विवाद है या नहीं इस बारे में पंजीयक की संतुष्टि का पर्याप्त प्रमाण होगा ।

47. विवाद या नामिती को भेजे गये संदर्भ का निपटान.—(1) जहां पंजीयक इस बात से संतुष्ट है कि विवाद विद्यमान है वहां पंजीयक स्वयं विवाद के बारे में निर्णय करेगा या अपने नामिती के पास निपटान के लिए भेजेगा ।

(2) पंजीयक या उसका नामिती तब तक किसी विवाद पर विचार नहीं करेगा जब तक कि सम्बन्धित पार्टियां विवाद के निश्चय के लिए नियम 57 में निर्दिष्ट न्यायालय की फीस निर्धारित करने की शर्तों का पालन नहीं करता।

48. पंजीयक के नामितियों के रूप में नियुक्ति के लिए योग्यताएं—(1) राज्य सरकार पंजीयक के नामिती के रूप में किसी व्यक्ति को नियुक्त कर सकती है बशर्ते:

(क) उसने अधिवक्ता, अभिवक्ता या वकील के रूप में कम से कम पांच वर्ष के लिए वकालत की हो; या

(ख) अधिवक्ता के रूप में उसका नाम दर्ज हो या उसके पास कानून द्वारा स्थापित किसी ऐसे विश्वविद्यालय की या किसी ऐसे अन्य प्राधिकरण की कानून या अन्य योग्यता की उपाधि हो उसमें उसका नाम अधिवक्ता के रूप में दर्ज किया गया हो, और या (i) जिसने कम से कम 5 वर्ष के लिए चिट के उप-पंजीयक या उससे ऊपर के पद पर कार्य किया हो; या (ii) चिट फंड सम्बन्धी विधान और प्रैक्टिस का उसे अच्छा ज्ञान और अनुभव हो।

(2) राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा अधिनियम के अधीन उठने वाले विवादों को निवटाने के लिए पंजीयक के नामितियों के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक संख्या में व्यक्तियों को नियुक्त कर सकती है।

49. विवाद की सुनवाई और निर्णय की क्रियाविधि—(1) पंजीयक या उसका नामिती राज्य में प्रचलित राजभाषा में विवाद से सम्बन्धित पार्टियों और उपस्थित साक्षियों के प्रमाण दर्ज करेगा। इस प्रकार दर्ज किये गये प्रमाण पार्टियों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजी प्रमाण पर विचार करने के बाद उसके द्वारा लिखित रूप में निर्णय दिया जायेगा। इस प्रकार का निर्णय खुले न्यायालय में एकदम से या भविष्य में किसी दिन, जो व्यवहार्य, जिसकी पार्टियों की उचित सूचना दी जायेगी, को सुनाया जायेगा।

(2) जब विवाद की सुनवाई के समय कोई भी पार्टी उपस्थित नहीं होती है तो पंजीयक या उसका नामिती यह आदेश दे सकता है कि उसे चूक के लिए खारिज किया जाये।

(3) जहां विवाद की सुनवाई के समय विपक्षी उपस्थित हों और विवाद उठाने वाला उपस्थित न हों, वहां पंजीयक या उसका नामिती यह आदेश दे सकता है कि विवाद को तब तक खारिज किया जाये जब तक कि विपक्षी दावे या उनका कोई अंश स्वीकार, नहीं करता, उस स्थिति में यथास्थिति पंजीयक या उसका नामिती ऐसी स्वीकृति के बारे में विपक्षी के विरुद्ध आदेश दे सकता है और जहां दावे का केवल कुछ अंश स्वीकार किया जाये वहां विवाद को उस स्थिति में खारिज कर सकता है जहां वह उत्तराधिकार से सम्बन्धित है।

(4) जहां विवाद की सुनवाई के समय विवाद उठाने वाला उपस्थित हो और विपक्षी उपस्थित न हो, वहां यदि पंजीयक या उसका नामिती अभिलेख और कार्यवाहियों से इस बात से सन्तुष्ट हो कि सम्मन उचित रूप से भेजा गया है, तो पंजीयक या उसका नामिती एक पक्षीय विवाद के आधार पर कार्यवाही कर सकता है। जहां पंजीयक या उसके नामिती के किसी अधिकारी द्वारा सम्मन भेजा जाये वहां वह शपथपूर्वक सम्मन भेजने के बारे में अपनी रिपोर्ट देगा।

(5) पंजीयक या उसका नामिती आमतौर पर प्रत्येक पार्टी के अनुरोध पर विवाद के सम्बन्ध में दो से अधिक स्थगन की अनुमति नहीं दे सकता। किन्तु पंजीयक या उसका नामिती अपने विवेकानुसार, यथास्थिति पंजीयक या उसके नामिती द्वारा बताये गये अनुसार दूसरे पक्ष को ऐसी लागत और पंजीयक या उसके नामिती को ऐसी फीस अदा करने पर और स्थगन की अनुमति दे सकता है।

(6) विवाद से सम्बन्धित कोई पार्टी पंजीयक या उसके नामिती द्वारा दिये गये किसी आदेश, निर्णय या पंजीयक की प्रमाणित प्रतिलिपि के लिए परिशिष्ट ii में निर्धारित दर पर प्रतिलिपि का शुल्क अदा करने पर आवेदन कर सकता है और उसे प्राप्त कर सकता है ।

50. विवादों के सम्बन्ध में सम्मन, नोटिस और तारीख, स्थान आदि निर्धारित करना.—(1) यथास्थिति पंजीयक या उसका नामिती निम्नलिखित के सम्बन्ध में विवाद सुनवाई के लिए निर्धारित तारीख से कम से कम 15 दिन पहले नोटिस जारी कर सकता है :—

(i) विवाद से सम्बन्धित पार्टियों और साक्षियों, यदि कोई हो, की उपस्थिति ; और

(ii) विवादास्पद मामले से सम्बन्धित सभी बहियां और दस्तावेज प्रस्तुत करना ।

(2) पंजीयक या उसके नामिती द्वारा जारी सम्मन या नोटिस तहसीलदार या चिट विभाग के किसी कर्मचारी के माध्यम से या रजिस्ट्री रसीदी डाक द्वारा भेजा जाये ।

(3) सम्मन या नोटिस देने वाला अधिकारी उन सभी मामलों में, जिन में सम्मन या नोटिस दिया गया है मूल सम्मन या नोटिस, विवरणी परांकित करेगा, संलग्न करेगा या परांकित करवायेगा या संलग्न करवायेगा, जिसमें यह दिया गया हो कि यथास्थिति सम्मन या नोटिस किस समय और किस प्रकार भेजा जाये तथा उस व्यक्ति (यदि कोई हो) का नाम और पता देगा, जो सम्मन या नोटिस दिये गये व्यक्ति को पहचानता हो और जो उसकी सुपुर्दगी या प्रस्तुति का साक्षी हो ।

(4) सम्मन या नोटिस जारी करने वाला अधिकारी सम्मन या नोटिस देने वाले प्रधिकारी की शर्त के आधार पर जांच कर सकता है, अधिकारी जिसके माध्यम से वह दिया गया है, द्वारा उसकी जांच करवा सकता है तथा इस मामले में उसके द्वारा ठीक समझी जाने वाली और ठावीन कर सकता है; और यह घोषणा कर सकता है कि यथास्थिति सम्मन या नोटिस विधिवत दिया गया है या जिस तरह से वह ठीक समझे उस तरह से दिये जाने के लिए आदेश दे सकता है ।

(5) उप-नियम (1) से (4) तक दिये गये सम्मन और नोटिस देने की पद्धति यथा परिवर्तित रूप में धारा 46 के अधीन कार्य करते हुए पंजीयक या उसके द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति द्वारा जारी सम्मन या नोटिस देने के सम्बन्ध में लागू होगी ।

51. किसी कुर्की के विरुद्ध दावों और आपत्तियों की जांच:—धारा 68 के अधीन किसी संपत्ति की कुर्की के विरुद्ध जहाँ इस आधार पर दावा या आपत्ति की जाती है कि इस प्रकार की संपत्ति की कुर्की नहीं की जा सकती है तो पंजीयक या यथास्थिति उसका नामिती दावे या आपत्ति के बारे में जांच करेगा और गुण दोषों के आधार पर उनका निपटान करेगा:

बशर्तें जब पंजीयक या उसका नामिती यह समझे कि दावा या आपत्ति निरर्थक है तब कोई जांच नहीं की जाती ।

52. धारा 68 के अधीन कुर्क की गयी संपत्ति के अभिरक्षण की क्रियाविधि.—(1) जहाँ कुर्क की जाने वाली संपत्ति देनदार के अधिकार में रहने वाले कृषि उत्पाद से भिन्न चल संपत्ति है वहाँ कुर्की वास्तविक कब्जे द्वारा की जायेगी और कुर्की करने वाला अधिकारी संपत्ति को अपने अभिरक्षण में या अपने अधीनस्थ या प्राप्तकर्ता, यदि वह उपनियम (2) के अधीन नियुक्त किया गया हो के अभिरक्षण में रखेगा तथा उसके उचित अभिरक्षण के लिए जिम्मेदार होगा :

बशर्तें जब कब्जे में की गयी संपत्ति शीघ्र और प्राकृतिक रूप से नष्ट होने वाली हो या जब

उसे अभिरक्षण में रखने का खर्च उसके मूल्य से अधिक होने की संभावना हो तब कुर्क करने वाला अधिकारी उसे उसी समय बेच सकता है।

(2) धारा 68 के अधीन सशर्त कुर्की का आदेश देने वाले अधिकारी को जहां उचित और सुविधाजनक प्रतीत हो वहां वह उक्त धारा के अधीन कुर्क की गयी चल संपत्ति के अभिरक्षण के लिए प्राप्तकर्ता को नियुक्त कर सकता है तथा उसके कार्य और देयताएं सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की पहली अनुसूची में आदेश Xi के अन्तर्गत नियुक्त प्राप्तकर्ता के कार्य और देयताओं के सम्मन दिये होंगे।

(3) (i) जहां कुर्क की जाने वाली संपत्ति अचल है वहां कुर्की ऐसे आदेश द्वारा की जायेगी जिस में देनदार को किसी भी रूप में संपत्ति आंतरित करने या प्रभारित करने और सभी व्यक्तियों पर ऐसे अंतरण या प्रभार से किसी प्रकार का लाभ प्राप्त करने पर रोक लगायी जायेगी।

(ii) जहां ऐसी संपत्ति है उस स्थान पर या उसके साथ के स्थान पर ढोल बजाकर या अन्य परम्परागत तरीके से आदेश दिया जायेगा और आदेश की एक प्रति संपत्ति के प्रमुख भाग पर और गांव की चावड़ी के प्रमुख भाग में लगायी जायेगी और जहां संपत्ति ऐसी भूमि है, जिसके लिए राज्य सरकार को राजस्व अदा किया जाता है वहां जिलाधीश के कार्यालय में और मामलातदार या महालकार या तहसीलदार या किसी अन्य राजस्व अधिकारी, जिसके अधिकार क्षेत्र में संपत्ति स्थित है, के कार्यालय में भी लगायी जायेगी।

53. निष्पादन कार्यवाही के दौरान व्यक्ति द्वारा की गयी किसी जमानत की वसूली के लिए संपत्ति की कुर्की और बिक्री की क्रियाविधि.—नियम 51 और 52 में दी गयी क्रियाविधि यथा परिवर्तित रूप में निष्पादन कार्यवाही के दौरान व्यक्ति द्वारा दी गयी किसी जमानत की वसूली के लिए संपत्ति की कुर्की और बिक्री पर लागू होगी।

54. संपत्ति का निजी अंतरण वजित करने वाला अभिज्ञापन जारी करना.—धारा 71 के खंड (क) के अधीन कार्य करते समय पंजीयक किसी भी संपत्ति के सम्बन्ध में प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करते समय फार्म xviii में अभिज्ञापन जारी करेगा तथा अचल संपत्ति के मामले में अभिज्ञापन की एक प्रति उस तहसीलदार या अन्य किसी राजस्व अधिकारी को भी भेजेगा जिस के अधिकार क्षेत्र में संपत्ति स्थित है और जो हक के रिकार्ड में ऐसे प्रमाणपत्र की प्रविष्टि करायेगा।

55. पंचायतों के परिपालन की क्रियाविधि.—(1) पंजीयक या उसके नामित द्वारा धारा 68 या 69 के अधीन पारित किया गया हर आदेश या पंचायत पंजीयक द्वारा फोरमैन या सम्बन्धित पार्टी को भेजा जायेगा और उसके साथ ये अनुदेश दिये जाएंगे कि यथास्थिति फोरमैन या सम्बन्धित पार्टी को धारा 71 के उपबन्धों के अनुसार पंचायतों के निष्पादन की कार्यवाही तत्काल शुरू करनी होगी।

(2) यदि पंचायत के अन्तर्गत देय राशि तत्काल वसूल नहीं की जाती या उसके अधीन आदेश का पालन नहीं किया जाता तो धारा 71 के अधीन प्रमाणपत्र जारी करने के लिए उसे उक्त परिपालन कार्यवाही के लिए आवेदनपत्र सहित पंजीयक को भेज दिया जाएगा, इसके साथ ही पंजीयक द्वारा अपेक्षित पूरी जानकारी भी भेजी जाएगी। आवेदक इस बात का उल्लेख करेगा कि वह पंचायत का निष्पादन सिविल न्यायालय के माध्यम से करना चाहता है या राजस्व प्राधिकारियों के माध्यम से, जैसा कि धारा 71 में दिया गया है।

(3) पंचायतों के निष्पादन के लिए ऐसा आवेदनपत्र प्राप्त होने पर पंजीयक उसे परिपालन के लिए उपर्युक्त प्राधिकारी के पास भेज देगा और साथ ही धारा 71 के अधीन अपने द्वारा जारी किया गया प्रमाणपत्र तथा नियम 54 के अधीन जारी किया गया अभिज्ञापन भी, उसमें निर्धारित प्रकार से भेज देगा।

(4) धारा 70 के अधीन अपील में पारित किया गया प्रत्येक आदेश भी उप-नियम (2) और (3) में निर्धारित प्रकार से निष्पादित किया जाएगा।

56. बेची न जा सकने वाली संपत्ति का अंतरण.—(1) धारा 71 के अधीन जिस आदेश के निष्पादन के लिए आवेदन किया गया है, उसका निष्पादन करने में जब कोई संपत्ति खरीदार के अभाव में बेची नहीं जा सकती तब यदि संपत्ति, चूककर्ता के या उसकी ओर से किसी अन्य व्यक्ति के अधिकार में हो या पंजीयक द्वारा उक्त धारा के खंड (क) या (ख) के अधीन प्रमाणपत्र जारी किये जाने के बाद चूककर्ता द्वारा निमित्त हक के अधीन उक्त संपत्ति का दावा करने वाले व्यक्ति के अधिकार में हो, तो निष्पादन करने वाला अधिकारी यथाशीघ्र इस तथ्य की सूचना यथास्थिति न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक तथा उक्त आदेश के निष्पादन के लिए आवेदन करने वाले निर्णीत लेनदार को देगा।

(2) उप-नियम (1) के अधीन रिपोर्ट प्राप्त होने पर निर्णीत लेनदार रिपोर्ट प्राप्त होने की तारीख से छः महीने के भीतर या किसी विशिष्ट मामले में पर्याप्त कारणों से अदालत या क्लैक्टर या पंजीयक द्वारा दी गयी अतिरिक्त अवधि के भीतर यथास्थिति अदालत, क्लैक्टर या पंजीयक को इस बात का उल्लेख करते हुए लिखित आवेदन कर सकता है कि उसे इस प्रकार की संपत्ति लेना मंजूर है या नहीं।

(3) उप-नियम (2) के अधीन आवेदन प्राप्त होने पर अभीष्ट अंतरण के बारे में चूककर्ता और ऐसे सभी व्यक्तियों, जिनके बारे में यह पता है कि संपत्ति में उनकी अभिरुचि है तथा उन व्यक्तियों को नोटिस भेजा जाएगा जिनका नाम संपत्ति पर कोई हक रखने वाले व्यक्ति के रूप में हक के रिकार्ड में दिया गया है।

(4) ऐसा नोटिस प्राप्त होने पर चूककर्ता या ऐसी संपत्ति का स्वामी कोई भी व्यक्ति या धारा 71 के अधीन प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख से पहले प्राप्त किये गये अधिकार के कारण उसमें हक रखने वाला कोई भी व्यक्ति ऐसा नोटिस प्राप्त होने की तारीख से एक महीने के भीतर न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक के पास निष्पादित किये जाने वाले आदेश के अधीन देय राशि और उस पर देय व्याज तथा यथास्थिति न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक द्वारा इस सम्बन्ध में निर्धारित दूसरे प्रासंगिक व्यय को कुल राशि के बराबर रकम फोरमैन को अदा करने के लिए जमा कर सकता है।

(5) चूककर्ता या संपत्ति में अभिरुचि रखने वाले किसी व्यक्ति या संपत्ति में कोई हक रखने वाले किसी व्यक्ति द्वारा उप-नियम (4) के अन्तर्गत राशि जमा न करने की स्थिति में यथास्थिति न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक फार्म XIX में प्रमाणपत्र में दी गयी शर्तों पर निर्णीत लेनदार को संपत्ति का अंतरण करने का निदेश देगा।

(6) उप-नियम (5) के अधीन दिये गये प्रमाणपत्र में यह बताया जाएगा कि निर्णीत लेनदार को चूककर्ता से प्राप्य पूरी राशि के बराबर संपत्ति का अंतरण किया गया है या राशि के बराबर संपत्ति का।

(7) निर्णीत लेनदार को चूककर्ता से प्राप्त राशि के आंशिक भुगतान के बराबर संपत्ति का उसे अंतरण किया जाता है जो यथास्थिति न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक, निर्णीत लेनदार के पंजीयक द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र प्रस्तुत किये जाने पर धारा 71 में निर्धारित प्रकार से प्राप्त शेष राशि वसूल करेगा।

(8) उप-नियम (5) के अधीन निम्न प्रकार संपत्ति का अंतरण किया जाएगा :—

(i) चल संपत्ति के मामले में—

(क) जहां संपत्ति चूककर्ता के अपने अधिकार में है अथवा न्यायालय या क्लैक्टर या पंजीयक की ओर से अधिकार में रखी गयी तो वह निर्णीत लेनदार के सुपुर्द कर दी जाएगी ;

(ख) जहां संपत्ति चूककर्ता की ओर से किसी व्यक्ति के अधिकार में हो तो इस व्यक्ति को नोटिस

देकर उसकी सुपुर्दगी की जाएगी; इस नोटिस में यह निदेश दिया जाएगा कि वह निर्णीत लेनदार शान्तिपूर्वक उसका वास्तविक कब्जा दे और संपत्ति का अधिकार अन्य किसी व्यक्ति के सुपुर्द न करे; और

(ग) निर्णीत लेनदार की ओर से अधिकार प्राप्त करने वाली पार्टी द्वारा प्राधिकृत व्यक्ति को संपत्ति सुपुर्द की जाएगी।

(ii) अचल संपत्ति के मामले में—

(क) जहां संपत्ति उगायी जा रही या खड़ी फसल है वहां फसल कटने और इकट्ठी करने से पहले वह निर्णीत लेनदार के सुपुर्द की जाएगी तथा निर्णीत लेनदार का उस स्थान पर जाकर फसल की देखभाल करने और उसे काटने तथा इकट्ठी करने के लिए आवश्यक सभी कार्य करने का हक होगा;

(ख) जहां संपत्ति चूककर्ता के या उसकी ओर से किसी व्यक्ति या धारा 71 के अधीन प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख के बाद निर्मित अधिकार के अधीन दावा करने वाले किसी व्यक्ति के अधिकार में है तो यथास्थिति न्यायालय या कलैक्टर या पंजीयक उस संपत्ति का वास्तविक अधिकार निर्णीत लेनदार या सुपुर्दगी लेने के लिए उसके द्वारा नियुक्त व्यक्ति को देकर सुपुर्दगी करने का आदेश देगा और आवश्यकता होने पर उस व्यक्ति को निकाल कर भी सुपुर्दगी की जाएगी जो अधिकार छोड़ने के लिए गैर कानूनी तौर पर इन्कार करे; और

(ग) जहां संपत्ति किसी किरायेदार के या धारा 71 के अधीन प्रमाणपत्र जारी करने की तारीख से पहले संपत्ति का हक प्राप्त करने वाले किसी अन्य व्यक्ति के अधिकार में है तो यथास्थिति न्यायालय या कलैक्टर या पंजीयक सुपुर्दगी के लिए यह आदेश देगा कि निर्णीत लेनदार की संपत्ति के अंतरण से सम्बन्धित प्रमाणपत्र की एक प्रति संपत्ति के किसी प्रमुख स्थान पर लगायी जाय और किसी सुविधाजनक स्थान पर ढोल बजाकर या अन्य किसी परम्परागत तरीके से ऐसे व्यक्ति को यह अभिज्ञापन दिया जाए कि संपत्ति में चूककर्ता का हक निर्णीत लेनदार को अंतरित कर दिया गया है।

(9) निर्णीत लेनदार को पंजीयक द्वारा समय-समय पर निर्धारित सीमा तक विक्री से सम्बन्धित व्यय की अदायगी करनी होगी और पशुधन, यदि कोई हो, की देखभाल पर होने वाला खर्च भी अदा करता होगा।

(10) जहां उगायी जा रही या खड़ी फसल कटने और इकट्ठा करने से पहले भूमि उप-नियम (8) के खण्ड (ii) के उप-खण्ड (क) के अधीन निर्णीत लेनदार को अतिरिक्त की जाती है वहां निर्णीत लेनदार को चालू वर्ष के लिए उस भूमि का राजस्व अदा करना होगा।

(11) निर्णीत लेनदार, उप-नियम (8) के खण्ड (ii) के उप-खंड (ख) या (ग) के अधीन संपत्ति के अंतरण की सूचना ग्राम पटवारी को उसकी जानकारी और हक के रिकार्ड में प्रविष्टि के लिए तत्काल दी जानी चाहिए।

(12) निर्णीत लेनदार जिसे उप-नियम (5) के अधीन संपत्ति अंतरित की जाती है, ऐसे प्रत्येक चूककर्ता के लिए अलग-अलग खाता रखेगा जिसमें बाहरी ऋण, भू-राजस्व और संपत्ति के सम्बन्ध में अन्य देयताओं की अदायगी सहित समस्त व्यय और संपत्ति से प्राप्त समस्त आय का हिसाब रखा जाएगा।

(13) निर्णीत लेनदार जिसे उप-नियम (5) के अधीन संपत्ति का अंतरण किया जाता है, संपत्ति को यथाशीघ्र और फोरमन तथा चूककर्ता के सर्वाधिक हित में बेचने का पूरा प्रयत्न करेगा; चूककर्ता,

जो मूलतः संपत्ति का स्वामी था, को प्राथमिकता दी जाएगी। पंजीयक द्वारा पुष्टि किये जाने पर बिक्री की जाएगी। बिक्री से प्राप्त राशि में से बिक्री के खर्चें और निर्णीत लेनदार द्वारा किये गये अन्य व्यय तथा उप-नियम (9) और (12) में उल्लिखित व्यय पूरे किये जाएंगे तथा निष्पादित किये जाने वाले आदेश के अधीन चूककर्ता द्वारा देय राशि का भुगतान किया जाएगा और तब अतिरिक्त राशि (यदि कोई हो) चूककर्ता को अदा की जाएगी।

(14) जब तक संपत्ति बिक नहीं जाती तब तक निर्णीत लेनदार, जिसे उप-नियम (5) के अधीन भूमि का अंतरण किया जाता है, उसे पट्टे पर देने या उसे किसी अन्य प्रकार के उपयोग में लाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करेगा ताकि संपत्ति से अधिकतम आय प्राप्त की जा सके।

(15) निर्णीत लेनदार जिसे उप-नियम (5) के अधीन संपत्ति का अंतरण किया जाता है, उस आदेश जिसके निष्पादन में संपत्ति का अंतरण किया गया था, के अधीन प्राप्य पूरी राशि के बंदोबस्त से प्राप्त राशि में से वसूल कर लेना है तो अनबिकी संपत्ति चूककर्ता को वापस दी जायेगी।

57. विवादों के निर्णय के लिए फीस की अदायगी.—(1) पंजीयक या नामिती, जैसी भी स्थिति हो, कोई भी विवाद तभी स्वीकार करेगा यदि ऐसे विवाद के संदर्भ से सम्बन्धित फार्म xviii में आवेदन पत्र पर न्यायालय फीस की स्टाम्प निम्नलिखित मानों में चिपकायी गयी हो, अर्थात्:

उपयुक्त न्यायालय फीस
रु० प०

(i) धन के साधारण दावे :

(क) जहां विवाद में दावे की राशि रु० 1,000 से अधिक न हो	25 00
(ख) जहां ऐसी राशि रु० 1,000 से अधिक पर रु० 5,000 से अधिक न हो	50 00
(ग) जहां ऐसी राशि रु० 5,000 से अधिक हो	75 00

(ii) धन के जटिल दावे :

(क) जहां विवाद में दावे की राशि रु० 1,000 से अधिक न हो	50 00
(ख) जहां ऐसी राशि रु० 1,000 से अधिक पर रु० 5,000 से अधिक न हो	75 00
(ग) जहां ऐसी राशि रु० 5,000 से अधिक हो	100 00

(iii) अन्य सभी दावे

100 00

स्पष्टीकरण.—इस उप-नियम के प्रयोजन के लिए “धन के साधारण दावे” का अर्थ उस फोरमैन का दावा है जिसका कारोबार चिट चलाता है जिसमें कृण के बांडों पर आधारित इनामी राशि, वचन-पत्रों का वितरण, स्वीकृति और प्राप्ति सूचना भजना शामिल है और “धन के जटिल दावे” का अर्थ है धन के साधारण दावों से भिन्न सभी दावे। इस उप-नियम के प्रयोजनों के लिए विवाद के वर्गीकरण के प्रश्न का निर्णय विवाद का निर्णय करने वाले पंजीयक या उसके नामिती द्वारा किया जाएगा और यथास्थिति पंजीयक या उसके नामिती का निर्णय ही अंतिम होगा।

(2) नीचे निर्दिष्ट किये गये दस्तावेजों में से कोई भी दस्तावेज पंजीयक या उसके नामिती के समक्ष तब तक प्रस्तुत नहीं किया जाएगा जब तक उनके सामने निर्दिष्ट न्यायालय फीस के टिकट न चिपकाये गये हों:

	उपयुक्त न्यायालय फीस
(i) वकालत नामा	₹ 0 पैसे
(ii) स्थगन के लिए आवेदन-पत्र	2 00
(iii) अंतरिम स्थगन या राहत के लिए आवेदन-पत्र	10. 00
	25 00

(3) (क) किसी विवाद को निर्णय करने वाले पंजीयक या उसका नामिती विवाद से सम्बन्धित पार्टी या पार्टियों से उतनी राशि जमा करने को कह सकते हैं जो उसके विचार में ऐसे खर्चों के लिए आवश्यक है जिसमें यथास्थिति पंजीयक या उसके नामिती की फीस भी शामिल है।

(ख) पंजीयक या उसके नामिती को यह अधिकार होगा कि वह ऊसर दिये गये अनुसार जमा की नयी राशि को ध्यान में रखते हुए, पंजीयक द्वारा निर्धारित मानों के अनुसार विवाद के निर्णय की फीस और खर्च, की प्रदायगी फोरमैन द्वारा अपनी निधि में से, या विवाद से सम्बन्धित पा: पार्टियों जिन्हें वह ठीक समझे, द्वारा किये जान का आदेश दे सकता है।

(ग) पंजीयक सामान्य या विशेष आदेश द्वारा, उसे या उसके नामिती को दी जाने वाली फीस या खर्चों को निर्दिष्ट कर सकता है।

अध्याय VII

विविध

58. लिखित रूप में अपील.—(1) धारा 70 या धारा 74 की उप-धारा (1) और (2) के अधीन कोई अपील राज्य सरकार या राज्य सरकार द्वारा इसके लिए सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा अधिकार प्रदान किये गये अधिकारी या _____ के बाद उसे अपील प्राधिकारी के रूप में लिखा गया है को व्यक्ति की जाएगी या रजिस्ट्री डाक द्वारा भेजी जाएगी।

(2) अपील ज्ञापन के फार्म में होगी और उस पर न्यायालय फीस के ₹ 0 150.00 के स्टाम्प लगाए जाएंगे

(3) प्रत्येक अपील में निम्नलिखित का उल्लेख होगा :

- (क) अपीलकर्ता और प्रतिवादी के नाम और पते ;
- (ख) जिस आदेश के विरुद्ध अपील की गयी वह किस के द्वारा दिया गया ;
- (ग) जिस आदेश के विरुद्ध अपील की गयी, उसके बारे में की गयी आपत्तियों के आधार पर स्पष्ट रूप से और विशिष्ट शीर्षों के अन्तर्गत दिये जाएं, और उनके साथ प्रमाण का ज्ञापन दिया जाए ;
- (घ) जिस राहत रकम का दावा अपीलकर्ता ने किया है वह सही रूप में लिखी जाए; और
- (ङ) अपील का आदेश देने की तारीख लिखे।

59. अपील की सुनवाई और उसे खारिज करना.—(1) अपील की प्राप्ति पर अपील प्राधिकारी यथाशीघ्र उसकी जांच करेगा और सुनिश्चित करेगा कि :—

- (क) नियम 58 (2) में निर्दिष्ट मूल्य के न्यायालय फीस के स्टाम्प अपील के ज्ञापन पर लगाय गये हैं ?
- (ख) अपील प्रस्तुत करने वाल व्यक्ति को उपस्थित होने का अधिकार है;
- (ग) अपील निर्दिष्ट समय सीमा के भीतर की गयी है ; और
- (घ) वह अधिनियम और इन नियमों के अनुरूप है।

(2) अपील प्राधिकारी के सामन कार्यवाही के समय अपीलकर्ता और प्रतिवादी का प्रतिनिधित्व मुस्तार नामा रखने वाले किसी एजेंट या कानून की प्रैक्टिस करने वाले व्यक्ति द्वारा किया जाना चाहिए।

(3) अपील प्राधिकारी, की गयी जांच, और जांचे गये अभिलेखों के आधार पर अपील पर ऐसा आदेश दे सकता है जो उसे न्याय संगत और उचित लगे।

(4) उप-नियम (3) के अधीन अपील प्राधिकारी का प्रत्येक आदेश लिखित रूप में होगा और सम्बन्धित पार्टियों तथा पंजीयक को उसकी सूचना दी जाएगी।

60. पंजीयक द्वारा अभिलेख रखने की अवधि.—रजिस्टर और लेखा बहियों सहित चिट के अभिलेख निम्न-लिखित तारीखों से आठ वर्ष की अवधि तक पंजीयक के कार्यालय में रख जाएंगे:—

(क) समाप्त की गयी चिटों के मामले में जमानत छुड़ाने से, चिट का कार्य पूरी तरह बन्द किये जाने की तारीख से और यदि उस अध्याय के अन्तर्गत दिये गये आदेश अपील योग्य है तो अपील खारिज होने की तारीख से।

(ख) अधिनियम के अध्याय 10 में दिये गये मामलों में।

61. रखे गये अभिलेखों का रजिस्टर.—प्रत्येक पंजीयक एक अलग रजिस्टर रखेगा जिसमें उसके कार्यालय में पंजीकृत चिटों से सम्बन्धित सभी अभिलेखों के विवरणों की प्रविष्टि की जाएगी।

62. अधिनियम के अधीन होने वाले अपराधों का प्रशासन:—(compounding of offenses).—(1) राज्य सरकार द्वारा शक्ति प्रदत्त कोई अधिकारी उक्त अधिनियम अथवा उसके अन्तर्गत बनाये गये नियमों के अन्तर्गत अपराध करने वाले अथवा अपराध करने के लिए उचित रूप से संदिग्ध पाये जाने वाले व्यक्ति के विरुद्ध अधिनियम की धारा 76 अथवा 77 के अन्तर्गत कोई कार्रवाई करने से पहले उसे एक कारण बताओ नोटिस जारी करेगा जिसमें सम्बन्धित व्यक्ति से 15 दिन के अन्दर यह स्पष्ट करने के लिए कहा जाएगा कि उक्त अधिनियम की धारा 76 अथवा 77, जो भी लागू हो, के अन्तर्गत क्यों न उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाए।

(2) उक्त उपबन्ध में किसी बात के समाविष्ट होने के बावजूद:—

(i) राज्य सरकार का कोई अधिकारी जिसे उक्त अधिनियम अथवा उसके अन्तर्गत बनाये गये नियमों के अन्तर्गत अपराध करने वाले अथवा अपराध करने के लिए उचित रूप से संदिग्ध पाये जाने वाले व्यक्ति के विरुद्ध प्रशमन कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त है, उक्त अधिनियम के अन्तर्गत फौजदारी की कानूनी कार्रवाई शुरू होने से पूर्व या उसके बाद किसी भी व्यक्ति द्वारा किये गये कथित अपराध का प्रशमन कर सकेगा बशर्ते कि अपराध का प्रस्तावित प्रशमन करना राज्य सरकार द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया हो।

(ii) उक्त संदर्भित ऐसे प्रस्ताव का अनुमोदन करने के लिए शक्ति प्रदत्त अधिकारी द्वारा उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन किये जाने पर, प्रशमन के लिए शक्ति प्राप्त अधिकारी सम्बन्धित व्यक्ति को इस हेतु लिखित में एक सूचना भेजेगा जिसमें यह निर्दिष्ट किया जाएगा कि :

(क) प्रशमन के आधार पर निर्धारित की गयी राशि,

(ख) वह तारीख जिस पर अथवा जिससे पूर्व राशि अदा की जायेगी।

नोट.—यह देखा जा सकता है कि जहाँ चिट फण्ड अधिनियम, 1982 की धारा 81 राज्य सरकारों/संघ-शासित क्षेत्रों को ऐसी परिस्थितियों निर्दिष्ट करने का ही अधिकार देती है जिनके अधीन अपराधों का प्रशमन किया जा सकता है, वहीं राज्य सरकार/प्रशासन को भेजे गये प्रारूप माडल नियमों के नियम 62 के उप-नियम (1) का उपबन्ध एक कदम और आगे जाकर उन्हें व अपराध निर्दिष्ट करने का अधिकार देता है जिनका प्रशमन किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में गम्भीर प्रकार के अपराध जस कि धारा 76 (1) में बताये गये और ऐसे अपराध जो दोबारा किये गये हों—अधिनियम की धारा 77 के अनुसार प्रशमन योग्य नहीं है। इसी कारण यह संदेह उठा था कि इन परिस्थितियों में क्या प्रारूप माडल नियमों के नियम 62 के उप-नियम (1) में किये गये

उपबन्ध को अधिनियम की धारा 81 में किये गये प्रावधान से शक्ति बाह्य समझ कर काट दिया जाये। अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए और संदहों यदि कोई हों को समाप्त करने की दृष्टि से ऊपर बताये गये अनुसार नियम 62 का पुनः प्रारूप तैयार करने का सुझाव दिया गया है। तथापि, नया विधान बनाने के पीछे यह उद्देश्य था कि धारा 76 की उप-धारा (1) में किये गये और दोबारा किये गये अपराधों को धारा 77 के अनुसार प्रशमन नहीं किया जाना चाहिए। अतः राज्य सरकार/प्रशासन उपर्युक्त नये नियम 62 के अन्तर्गत शक्ति प्राप्त अधिकारियों को इस सम्बन्ध में समुचित प्रशासनिक अनुदेश जारी करें कि वे प्रस्तावित नियमों के लागू होने के बाद इन अपराधों के प्रशमन के लिए सहमत न हों।

परिशिष्ट- I

फार्म-I

[धारा 4 (2) और नियम 3 देखें]

(चिट शुरू करने या चलाने के लिए पूर्व अनुमति प्राप्त करने हेतु फोरमैन द्वारा प्रयोग किये जाने वाले आवेदन-पत्र का फार्म)

स्थान :

दिनांक :

प्रेषक

सेवा में,

महानिरीक्षक,
पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट,
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 002.

या

(प्राधिकृत अधिकारी पदनाम द्वारा)

महोदय,

में

का/की सुपुत्र/पत्नी/सुपुत्री

श्री

(यहां व्यवसाय या कारोबार का उल्लेख करें)

का निवासी हूँ। हम क्रमशः अध्यक्ष और सचिव*

(फर्म, कम्पनी, सहकारी

समिति आदि का नाम) की ओर से स्थित उनके पंजीकृत पते पर फोरमैन के रूप में

(यहां डाक का पता विस्तार से दें) चिट शुरू करने और चलाने के इच्छुक हैं। इस सम्बन्ध में पूरे विवरण अनुबन्ध में दिये गये हैं।

2. प्रश्नाधीन चिट को शुरू करने और चलाने के लिए दिनांक में प्रबन्ध समिति/निदेशक बोर्ड द्वारा पारित संकल्प की सत्यापित प्रति इसके साथ संलग्न है।

को हुई अपनी बैठक

3. मैं/हम उक्त उद्देश्य के लिए निर्धारित रु०

(अंकों में)

रूपये करता हूँ/करते हैं।

मात्र (शब्दों में) की राशि इसके साथ प्रेषित

4. मैं/हम सत्यापित करता हूँ/करते हैं कि इस आवेदन की तारीख को मेरे/हमारे द्वारा चलायी गयी चिटों की कुल राशि रु0 (रुपये) है और यह चिट फण्ड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम संख्या 40) की धारा 13 में निर्दिष्ट चिट की कुल राशि से अधिक नहीं है।

5. मैं/हम आपसे अनुरोध करता हूँ/करते हैं कि कृपया आप चिट शुरू करने और चलाने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान करें। स्वीकृति की सूचना प्राप्त होने पर ही चिट के पंजीकरण आदि के संदर्भ में आगे की कार्रवाई की जायगी।

भवदीय,

अध्यक्ष

सचिव

के लिए या की ओर से

अनुलग्नक : पत्रक

जो लागू न हो कृपया उसे काट दें या हटा दें।

*आवेदक का उपयुक्त पदनाम लिखें :

यहां पर आवेदन संस्था, यदि कोई हो, का नाम लिखें।

अनुबन्ध

ब्यौरों का विवरण

1. कम्पनी/व्यक्तियों के संख्या सहकारी समिति/सांझेदारी/एकमात्र स्वामित्ववाली संस्था का नाम और पता (पंजीकृत और प्रधान कार्यालय, प्रशासनिक कार्यालय के पते, यदि कोई हों दिये जाने चाहिए)।

2. संरचना अर्थात् क्या यह कम्पनी/सहकारी समिति या व्यक्तियों के पंजीकृत/अपंजीकृत संघ/सांझेदारी/एकमात्र स्वामित्ववाली संस्था के रूप में निगमित है ? (निगमन/पंजीकरण की तारीख सहित जिस अधिनियम के उपबन्ध के अन्तर्गत निगमित/पंजीकृत की गयी है उसका भी उल्लेख करें)।

3. शाखाओं/कार्यालयों, यदि कोई हो, के नाम और पते

4. संस्था के प्रमुख उद्देश्य (ज्ञापन तथा संघ के अंतर्नियमों या संस्था के कार्यकलापों को विनियमित करने वाले यथास्थिति उपनियमों या नियमों की एक प्रति संलग्न करें)।

5. निदेशकों के या यथास्थिति प्रवर्तकों/प्रबन्ध समिति के सदस्यों/सांझेदारों आदि के नाम, व्यवसाय और आवासीय पते।

6. प्रमुख कार्यपालक अधिकारी तथा प्रबन्धकीय तंत्र उसके तत्काल बाद के दो अधिकारियों के नाम और आवासीय पते।

7. बैंकों के नाम और उनके पते

8. लेखा-परीक्षकों के नाम और उनके पते ।

9. शुरू की जाने वाली चिट (चिटों) के विवरण (जैसे चिट की राशि, चिट की अवधि, डा की आवृत्ति, डा की पद्धति आदि सदस्यों के साथ किये जाने वाले चिट करार के प्रारूप की प्रति भी संलग्न करें) ।

10. जहां चिट योजना (योजनाएं) चलानी है/हैं उन संस्थानों का नाम ।

11. सहायक कम्पनियों/सहकारी समितियों/व्यक्तियों के संघों/सांझेदारी/एकमात्र स्वामित्ववाली संस्थाओं के नाम और पते ।

12. निदेशकों या मद 11 में उल्लिखित यथास्थिति संस्था/संस्थाओं के प्रवर्तकों/प्रबन्ध समिति आदि के सदस्यों के नाम, व्यवसाय और आवासीय पते ।

मैं/हम निष्ठापूर्वक यह घोषणा करता हूँ/करते हैं कि यहां पर उल्लेख किये गये तथा अनुलग्नकों में दिये गये तथ्य मेरी/हमारी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं ।

.....में 19के.....के.....

दिन इसे दिनांकित किया गया ।

नाम

हस्ताक्षर

पदनाम

.....के लिए/की ओर से*

*यहां आवेदक संस्था, यदि कोई हो, का नाम लिखें ।

जो लागू न हो, उसे काट दें ।

टिप्पणी: (I) किसी मद के सामने पूरे विवरण देने के लिए यदि स्थान अपर्याप्त है तो अपेक्षित जानकारी अलग कागज पर दी जानी चाहिए और उसका प्रति संदर्भ उस विवरण की सम्बन्धित मद के सामने दिया जाना चाहिए ।

(II) तुलनपत्र और लाभ हानि लेखे, यदि कोई हों, की अद्यतन उपलब्ध लेखा परीक्षित प्रति इसके साथ संलग्न की जानी चाहिए ।

फार्म II

(धारा 7 और नियम 5 देखें)

चिट करार के पंजीकरण के लिए आवेदन-पत्र

स्थान :

दिनांक :

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीयक एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002.

प्रिय महोदय,

1. (क) मैंसुपुत्र श्री.....

.....फोरमैन होने के नाते.....के नाम और पद्धति के

अन्तर्गत.....में, या.....
.....में चिट चला रहा हूँ ।

(ख) हम.....के नाम और पद्धति के अन्तर्गत चिट कारोबार चलाने वाल फोरमैन के क्रमशः अध्यक्ष और सचिव इसके द्वारा चिट करार के पंजीकरण के लिए आवेदन करते हैं ।

2. चिट करार (दो प्रतियों में) और हिमाचल प्रदेश चिट फंड नियमावली, 1984 के नियम 19 के अन्तर्गत अपेक्षित पंजीकरण शुल्क के रूप में ₹0.....की राशि इसके साथ संलग्न है ।

3. इस आवेदन की तारीख को चल रही वर्तमान चिटों की संख्याहै और इन चिटों में लगी हुई कुल चिट राशि ₹0.....है जो कि चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम संख्या 40) की धारा 13 में निर्दिष्ट सीमाओं के भीतर है ।

4. प्रश्नाधीन चिट शुरू करने और चलाने के लिए उक्त अधिनियम की धारा 4 के अन्तर्गत प्राप्त मंजूरी की प्रमाणित सत्य प्रति संलग्न है । राज्य सरकार/प्राधिकृत अधिकारी को इस सम्बन्ध में किये गये दिनांकके आवेदन की एक प्रति भी अनुलग्नकों सहित आपकी सूचना और तत्काल संदर्भ के लिए संलग्न है ।

5. मैं/हम उक्त प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट शुल्क ₹0.....(रुपये शब्दों में) (.....रुपये) की राशि इसके साथ प्रेषित करता हूँ/करते हैं ।

घोषणा

6. मैंने/हमने चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम संख्या 40) और उसके अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा बनाय गये नियम पढ़ लिये हैं तथा मैं/हम यह घोषणा करता हूँ/करते हैं कि चिट करार उक्त अधिनियम और नियमों के उपबन्धों के अनुरूप बनाया गया है ।

मेरी/हमारी जानकारी, सूचना और विश्वास के अनुसार उक्त विवरण सही और पूरे हैं ।

भवदीय,

अध्यक्ष
सचिव
नाम
पदनाम

फोरमैन के लिए और की ओर से*

टिप्पणी.--(I) यहां पर आवेदक संस्था, यदि कोई हो, का नाम लिखा जाये ।

(II) जो लागू न हो उसे काट दें या हटा दें । आवेदक के उपयुक्त पदनाम (पदनामों) का उल्लेख करें ।

फार्म III

[धारा 7 (2) और नियम 6 देखें]

पंजीकरण का पृष्ठांकन

मैं इसके द्वारा यह प्रमाणित करता हूँ कि फोरमैन के रूप में
 (फोरमैन का नाम और पता यहां भरा जाये) द्वारा चलायी जाने वाली प्रस्तावित चिट के 19
 के के दिन, चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982
 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40) की धारा 7 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत मेरे द्वारा 19 के
 चिट सं० के रूप में पंजीकृत किया गया है।

यह 19 के को में
 मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन दिया या।

(मुहर)

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट,
 हिमाचल प्रदेश,
 शिमला-171002.

फार्म-IV

[धारा 8 (4) और नियम 9 देखें]

स्थान
 दिनांक

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
 हिमाचल प्रदेश, शिमला-171002.

प्रिय महोदय,

चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40) की धारा 8 की उपधारा (4)
 के अनुसरण में हम इसके द्वारा कंपनी की प्रारक्षित निधि से आहरण द्वारा रु० (शब्दों
 में) (..... रुपये) की राशि के विनियोजन के लिए आपका अनुमोदन प्राप्त
 करना चाहते हैं। निम्नलिखित परिस्थितियों के कारण यह आहरण आवश्यक हो गया है:—

(यहां उन परिस्थितियों का उल्लेख करें जिनके अन्तर्गत प्रारक्षित निधि से आहरण आवश्यक हो गया है)

2. हम आपकी जानकारी के लिए पिछले दो लेखा वर्षों के लाभ-हानि लेखे और तुलन-पत्र तथा
 19 को समाप्त चालू वर्ष के तुलन-पत्र और लाभ-हानि लेखे का प्रोफार्मा संलग्न कर रहे हैं। निदेशक बोर्ड
 द्वारा उक्त राशि के विनियोजन के लिए को पारित प्रस्ताव की सत्य प्रति-
 लिपि भी संलग्न है। हम भविष्य में भी आपके द्वारा अपेक्षित और जानकारी भेज देंगे।

3. हम इसके साथ उक्त प्रयोजन के लिए निर्धारित शुल्क के रूप में रु०
 (..... रुपये) प्रेषित करते हैं।

4. आपसे अनुरोध है कि आप हमें प्रारक्षित निधि से..... की राशि निकालने की अनुमति प्रदान करें।

भवदीय,

अध्यक्ष
सचिव

(फोरमैन/कम्पनी)
के लिए और की ओर से*।

*यहां आवेदक कम्पनी का नाम लिखें।

फार्म-V

[धारा 9 (1) और नियम 10 देखें]

स्थान.....

दिनांक.....

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश,
शिमला-171002

प्रिय महोदय,

आपके दिनांक के अपने पत्र द्वारा मुझ/हमें रु0..... की चिट राशि और..... महीने की अवधि की नयी चिट शुरू करने के लिए पंजीकरण का प्रमाण-पत्र प्रदान किया है

2. परिणामस्वरूप, मैंने/हमने अपेक्षित संख्या के सदस्यों की सूची बना ली है और चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं0 40) की धारा 9 की उप-धारा (1) के अनुसरण में हम इसके द्वारा घोषणा करते हैं कि चिट करार में निर्दिष्ट सभी टिकटों की पूरी राशि प्राप्त हो गयी है।

3. मैं/हम इसके साथ इस घोषणा को प्रस्तुत करने के प्रयोजन के लिए निर्दिष्ट शुल्क के रूप में रु0..... (शब्दों में रुपये) प्रेषित करता हूँ/करते हैं।

भवदीय,

अध्यक्ष
सचिव

(फोरमैन) के लिए और की ओर से

फार्म VI

[धारा 9 (2) और नियम 11 देखें]

चिट शुरू करने के सम्बन्ध में प्रमाण-पत्र

स्थान:

दिनांक:

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 002

मैं इसके द्वारा यह प्रमाणित करता हूँ.....

चिट शुरू करने और चलाने का हकदार है, जिसके सम्बन्ध में मेरे कार्यालय में की
चिट सं०.....के रूप में चिट करार पंजीकृत किया गया है।

आज 19.....के.....दिन को.....में मेरे
हस्ताक्षर और मोहर के अधीन दिया गया।

(मोहर)

हस्ताक्षर,
महानिरीक्षक पंजीकरण एवं
रजिस्ट्रार चिट, हि० प्र०
शिमला-171 002

*यहाँ फोरमैन का नाम लिखें।

यहाँ चिट/चिटों की राशि और अवधि आदि का उल्लेख करें।

फार्म VII

[धारा 10 (2) और नियम 12 देखें]

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हि० प्र०, शिमला-171 002

प्रिय महोदय,

चिट फंड अधिनियम, 1982
(1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40)

मैं/हम.....चिट का फोरमैन/अध्यक्ष और सचिव चिट चलाने
वाली फर्म/कम्पनी के फोरमैन की ओर से, 19.....की पंजीकरण
संख्या.....वाला चिट करार चिटों के पंजीयक के कार्यालय में पंजीकृत किया गया है,
इसके द्वारा यह प्रमाणित करता हूँ/करत हूँ कि मैं/हमने चिट के प्रत्येक सदस्य को अपने द्वारा सत्य प्रतिलिपि
के रूप में विधिवत् प्रमाणित उपर्युक्त चिट करार की एक प्रतिलिपि भेज दी है। प्रत्येक सदस्य को प्रतिलिपियां
.....को भेज दी गयी थीं।

उपर्युक्त चिट को शुरू करने के लिए धारा 9 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत प्रदान किया जान वाला प्रमाण-पत्र प्राप्त करने की तारीख..... है।
उपर्युक्त चिट का पहला डा.....को हुआ।

स्थान:
दिनांक:

भवदीय,
अध्यक्ष
सचिव
के लिए और की ओर से.....
(फोरमैन)

*जो लागू नहीं उसे काट/हटा दें।

आवेदक के उपर्युक्त पदनाम (पदनामों) का उल्लेख करें।

फार्म VIII

(धारा 6 और नियम 13 देखें)

चिट करार का फार्म

(फोरमैन और सदस्यों के बीच करार के अंतर्नियम) -

- (1) उस कार्यालय का नाम जहां चिट पंजीकृत है
- (2) वर्ष और पंजीकरण सं०
- (3) फोरमैन का पूरा नाम और पता
- (4) व्यवसाय (लागू हो तो)
- (5) आयु (—वही—)

वर्ष सं०

I. चिट की राशि और टिकटों की संख्या—

- (1) प्रत्येक सदस्य द्वारा धारित टिकटों की संख्या या उनके अंश

पूर्ण

3/4

1/2

1/4

1/8

- (2) किस्तों की संख्या और प्रत्येक किस्त पर प्रत्येक टिकट सं०

र०

राशि

- (3) चिट की राशि

II. चिट की अवधि :

- (1) पहली किस्त की तारीख
- (2) वाद की किस्तों की तारीखें
- (3) प्रति वर्ष किस्तों की संख्या
- (4) समाप्ति की तारीख
- (5) चिट की अवधि

वर्ष

महीने

III. स्थान, समय और चिट शुरू करने की संभाव्य तारीख

- (1) स्थान (पूरे विवरण दें)
- (2) संभाव्य तारीख
- (3) कार्यवाही शुरू करने का समय

IV. फोरमैन द्वारा दी गयी जमानत या जमा की गयी रकम के व्यौरे.—(1) अधिनियम की धारा 20 के अन्तर्गत चिट को उचित रूप से चलाने के लिए निम्नलिखित जमानत दी गयी है जो चिट के महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट के महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट) संतोष के लिए पर्याप्त है और जिसके व्यौरे नीचे दिये गये हैं।

[यहां जमानत का प्रकार लिखें जैसे नकदी/सरकारी प्रतिभूति (अचल संपत्ति आदि) यदि अचल संपत्ति पर कोई प्रभार लगाया जाता है तो उस मामले में उसके प्रकार/स्थान/वाजार मूल्य आदि जैसे विवरण दिये जाने चाहिए।]

(2) महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट द्वारा जमानत की पर्याप्तता के सम्बन्ध में जारी प्रमाण पत्र यदि प्राप्त किया हो, तो की संख्या और तारीख।

(3) फोरमैन को तब तक जमानत पूरी तरह नहीं मिलेगी जब तक चिट के अन्तर्गत समस्त देयताएं पूरी न हो जाएं।

V. चिट चलाने की पद्धति.—(1) किसी भी किस्त पर इनाम दिये जाने वाले सदस्य का निश्चय अनुच्छेद में निर्दिष्ट समय और स्थान पर लाटरी या बोली द्वारा किया जाएगा।

(यहां टिकट के लघुतम अंश, जिसके लिए इनाम लाटरी या बोली द्वारा निश्चित किया जाएगा, और प्रत्येक प्रयोजन के लिए अनुमत समय का उल्लेख करें।)

(2) जहां इनाम बोली द्वारा निश्चित किया जाता है, वहां उसके टिकट या अंश की चिट की राशि से अन्योन्य राशि के लिए बोली लगायी जाएगी, जिसमें से फोरमैन का कमीशन घटाया जाएगा, और जो सदस्य चिट की कुल राशि के 30 प्रतिशत से अनाधिक अधिकतम छूट के लिए बोली लगाता है, उसे उस राशि की अपने नाम पुष्टि कराने का अधिकार होगा।

टिप्पणी:—जहां किसी टिकट के एक अंश की बोली लगायी जाती है वहां अधिकतम छूट की बोली लगाने वाले सदस्य को जितने अंश की वह बोली लगाना चाहता है उतने अंश एक ही दर पर अपने नाम पुष्टि कराने का अधिकार होगा।

(3) जिन मामलों में सदस्य किसी टिकट या उसके अंश के लिए बोली लगाने के लिए तैयार नहीं है या जहां छूट की राशि फोरमैन के कमीशन के लिए पर्याप्त नहीं है वहां इनाम पाने के हकदार का निश्चय लाटरी द्वारा किया जाएगा। इस तरह निश्चित किया गया सदस्य को इनाम प्राप्त करने वाला वह सदस्य समझा जाएगा जो अपने टिकट के लिए चिट की राशि का हकदार होगा। उसके टिकट में से फोरमैन का कमीशन का घटाया जाएगा।

(4) चूककर्ता सदस्य कार्यवाही में भाग लेने का हकदार नहीं होगा।

(5) यदि कोई सदस्य किसी कारणवश कार्यवाही में भाग लेने में असमर्थ हो तो उसे अपनी और से भाग लेने के लिए किसी एजेंट को लिखित रूप में प्राधिकृत करना होगा। ऐसे एजेंट को एसी कार्यवाहियों में उक्त सदस्य के सभी अधिकार प्राप्त होंगे।

VI. प्रत्येक किस्त की अदायगी की पद्धति:—(1) प्रत्येक किस्त की तारीख को प्रत्येक सदस्य ऐसी प्रत्येक किस्त पर अपने टिकट के लिए देय राशि फोरमैन को देगा और उसके लिए फोरमैन से रसीद लगा।

(2) इनाम प्राप्त सदस्य के मामले में यदि किस्त विशेष पर उसे प्राप्य राशि किस्त की तारीख को अदा नहीं की जाती तो वह राशि... (यहां सप्ताहों और महीनों का उल्लेख करें)... (यहां दर का उल्लेख करें) ब्याज सहित अदा की जाएगी। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो फोरमैन को यह अधिकार होगा कि वह... चूककर्ता से भविष्य में प्राप्त होने वाली सभी अभिदानों की राशि, उसके ब्याज और अन्य प्रासंगिक खर्चों सहित एक साथ वसूल कर ले।

(3) ऐसा सदस्य जिसे इनाम नहीं मिला है के मामले में यदि उसके द्वारा देय किसी विशेष किस्त की राशि उस किस्त की तारीख को अदा नहीं की गयी है तो वह ब्याज सहित (यहां दर का उल्लेख करें) यहां सप्ताह या महीनों का उल्लेख करें) के अन्दर अदा की जायेगी। यदि निर्दिष्ट तारीख को राशि अदा नहीं की गयी तो फोरमैन उसे सदस्यों की सूची से हटा सकता है और ऐसे चूककर्ता सदस्य के बदले में दूसरा व्यक्ति लेन के लिए स्वतन्त्र है। फोरमैन चूककर्ता सदस्य के विरुद्ध की गयी कार्रवाई के बारे में उसे विधिवत सूचित करेगा।

टिप्पणी.—उपबन्ध (2) और (3) में जिस अवधि के भीतर राशि अदा की जायेगी वह और उस पर देय ब्याज जिस दर पर अदा किया जायेगा वह ऐसी होनी चाहिए कि अधिनियम या उस समय अमल में रहन वाले किसी कानून के उपबन्धों के विपरीत न हो।

(4) ऐसा चूककर्ता सदस्य जिसे इनाम नहीं मिला है अपने द्वारा अदा की गयी राशि तथा प्राप्य बट्टे के लिए तब पात्र होगा जब वह स्थानापन्न सदस्य द्वारा इनाम की राशि आहरित करने के समय लिखित रूप में प्राप्ति सूचना दें। यदि चूककर्ता सदस्य उसे प्राप्य राशि प्राप्त करने में चूक जाता है तो फोरमैन उसे अनुमोदित बैंक में जमा करा देगा। यदि फोरमैन ऐसे सदस्य को नियत तारीख को ऐसी देय राशि उसे अदा करने से चूक जाता है तो ऐसा सदस्य उस समय लागू कानून के अन्तर्गत अनुमत ब्याज के साथ ऐसी राशि वसूल करने के लिए सक्षम होगा।

VII. (1) इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य द्वारा इनाम की राशि प्राप्त करने की क्रियाविधि: इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य या उसके नामिती को फोरमैन से (यहां अवधि निर्दिष्ट करें) के भीतर इनाम की राशि तब प्राप्त होगी, जब वह भविष्य में अभिदानों की राशि की अदायगी के लिए फोरमैन को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त जमानत प्रस्तुत कर देगा।

(2) यदि पर्याप्त जमानत प्रस्तुत करने के बाद इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य या उसके नामिती को इनाम की राशि प्राप्त नहीं होती तो फोरमैन उक्त राशि अनुमोदित बैंक में जमा कर देगा और इनाम प्राप्त करन वाल सदस्य को इस तथ्य की सूचना देगा।

(3) यदि इस तरह जमा की गयी राशि भविष्य के अभिदानों की अदायगी के लिए अपर्याप्त है तो फोरमैन ऐसे इनाम प्राप्त करने वाल सदस्य से कम रहन वाली उक्त रकम और उस पर देय ब्याज के साथ अन्य सभी प्रासंगिक व्यय वसूल करने के लिए सक्षम होगा।

(4) भविष्य के अभिदान की राशि तथा अन्य खर्च अदा करने के बाद यदि जमा की गयी राशि का कोई अंश बच जाता है तो चिट समाप्त होने पर फोरमैन द्वारा इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य को उक्त अंश देय होगा, यदि वह उक्त अंश नहीं दे पाता है तो इनाम प्राप्त करन वाला सदस्य या उसका नामिती चिट समाप्त होने की तारीख से उक्त बचा हुआ अंश और उस पर देय ब्याज फोरमैन से वसूल करने के लिए सक्षम होगा।

(5) इनाम की राशि अनुमोदित बैंक में जमा करने के बाद यदि किसी समय इनाम प्राप्त करने वाला सदस्य या उसका नामिती पर्याप्त जमानत प्रस्तुत करता है तो फोरमैन इस प्रकार जमा की गयी राशि निकालेगा और वह राशि इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य या उसके नामिती को, जमानत प्रस्तुत करन की तारीख से पहले की किस्तों की उसके द्वारा अदा की जान वाली राशि को उसमें से घटा कर अदा करेगा।

(6) पर्याप्त जमानत प्रस्तुत करने वाले इनाम प्राप्त सदस्य या उसके नामिती को यदि फोरमैन इनाम की राशि अदा नहीं कर पाता है तो ऐसा सदस्य या उसका नामिती फोरमैन से इनाम की राशि ऐसी जमानत प्रस्तुत करन की तारीख से उस पर देय ब्याज के साथ वसूल करने के लिए सक्षम होगा।

VIII. बट्टे का वितरण:—बोली लगाये जाने वाल प्रत्येक टिकट के लिए बट्टे की राशि फोरमैन का कमीशन घटाने के बाद इनाम प्राप्त करने वाले और जिन्हें इनाम नहीं मिला है उनके बीच बराबर मात्रा में वितरित की जायेगी।

IX. फोरमैन का कमीशन और ऐसी किस्में जिन पर फोरमैन को इनाम मिलेगा:—(1) . . . यहाँ किस्त की तारीख और संख्या का उल्लेख करें जिस पर फोरमैन को इनाम मिलना है। पहली और अंतिम किस्त की बोली नहीं की जाएगी, अतः सदस्यों को अपने टिकट को पूरी राशि अदा करनी होगी।

(2) यहाँ पर फोरमैन के कमीशन की प्रतिशत दर तथा चिट राशि पर लगाये जाने वाले कुल कमीशन की राशि का उल्लेख करें।

टिप्पणी:—अन्य किसी प्रयोजन के लिए सदस्यों द्वारा स्वीकृत दूसरी किसी राशि का भी यहाँ उल्लेख करें।

X. अंतरण कैसे किया जाये:—(1) कोई सदस्य इस बात के लिए सक्षम नहीं होगा कि वह चिट में अपने अधिकारों को फोरमैन को लिखित सहमति के बिना अंतरित करे वरन् ऐसी सहमति उस सदस्य के अंतरण के मामले में आवश्यक नहीं होगा जिसका नाम अभिदानों की अदायगी में चूक करने के कारण सदस्यों की सूची में से फोरमैन द्वारा हटा दिया गया है। अंतरिती (चाहे वह पहल ही सदस्य हो या नहीं) अंतरणकर्ता से चिट में टिकट या उसके किसी अंतरित अंश से अधिक के उन अधिकारों का पात्र नहीं होगा जो उसे चिट में प्राप्त हैं।

(2) इनाम प्राप्त करने वाले सदस्यों से अभिदान प्राप्त करने के फोरमैन के अधिकार को चिटों के पंजीयक की लिखित पूर्व स्वीकृति के बिना अंतरित नहीं किया जायेगा। ऐसा कोई अंतरण, यदि इनाम प्राप्त करने वाले सदस्य को विफल या विलम्ब करता हो, ऐसे सदस्यों के अनुरोध पर टाला जा सकता है।

XI. तुलनपत्र तथा चिट अभिलेखों की जांच करने का सदस्य का अधिकार:—(1) चिट के समाप्त होने पर फोरमैन चिट की आस्तियों और देयताओं के सारांश के रूप में तुलनपत्र तैयार करेगा तथा ऐसे विवरण देगा जो आस्तियों और देयताओं के स्वरूप और आस्तियों के मूल्य किस तरह निकाले गये हैं के बारे में बतायेगा। ऐसा तुलनपत्र नियम 29 में लेखा परीक्षकों द्वारा निर्दिष्ट लेखा परीक्षा के लिए उपलब्ध कराया जाएगा और फोरमैन ऐसे लेखा परीक्षण का एक प्रमाणपत्र प्राप्त कर अपने पास रखेगा।

(2) फोरमैन आहरण की सभी तारीखों को (यहाँ समय निर्दिष्ट किया जाए) के बीच सभी चिट अभिलेख सदस्यों को परीक्षण के लिए उपलब्ध करायेंगा।

XII. ऐसे बैंक जहाँ चिट धन जमा किया सकता है:— [यहाँ ऐसे अनुमोदित बैंक (बैंकों) का (के) नाम का उल्लेख करें जहाँ चिट धन जमा करने का फोरमैन का प्रस्ताव है]

XIII. विविध:—(1) जिस सदस्य को अपना इनाम अंतिम किस्त पर मिलता है वह चिट राशि में से फोरमैन का कमीशन घटा कर बची हुई राशि का पात्र होगा। फोरमैन चिट समाप्त होने की तारीख से बाद (यहाँ अवधि निर्दिष्ट करें) के भीतर ऐसी राशि अदा करेगा और ऐसी राशि अदा न करने पर इनाम प्राप्त सदस्य उक्त तारीख से उस राशि पर ब्याज सहित फोरमैन से राशि वसूल करने के लिए सक्षम होगा।

(2) चिट के कारण किसी सदस्य द्वारा फोरमैन को देय कोई राशि ऐसे सदस्य द्वारा दिये गये अभिदानों पर पहला प्रभार होगी। इसी तरह से फोरमैन द्वारा जमा किया गया पूरा चिट धन और जमानत में से फोरमैन द्वारा सदस्यों को देय राशि अदा करनी होगी।

(3) फोरमैन द्वारा सदस्यों को या सदस्यों द्वारा फोरमैन को की गयी सभी अदायगियों के लिए रसीदें दी जाएंगी।

(4) किसी भी स्थिति में चिट राशि बढ़ायी नहीं जाएगी; किन्तु यदि आवश्यक हुआ तो यह घटायी जा सकती है।

(5) अधिनियम और उसके अन्तर्गत बनाये गये नियमों के उपबन्धों से अलग चिट करार में यदि कोई परिवर्तन करना हो तो फोरमैन इनाम प्राप्त न करने वाले सदस्यों या ऐसे सदस्यों जिन्हें इनाम मिला है, पर अदा नहीं किया गया है, के कम से कम 25 प्रतिशत सदस्यों की लिखित मांग पर एक बैठक बुलायेगा।

(6) यदि फोरमैन की किसी चूक के कारण चिट कारोबार जारी नहीं रहता तो फोरमैन को ऐसे सदस्य जिन्हें इनाम नहीं मिला है को (यहां अर्वाध का उल्लेख करें) के भीतर कटौती सहित उनके अभिदान की राशि अदा करगा, यदि उक्त राशि अदा नहीं की गयी तो ऐसे सदस्य प्राप्य ब्याज सहित अपनी राशि फोरमैन से या निम्नलिखित सभी आस्तियों या किसी एक आस्ति में से वसूल करने के लिए सक्षम होंगे:—

- (क) फोरमैन द्वारा दी गयी या जमा की गयी जमानत;
- (ख) फोरमैन की अन्य संपत्तियां; और
- (ग) इनाम प्राप्त सदस्यों द्वारा भविष्य में फोरमैन को देय अभिदान राशि।

(7) ऐसे मामले में जहां फोरमैन उस टिकट के अलावा जिसके लिए वह बट्टा घटाये बिना इनाम के लिए पात्र है, साधारण सदस्य के रूप में भी टिकट धारित करता है वहां वह चिट के अन्य सदस्यों से अधिक कोई अधिकार या सुविधाओं का पात्र नहीं होगा।

जब फोरमैन ऐसे टिकट खरीदता है तो उसे अधिनियम और उसके अन्तर्गत बनाये गये नियमों के अधीन अपेक्षित भविष्य में अभिदान की राशि अदा करने के लिए पर्याप्त जमानत देनी होगी।

(8) चिट के समाप्त होने के पहले यदि फोरमैन की मृत्यु हो जाती है या अन्यथा वह चिट चलाने में असमर्थ हो जाता है,—

- (i) यहां चिट चलाने के लिए की गयी व्यवस्थाओं का उल्लेख करें।
- (ii) ऐसी स्थिति में एक या अधिक सदस्य जिन्हें इनाम नहीं मिला है, विशेष संकल्प द्वारा भविष्य में चिट चलाने के लिए इस चिट करार में किसी प्रावधान के अभाव में फोरमैन का स्थान ले सकते हैं और चिट चलाने का अधिकार ले सकते हैं या भविष्य में चिट चलान की उपयुक्त व्यवस्थाएं करने के लिए प्राधिकृत किय जा सकते हैं।

(9) यहां ऐसे किसी प्रावधान का उल्लेख करें जिस पर सहमति हुई हो जैसे ब्याज की अदायगी या देय दण्ड (यदि कोई हो) या निदिष्ट किस्तों की अदायगी में कोई चूक, आदि।

(10) निम्नलिखित सदस्य जिनके हस्ताक्षर नीचे दिये जा रहे हैं, उपर्युक्त अंतर्नियमों पर सहमत हैं:—

क्रम सं०	सदस्य का नाम और पूरा पता	लिय गये टिकटों की संख्या	सदस्य के हस्ताक्षर और तारीख	गवाह का नाम, हस्ताक्षर और पता
1	2	3	4	5

1. फोरमैन

2.

3.

4.

5.

आदि

फार्म IX

(धारा 16 और नियम 16 देखें)

19. की चिट सं० के सदस्यों को सूचना

महोदय,

यह सूचित किया जाता है कि चिट सं० 19. जिसमें
आप एक सदस्य हैं, का मासिक/त्रैमासिक/अर्धवार्षिक/वार्षिक ड्रा दिन
महीना 198. को
पूर्वाह्न/अपराह्न को होगा। कृपया ड्रा के लिए
(पता)
आप स्वयं या आपके विधिवत प्राधिकृत एजेंट उपस्थित रहें।

भवदीय,

सचिव
के लिए और की ओर से (फोरमैन)

*जो लागू न हो उसे काट दें। उपयुक्त पदनाम लिखें।

फार्म X

(धारा 20 और नियम 18 देखें)

चिट चलाने के लिए जमानत देने की अनुमति हेतु आवेदन

सेवा में,

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश,
शिमला-171 002.

प्रिय महोदय,

मैं/हम अपने द्वारा चलाये जाने वाली चिट के सम्बन्ध में निम्नलिखित जमानत देने का प्रस्ताव
करते हैं, जिसे शुरू करने के सम्बन्ध में प्रमाण-पत्र आपके द्वारा
(दिनांक सं० देख) दिया गया। अन्य विवरण निम्न प्रकार है:

1. आवेदक का नाम और पता
2. आयु और व्यवसाय
3. चिट की राशि
4. जमानत के रूप में दी गयी नकदी / सरकारी प्रतिभूति/
किसी अन्य चल जमानत के ब्यौरे

5. जमानत के रूप में दी गयी अचल संपत्ति के ब्यौरे।

1.जिला.उप-जिला.
.तालुका.ग्राम.
.सर्वेक्षण सं०क्षेत्रफल
आदि ।		
2.	-वही-	-वही-
आदि		

6. संपत्ति पर आवेदक के हक

7. संपत्ति का बाजार मूल्य

8. संपत्ति पर पहले के हकदारों यदि कोई नहीं, के ब्यौरे

9. आवेदक द्वारा पूर्णतः स्वाधिकृत (चल और अचल) संपत्ति

10. क्या आवेदक ने कोई कर्ज लिया है, यदि हां तो ऐसे कर्ज की राशि

11. क्या आवेदक ने पहले कोई चिट चलायी थी और यदि हां तो क्या उस पर उसके अन्तर्गत कोई निस्तर देयता है ?

मैं/हम इसके साथ निम्न प्रकार लिखता हूँ / लिखते हैं :

(1) जमानत के रूप में दी गयी संपत्ति के समर्थन के लिए हक विलेख ; और

(2) पिछले 30 वर्षों के लिए संपत्ति का अधिकार प्रमाणपत्र,

इसमें दी गई जानकारी और विवरण मेरी/हमारी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य और सही है ।

भवदीय,
अध्यक्ष

सचिव
हस्ताक्षर

स्थान :

दिनांक :

.के लिए और की ओर से ।

टिप्पणी:- (1) दी गयी जमानत यदि अचल संपत्ति हो तभी लागू होगा ।

(2) जो लागू नहीं उसे काट दें । आवेदक के उपयुक्त पदनाम का उल्लेख करें ।

निर्णय के ब्यौरे

चिट के पंजीयक के ब्यौरे

(मोहर)

फार्म XI

(नियम 18 देखें)
जमानत पर्याप्त होने का प्रमाण-पत्र

कार्यालय
महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हि० प्र०, शिमला-2
स्थान :
दिनांक :

निम्नलिखित के मामले में—

1. नकद/सरकारी प्रतिभूति/अन्य चल जमानत

मैं इसके द्वारा यह प्रमाणित करता हूँ कि इसमें उल्लिखित और किसी अनुमोदित बैंक में जमा/मेरे नाम पर अंतरित राशि/सरकारी प्रतिभूति/अन्य जमानत (उल्लेख करें) पर्याप्त है और उसे चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40) की धारा 20 के अन्तर्गत स्वीकृत किया जा सकता है।

हस्ताक्षर,
महानिरीक्षक पंजीकरण एवं
रजिस्ट्रार चिट, हि० प्र०।

(मोहर)

(2) अचल सम्पत्ति की जमानत

मैं इसके द्वारा यह प्रमाणित करता हूँ कि फोरमन/सदस्य फोरमन द्वारा जमा किये गये दिनांक के आवेदन पत्र में दी गयी संपत्ति का मूल्यांकन सही है और वह चिट फंड अधिनियम, 1982 की धारा 20 के अन्तर्गत स्वीकृत किया जा सकता है।

(मोहर)

हस्ताक्षर,
महानिरीक्षक पंजीकरण एवं
रजिस्ट्रार चिट, हि० प्र०

जो लागू न हो उसे काट दें/हटा दें।

फार्म XII

[धारा 20 (3) और नियम 20 देखें]

जमानत बदलन के लिए आवेदन-पत्र

सेवा में,

स्थान :
दिनांक :

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार(चिट),
हि० प्र०, शिमला-171002

प्रिय महोदय,

म/हम चिट को उचित रूप से चलाने के लिए, जिसको शुरू करने के लिए आपके द्वारा एक प्रमाण

पत्र दिया गया है (दखें सं०. दिनांक) मूल जमानत के बदले निम्नलिखित जमानत देने का प्रस्ताव करता हूँ/करते हैं:—

नीचे कुछ अन्य ब्यौरे भी दिये गये हैं:—

1. फोरमैन का नाम . . .
2. यदि फोरमैन कोई फर्म या कम्पनी न हो उसकी उम्र और व्यवसाय . .
3. वह कार्यालय जहाँ चिट का चिट करार पंजीकृत किया गया है और पंजीकरण की संख्या तथा वर्ष . .
4. चिट राशि . . . रुपये
5. दी गयी मूल जमानत के ब्यौरे . .
6. उन सभी चल (और अचल) संपत्तियों के ब्यौरे जो एकमात्र आवेदनकर्ता की है . .
7. क्या आवेदक पर कोई ऋण है, यदि हां तो उस ऋण की राशि और वह किस को देय है . .
8. प्रतिस्थापन आधार पर दी जाने वाली सरकारी प्रतिभूति/अन्य जमानतों के ब्यौरे . .

मैं/हम इसके द्वारा यह घोषित करता हूँ/करते हैं कि इसमें दी गयी जानकारी और ब्यौरे मेरी/हमारी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य और सही हैं।

भवदीय,
अध्यक्ष,
हस्ताक्षर,
के लिए और की ओर से

जो लागू न हो उसे काट दें/हटा दें।
आवेदक के लिए उपयुक्त पदनाम लिखें।

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश का निर्णय

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार (चिट),
हिमाचल प्रदेश के हस्ताक्षर।

फार्म—XII

(धारा 23 और नियम 25 देखें)

रखे जाने वाले सदस्यों के रजिस्टर का फार्म

वह कार्यालय, जहाँ चिट का चिट करार पंजीकृत किया गया है

चिट के चिट करार की पंजीकरण संख्या और पंजीकरण का वर्ष.

चिट करार के अनुसार संख्या	सदस्य का नाम और पूरा पता	चिट करार पर हस्ताक्षर करने की तारीख	सदस्य को चिट करार की प्रतिलिपि प्राप्त होने की तारीख	चिट सदस्य टिकटों की संख्या	राशि
1	2	3	4	5	6
					₹0

समनुदेशन

समनुदेशिनी का नाम और पता	समनुदेशन की तारीख	टिकटों की संख्या और खंड	राशि	फोरमैन द्वारा समनुदेशन को मान्यता प्रदान करने की तारीख
7	8	9	10	11
				₹0

प्रतिस्थापन

सदस्य के निष्कासन का कारण	निष्कासन की तारीख	प्रतिस्थापित सदस्य का नाम और पता	प्रतिस्थापन की तारीख	टिकटों की संख्या और खंड	राशि
12	13	14	15	16	17
					₹0

निष्कासित सदस्य को प्रतिस्थापन की
सूचना देने की तारीख
18

टिप्पणी
19

फार्म-XIV

(धारा 23 और नियम 25 देखें)

रखे जाने वाले लेजर का फार्म

वह कार्यालय जहाँ चिट का चिट करार पंजीकृत किया गया है
चिट करार की पंजीकरण संख्या

खण्ड-I: सदस्य के संदर्भ में प्राप्तियाँ और भुगतान:

सदस्यों की संख्या ..
सदस्य का नाम ..
लिये गये टिकटों की संख्या ..
चिट राशि .. रुपये

लेजर

तारीख	किस्तों की संख्या	फोरमैन न किस लिए राशि प्राप्त की अथवा भुगतान किया	प्रति किस्त अभिदान राशि	सदस्य को प्रति किस्त देय लाभांश
1	2	3	4	5
			₹0	₹0

सदस्य द्वारा अदा की गयी राशि	सदस्य द्वारा दैनिक पंजी में पुनः प्राप्त सामान्य संख्या	हस्ताक्षर	टिप्पणी
शेयर राशि	ब्याज राशि	सदस्य फोरमैन	
6	7	8	9
10	11	12	
0	₹0	₹0	

खण्ड-II: फोरमन का जमा और आहरण खाता

उस बैंक का नाम, जिसमें राशि जमा की गयी

तारीख	किस उद्देश्य से जमा अथवा आहरित की गयी	जमा की गयी राशि	प्रोदभूत व्याज	प्रत्यक लन देने के बाद शेष राशि	आहरित राशि
1	2	3	4	5	6

शेष राशि	दैनिक पंजी में संख्या	फोरमन के हस्ताक्षर	टिप्पणी
7	8	9	10

फार्म-XV

(धारा 23 और नियम 25 देखें)

रखी जाने वाली दैनिक बही का फार्म

वह कार्यालय जहां चिट का चिट करार पंजीकृत किया गया
चिट करार की पंजीकरण संख्या

दैनिक बही

दिनांक	सामान्य संख्या	किस आधार पर प्राप्त अथवा अदा किया गया	अभिदान	व्याज	बैंक से आहरण	अन्य मदें	कुल प्राप्तियां
1	2	3	4	5	6	7	8
			₹0	₹0	₹0	₹0	₹0

व्यय

प्राप्ति बही में प्राप्ति का संदर्भ	सदस्य को अदा की गयी राशि	फोरमैन की कमीशन	बैंक में जमा राशियां	अन्य मदें	कुल व्यय
9	10	11	12	13	14
	₹0	₹0	₹0	₹0	₹0
शेष राशि	वाउचरों की फाइल में वाउचर की पृष्ठ संख्या का संदर्भ	फोरमैन के हस्ताक्षर	टिप्पणियां		
15	16	17	18		
₹0					

- टिप्पणी.—(1) प्रत्येक दिन कारोबार की समाप्ति पर स्तम्भ (15) में शेष राशि पर सही का निशान लगाया जाना चाहिए।
- (2) स्तम्भ (2) में प्रत्येक लेनदेन को क्रम संख्या दी जानी चाहिए। प्रत्येक कैलेंडर वर्ष के लिए क्रम संख्याओं का एक अलग सेट होना चाहिए।
- (3) यदि एक ही समय में एक से अधिक अभिदाताओं से राशि वसूल की गयी हो या उन्हें अदा की गयी हो, तो प्रत्येक सदस्य को अदा की गयी अथवा उससे वसूल की गयी राशि की प्रविष्टि अलग मद के रूप में की जानी चाहिए।
- (4) यदि एक ही समय में सदस्य से एक से अधिक राशियां वसूल अथवा अदा की जाती हैं, तो सदस्य को अदा की गयी अथवा उससे वसूल की गयी प्रत्येक राशि की प्रविष्टि अलग मद के रूप में की जानी चाहिए।

फार्म XVI

(धारा 23 और नियम 25 देखें)

रखी जाने वाली प्राप्ति बही का फार्म

मूल

प्राप्तियां

क्रम संख्या

दूसरी प्रति

..... 19 की संख्या. के अन्तर्गत पंजीकृत चिट करार के संदर्भ में नीचे दी गयी राशियां
..... के नाम से. से प्राप्त की।

₹0 पैसे

चालू किस्त के लिए भुगतान
अभिदान की वकाया राशि (ब्यौरे सहित)
अतिदेय अभिदान के लिए दण्ड राशि

अभिलेखों की जांच के लिए शुल्क
अन्य प्राप्तियां (उल्लेख करें)

कुल..

(शब्दों में)
दिनांक

रुपये पैसे

फोरमैन के लिए
और की ओर से

टिप्पणी:—जो लागू न हो उसे काट/हटा दें।

आवदक का उपयुक्त पदनाम लिखें।

फार्म-XVII

(धारा 64 और नियम 45 देखें)

निम्नलिखित के समक्ष पंचनिर्णय के लिए विवाद के संदर्भ में आवेदन-पत्र महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट/अपर/संयुक्त/उप/सहायक पंजीयक चिट:

1. नाम :	उम्र :	} .. विवादी
व्यवसाय :	पता :	
2. नाम :	उम्र :	
व्यवसाय :	पता :	
3. नाम :	उम्र :	
व्यवसाय :	पता :	

बनाम-

1. नाम :	उम्र :	} .. प्रतिवादी।
व्यवसाय :	पता :	
2. नाम :	उम्र :	
व्यवसाय :	पता :	
3. नाम :	उम्र :	
व्यवसाय :	पता :	

(यहां दावे के पूर्ण व्यौरे अथवा दावे के वे तत्व लिखे जिनके कारण विवाद उत्पन्न हुआ और वह कब उठाया गया आदि)

विवादी/विवादियों की प्रार्थना/प्रार्थनाएं निम्नलिखित है/हैं:—

.....

.....

मांगे गये उपर्युक्त दावे अथवा राहत राशि के समर्थन में मैं/हम इसके साथ संलग्न सूची के अनुसार दस्तावेज और कागजात संलग्न कर रहा हूँ/रहे हैं।

दिनांक

(हस्ताक्षर) विवादी

मैं/हम विवादी यह घोषित करता हूँ/करते हैं कि ऊपर उल्लिखित तथ्य मेरी/हमारी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

दिनांक :

(हस्ताक्षर) $\left. \begin{matrix} (1) \\ (2) \\ (3) \end{matrix} \right\}$ विवादी।

. 19. को के कार्यालय में प्रस्तुत किया गया।

टिप्पणी.—(1) अधिक विवादियों अथवा प्रतिवादियों के मामले में उनके नाम, पते, उम्र और व्यवसाय का उल्लेख करें।

(2) धन सम्बन्धी दावों से सम्बन्धित विवादों में विवादियों को दावे की वास्तविक राशि का उल्लेख करना चाहिए। किन्तु जहाँ यह राशि निश्चित न की जा सके वहाँ विवादियों को दावे की अनुमानित राशि का उल्लेख करना चाहिए।

(3) जब विवादी-फोरमैन कोई कम्पनी/सहकारी समिति या सांझेदारी फर्म हो तो यथास्थिति उसके निदेशक बोर्ड अथवा प्रबन्ध समिति के प्रस्ताव की प्रतिलिपि आवेदन के साथ भेजी चाहिए।

फार्म XVIII

(धारा 71 और नियम 54 देखें)

प्रमाण पत्र जारी करते समय जारी की जाने वाली उद्घोषणा

अ. अचल संपत्ति के मामले में :

यतः (निर्णीत-लेनदार) ने चिट फंड अधिनियम, 1982 की धारा 69 के अन्तर्गत (निर्णीत-देनदार) के विरुद्ध रुपये की राशि का अधिनिर्णय प्राप्त कर लिया है और उसे उक्त निर्णय देनदार की निम्नलिखित संपत्ति को बेचकर निष्पादित करने का प्रस्ताव करता है और यतः उक्त निर्णीत-लेनदार ने उक्त अधिनियम की धारा 71 के अन्तर्गत अधिनिर्णय के निष्पादन के लिए दिनांक का प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लिया है।

यह सूचित किया जाता है कि उक्त निर्णीत-लेनदार पर प्रमाणपत्र जारी करने के बाद संपत्ति का निजी अंतरण अथवा उसकी सुपुर्दगी अथवा उस पर बनाया गया या निर्मित भार अथवा प्रभार पूर्वोक्त अधिनियम की धारा 72 के अन्तर्गत वकृत और शून्य होगा।

संपत्ति का विवरण

अधिनिर्णय अथवा आदेश की तारीख	उन पार्टियों के नाम जिन पर अधिनिर्णय अथवा पारित किया गया है और धारा 71 के अन्तर्गत प्रमाण-पत्र जारी किया गया है	सर्वेक्षण सं० अथवा मकान सं०	गांव अथवा कस्बे आदि का नाम	क्षेत्र	कर निर्धारण अथवा अन्य कर
1	2	3	4	5	6

संपत्ति के अन्य विवरण जैसे संपत्ति की सीमाएं आदि
7

टिप्पणियां
8

नोटिस की उद्घोषणा ऐसी संपत्ति के स्थान या उसके निकटवर्ती स्थान पर डोल बजाकर या अन्य परम्परागत ढंग से की जायेगी और उक्त नोटिस की एक प्रतिलिपि संपत्ति के प्रमुख स्थान पर और गांव की चौपाल के प्रमुख भाग पर और साथ ही जहां पर भू-भाग स्थित है उस क्षेत्र के जिलाधीश के कार्यालय में जहां राज्य सरकार को संपत्ति पर भूमि राजस्व दिया जाता है, पर चिपकायी जायेगी।

स्थान.....
दिनांक.....

महानिरीक्षक पंजीकरण एवं रजिस्ट्रार चिट,
हिमाचल प्रदेश।

आ. चल संपत्ति के मामले में संपत्ति के विवरणानुसार आवश्यक परिवर्तनों के बाद इसी तरह का नोटिस दिया जा सकता है। नोटिस की प्रतिलिपि निर्णीत-देनदार को दी जायेगी।

फार्म-XIX

[नियम 56 (5) देखें]

संपत्ति के अंतरण के लिए प्रमाणपत्र

अचल संपत्ति के मामले में :

यतः चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40) के अन्तर्गत..... (जिन्हें इसमें आगे निर्णीत लेनदार कहा जायेगा) के पक्ष में अधिनिर्णय निष्पादित करने के लिए उक्त व्यक्ति अथवा व्यक्तियों (देनदार/अथवा देनदारों) की निम्नलिखित संपत्ति के विक्रय हेतु..... 1982 के..... दिन आदेश पारित किया गया था;

और यतः न्यायालय/जिलाधीश/महानिरीक्षक पंजीकरण एवं पंजीयक इस बात से संतुष्ट हैं कि खरीदारों की कमी के कारण उक्त संपत्ति बेची नहीं जा सकती;

अतः इसके द्वारा आदेश दिया जाता है कि उक्त संपत्ति का अधिकार, स्वत्वाधिकार और देनदार का हित उक्त निर्णीत लेनदार के पास रहेगा और इसके साथ संलग्न अनुसूची में निर्धारित शर्तों और नियमों के अनुसार उसे सौंपा जायेगा :

संपत्ति का विवरण

सर्वेक्षण संख्या	क्षेत्र और निर्धारण	चूककर्ता के अधिकार, स्वत्वाधिकार और हित का स्वरूप	संपत्ति पर भार के ब्यौरे
------------------	---------------------	---	--------------------------

अनुसूची

देनदार द्वारा निर्णीत लेनदार को जो राशि देय है, उसकी पूर्ण/आंशिक पूर्ति के रूप में उक्त संपत्ति निर्णीत लेनदार को अंतरित की गयी है।

मेरे हस्ताक्षर और न्यायालय/जिलाधीश/पंजीयक की मुहर के अधीन आज..... 19... के... में दिन इसे दिया गया ।

न्यायालय/जिलाधीश, महानिरीक्षक पंजीकरण एवं
रजिस्ट्रार चिट, हिमाचल प्रदेश ।

अचल संपत्ति के मामले में :

(फार्म वही रहेगा, संपत्ति के विवरण और सुपुर्दगी के सम्बन्ध में आवश्यक परिवर्तन किये जायेंगे)।

फार्म XX

[नियम 2 का उप-नियम (ग) देखें]

प्राधिकार-पत्र का फार्म

मैं (नाम) जो कि मैसर्स..... में (पदनाम) पर कार्यरत हूँ, रजिस्ट्रेशन नम्बर के अन्तर्गत पंजीकृत चिट सीरीज नंबर के अधिष्ठाता की () हैंसियत से एतद्द्वारा श्री..... को मेरी/हमारी ओर से उपर्युक्त चिट से सम्बंधित मामलों में लखे और दस्तावेज प्रस्तुत करने तथा मेरी/हमारी ओर से नोटिस अथवा दस्तावेज प्राप्त करने तथा उनके सम्बन्ध में समस्त आवश्यक कदम उठाने के लिए प्राधिकृत प्रतिनिधि नियुक्त करता हूँ।

एतद्द्वारा उक्त श्री..... को मेरी उक्त श्री..... की ओर से उक्त मामले में काम करने के लिए प्राधिकृत किया जाता है।

मैं/हम इस प्राधिकार के अन्तर्गत उक्त श्री..... द्वारा किये गये समस्त कार्यों का अनुसमर्थन करने के लिए सहमत हूँ/हैं।

स्थान
तारीख

हस्ताक्षर :
पद :

फार्म-xVI

[नियम 28 (2) देखें]

अधिष्ठाता का नाम

- | | |
|---|--|
| (1) कार्यालय जहाँ चिट के उप-नियम पंजीकृत हैं | (1) चिट के उप-नियमों का रजिस्ट्रेशन नम्बर तथा वर्ष |
| (2) तारीख जिसके लिए तुलनपत्र तैयार किया गया है। | (2) अधिष्ठाता का नाम |
| (3) तुलन-पत्र की तारीख तक संचालित किस्तों की संख्या | (3) चिट राशि |
| | (4) किस्तों की संख्या |

1. प्राप्तियाँ और व्यय

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष	कुल पिछले वर्षों सहित	व्यय	चालू वर्ष	कुल पिछले वर्षों सहित
	₹0 पैसे	₹0 पैसे		₹0 पैसे	₹0 पैसे
1. पुरस्कार प्राप्त करने वाले और करने वालों द्वारा किया गया अभिदान			1. पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं को वितरित पुरस्कार की राशि।		
2. लाभांश के अन्तर्गत प्राप्तियाँ			2. अभिदाताओं को अदा किया गया व्याज		
3. अभिदाताओं से वसूल किया गया व्याज			3. पुरस्कार प्राप्त न करने वाले चूककर्ता अभिदाताओं को अदा की गयी राशियाँ		
4. पुरस्कार प्राप्त नहीं करने वाले ऐवजी या सानुदेशिती अभिदाताओं द्वारा चूककर्ताओं की देयताओं से सम्बन्धित अभिदान			4. पुरस्कार की राशि अदा करने के लिए अधिष्ठाता द्वारा अभिदत्त राशि।		
5. अभिदाताओं से प्राप्त की गयी अन्य कोई राशि			5. अधिष्ठाता का कमीशन		
6. पुरस्कार की राशि अदा करने के लिए अधिष्ठाता द्वारा अभिदत्त राशि			6. देरी से किये भुगतानों और जब्त किए गए लाभांशों पर वसूल किये गये व्याज की राशि		
7. निवेशों से प्राप्त व्याज			7. अदा किया गया लाभांश		
8. अन्य मदें (ब्यौरे संलग्न किये जायें)			8. ऋण शोधन निधि		
9. हटाये गये निवेश			9. अन्य मदें (ब्यौरे संलग्न किये जायें)		
			कुल व्यय		
			10. किये गये निवेश		
			कुल जोड़		

2. आस्तियों और देयताओं का विवरण

आस्तियाँ	₹0 पैसे	देयताएँ	₹0 पैसे
1.	2.	3.	4.
1. पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं के अनुदानों की बकाया राशियाँ		1. पुरस्कार प्राप्त न करने वाले अभिदाताओं द्वारा अदा की गयी राशियाँ (लाभांश सहित)	
2. अधिष्ठाता सहित अभिदाताओं से प्राप्य भावी अनुदानों की बकाया राशियाँ		2. पुरस्कार प्राप्त न करने वाले चूककर्ता अभिदाताओं की ओर बकाया राशियाँ	

1

2

3

4

3. चूककर्ता अभिदाताओं की ओर से बकाया ब्याज

3. पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं को पुरस्कार स्वरूप दी जाने वाली बकाया राशि।

4. बैंक में जमा निधियां (उन पर प्राप्त होने वाले ब्याज सहित)

4. पुरस्कार की राशि की अदायगी के लिए अधिष्ठाता द्वारा किये गये अंश-दान की देय बकाया राशि।

5. अन्य मदें (ब्योरे संलग्न किये जायें)

5. अन्य मदें (ब्योरे संलग्न किये जायें)

6. ऋण शोधन निधि

6. ऋण शोधन निधि

जोड़ :

जोड़ :

3. निवेशों के ब्योरे

प्राप्तियां

₹0 पैसे

1. पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं द्वारा उनको देय पुरस्कार की राशि न लेने के कारण किया गया निवेश।

2. पुरस्कार प्राप्त करने वाले चूककर्ता अभिदाताओं से एकमुश्त ली गयी राशि के कारण किये गये निवेश।

3. पुरस्कार प्राप्त न करने वाले चूककर्ता अभिदाताओं को अदा करने के लिए जमा की गयी राशि।

4. चिट की अन्य मदों की प्राप्तियों के कारण किये गये निवेश (ब्योरे संलग्न किये जायें)

जोड़ ..

निवेशों के मूल्य का निर्धारण

1. पास बुक खाता नम्बर में निवेश

2. चिट की किस्तों के लिए प्राप्त किये गये बांड आदि के अनुसार चिट की भावी किस्तों से प्राप्त राशि जिसमें चूककर्ताओं से चुक की गयी किस्तों के कारण प्राप्य. ₹0 की बकाया राशि भी शामिल है।

3. अधिष्ठाता द्वारा पुरस्कार की राशि प्राप्त किये जाने के कारण उसके द्वारा दिये जाने वाले अभिदानों की बकाया राशि।

नोट:-तुलनपत्रों की लेखा परीक्षा की सुविधा की दृष्टि से अधिष्ठाता को चाहिए कि वह तुलन परीक्षा-पत्र के साथ निम्नलिखित विवरण संलग्न करे :—

(1) प्रत्येक किस्त की प्राप्तियां और व्यय के ब्योरे का विवरण।

(2) प्रत्येक किस्त के सम्बन्ध में पुरस्कार की राशि का विवरण।

(3) वितरणों का विवरण।

(4) प्रत्येक किस्त के सम्बन्ध में पुरस्कार की राशि का विवरण और तुलन-पत्र तैयार किये जाने की तारीख को पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं द्वारा देय बकाया राशियों के ब्योरे का विवरण।

*दस्तावेजों के ब्योरे की प्रविष्टियां यहां की जाये।

अधिष्ठाता द्वारा प्रस्तावित मूर्क्षा, अधिनियम की धारा 20 के अन्तर्गत निष्पादित दृष्टिवंधक वांड तथा पुरस्कार प्राप्त करने वाले अभिदाताओं से धारा 31 के अन्तर्गत प्राप्त दृष्टिवंधक वांड आदि।

अधिष्ठाता का प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि उपर्युक्त लेखे सही रूप में तैयार किये गये हैं और वे चिट के कारोबार की सही और पूर्ण स्थिति दर्शाते हैं।

तारीख :

अधिष्ठाता का नाम और हस्ताक्षर ।

लेखा परीक्षक का प्रमाणपत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि मैंने अधिष्ठाता द्वारा संचालित चिट, जिसके उप-नियम में नम्बर 19 पर पंजीकृत है, से सम्बन्धित चिट बहियों तथा रिकार्ड की जांच कर ली है और यहां की गई प्रविष्टियों का मिलान लेखा बाहियों से कर लिया है। यह लेखे चिट फंड अधिनियम, 1982 के उपबन्धों और उनके अन्तर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार तैयार किए गए हैं।

तारीख :

लेखा परीक्षक का नाम व हस्ताक्षर ।

परिशिष्ट—II

(धारा 62, 63 और नियम 42 देखें)

चिट फंड अधिनियम, 1982 (1982 का केन्द्रीय अधिनियम सं० 40) की धारा 62 और 63 के अन्तर्गत शुल्क लगाना

फीस सारणी	रु० पैसे
1	2
1. धारा 4 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत चिट शुरू करने अथवा चिट का संचालन करने के लिए पूर्व मंजूरी के लिए आवेदन।	25.00
2. धारा 7 की उप-धारा (1) के अन्तर्गत चिट करार प्रस्तुत करने के लिए आवेदन	1.00
3. धारा 9 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत चिट कारोबार की शुरुआत के लिए प्रमाण पत्र जारी करना।	1.00
4. धारा 10 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत प्रमाणपत्र के लिए आवेदन करना	1.00
5. धारा 17 के अन्तर्गत कार्यवाही से कार्यवृत्त की प्रति प्रस्तुत करना	0.50
6. नियम 14 के उप-नियम (1) के अन्तर्गत चिट करार में किसी उपबन्ध में परिवर्तन, परिवर्धन या विलोपन के पंजीकरण के लिए प्रत्येक आवेदन के लिए	3.00
7. पंजीयक के पास निम्नलिखित प्रस्तुत करने के लिए प्रत्येक मामले में आवेदन करने के लिए एक रुपय का शुल्क लिया जायेगा :—	
(क) धारा 28 की उप-धारा (3) के अन्तर्गत चूककर्ता सदस्य को हटाने से सम्बन्धित प्रत्येक प्रविष्टि की सत्य प्रतिलिपि।	
(ख) धारा 29 की उप-धारा (2) के अन्तर्गत सदस्य के प्रतिस्थापन से सम्बन्धित प्रत्येक प्रविष्टि की सत्य प्रतिलिपि।	
(ग) धारा 37 के अन्तर्गत फोरमैन के अधिकारों के अंतरण से सम्बन्धित	

प्रत्येक प्रविष्टि की सत्य प्रतिलिपि।

(घ) धारा 37 के अन्तर्गत इनाम न पाने वाले सदस्यों के अधिकारों के अंतरण से सम्बन्धित प्रविष्टि की सत्य प्रतिलिपि।

(ङ) धारा 41 के अन्तर्गत फॉरमैन को हटाने के लिए इनाम न पाने वाले सदस्यों और इनाम की राशि अदा न किये गये सदस्यों की सहमति की सत्य प्रतिलिपि।

(च) धारा 41 के अन्तर्गत चिट समाप्त करने के लिए इनाम न पाने वाले अथवा इनाम की राशि न पाने वाले सभी सदस्यों की सहमति की सत्य प्रतिलिपि।

(छ) पंजीयक द्वारा पारित अथवा पारित किये जाने वाले आदेशों के विरुद्ध विरोध करने अथवा आपत्ति उठाने वाली प्रत्येक याचिका।

8. निम्नलिखित प्रत्येक लेखा परीक्षण अथवा निरीक्षण के लिए यदि धारा 24 के अन्तर्गत तुलनपत्र का लेखा परीक्षण किया गया हो अथवा धारा 46 के अन्तर्गत पंजीयक द्वारा अथवा पंजीयक द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी द्वारा चिट बहियों और अभिलेखों का निरीक्षण किया गया हो अथवा फोरमैन के परिसर में अथवा पंजीयक कार्यालय से बाहर चिट लेखा परीक्षक द्वारा चिट को लेखा बहियों और अन्य अभिलेखों का लेखा परीक्षण किया गया है तो इस प्रकार के प्रत्येक लेखा परीक्षण अथवा निरीक्षण के लिए।	50.00
9. धारा 62 के अन्तर्गत चिट से सम्बन्धित एक या अधिक अभिलेखों के निरीक्षण के लिये प्रति निरीक्षण।	1.00
10. धारा 62 के अन्तर्गत प्रस्तुत चिट से सम्बन्धित अभिलेखों की प्रतिलिपि अथवा उनके अंश के प्रत्येक 100 शब्दों अथवा उसके अंश के लिए।	0.25
11. धारा 69 के अन्तर्गत पंजीयक अथवा उसके नामिती द्वारा दिये गये किसी आदेश, निर्णय अथवा अधिनिर्णय की प्रमाणित प्रतिलिपि के प्रत्येक 100 शब्दों अथवा उसके अंश के लिए।	0.15
12. धारा 74 के अन्तर्गत राज्य सरकार को की जाने वाली प्रत्येक अपील के लिए	5.00

[Authoritative English Text of Notification No. Fin-2-C(A) 4-1/82, dated 26th November, 1984 is hereby published for general information required under clause (3) of Article 348 of the Constitution of India.]

NOTIFICATION

In supersession of notification of even number, dated the 24th May, 1984, published in Himachal Pradesh Rajpatra (Extra-ordinary) dated the 30th July, 1984, the Governor, Himachal Pradesh in exercise of the powers conferred vide section 89 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act 40 of 1982) and in consultation with the Reserve Bank of India, hereby makes the following Himachal Pradesh Chit Funds Rules, 1984.

Sd/-
Joint Secretary.

CHAPTER-I

PRELIMINARY

1. Short title.—(i) These rules may be called the H.P. Chit Funds Rules, 1984.

(ii) They shall come into force from the 1st day of December, 1984.

2. *Definitions.*—In these rules, unless the context otherwise requires—

- (a) "Act" means the Chit Funds Act, 1982 (Central Act 40 of 1982);
- (b) "appendix" means an Appendix appended to these rules;
- (c) "authorised agent" means a person duly authorised by a power-of-attorney executed and authenticated in the manner specified in section 33 of the Indian Registration Act, 1908 (Central Act XVI of 1908) or a person authorised by a letter of authorisation specified in Form XV by the person concerned;
- (d) "form" means a form in Appendix I to these rules;
- (e) "section" means a section of the Act;
- (f) "State Government" means the Government of Himachal Pradesh;
- (g) words and expressions used in these rules but not defined therein shall have the same meanings respectively assigned to them in the Act.

CHAPTER-II

REGISTRATION

3. *Application for obtaining prior sanction for commencement or conduct of chit.*—Every application for obtaining prior sanction of the State Government or the officer empowered by it in this behalf, for commencement or conduct of a chit shall be made by the foreman in Form I.

4. *Communication of the refusal to sanction—commencement or conduct of a chit.*—Where sanction for the commencement or conduct of a chit is refused, the reasons for such refusal shall be recorded in writing and a copy thereof shall be communicated to the applicant.

5. *Application for registration of chit.*—Every application for the registration of a chit to be made by the foreman to the Registrar shall be in Form II.

6. *Endorsement of registration of a chit.*—The endorsement of registration of a chit agreement to be issued by the Registrar shall be in Form III.

7. *Registration number of chit.*—Every chit registered under the Act shall be numbered serially by the Registrar in separate series for each calendar year.

8. *Communication of the refusal to register a chit.*—If the Registrar refuses to register a chit, he shall record the reasons for such refusal in writing and communicate a copy of the order to the applicant.

9. *Application for appropriation of any sum from the reserve fund.*—Every application for obtaining prior approval of the Registrar for appropriation by a company of any sum from the reserve fund shall be in Form IV.

10. *Declaration to be filed about subscriptions to all tickets of a chit.*—Every declaration to be filed by a foreman after all tickets in a chit specified in the chit agreement have been fully subscribed shall be in Form V.

11. *Form of certificate of commencement of chit.*—The certificate of commencement of a chit to be granted to the foreman shall be in Form VI.

12. *Form of certificate about furnishing a copy of the chit agreement to the subscribers of a chit.*—The certificate by the foreman about having furnished a copy of the chit agreement to every subscriber of a chit to be filed with the Registrar shall be in Form VII.

13. Form of chit agreement.—The chit agreement of every chit started under the Act shall, as far as may be, conform to the proforma set forth in Form VIII.

14. Registration of alteration, addition or omission of chit agreement.—(1) No alteration, addition or omission of any provision in the chit agreement shall have effect unless such alteration or addition or as the case may be, omission is registered. If the foreman makes any alteration or addition or omission of any provision in the chit agreement, he shall submit such alteration or addition or omission in duplicate to the Registrar duly signed and attested by at least two witnesses along with the application for registration of such alteration or addition or omission as the case may be of the chit agreement.

(2) An application to register an alteration of or addition to or omission of any provision in the chit agreement shall be dealt with in the same manner as an application for registration of the chit agreement.

15. Date of effect of alteration or addition or omission of any provision in the chit agreement.—An alteration of or addition to or omission of, any provision in the chit agreement shall not take effect from a date earlier than the date of such registration of the alteration or addition or omission as the case may be unless otherwise ordered by the Registrar:

Provided that the Registrar shall not give effect to the alteration or addition or omission from a date earlier than the date of application for registration of the alteration or addition or omission of any provision of the chit agreement, as the case may be.

16. Form of notice to chit subscriber.—Every notice to be given by a foreman to the subscribers in a chit under section 16 shall be in Form IX. It shall be sent to each subscriber under certificate of posting and shall also be exhibited on the Notice Board of the office of the foreman.

17. Form of minutes of proceedings.—The minutes of proceedings of every draw shall, in addition to the particulars specified in sub-section (2) of section 17, contain full particulars of the following points, namely:—

- (a) Particulars of deposit, if any, of the prize amount under sub-sections (1) and (2) of section 22 since the date of the previous draw;
- (b) Particulars of deposit, if any, of money under sub-section (1) of section 30 and sub-section (4) of section 33 since the date of the previous draw;
- (c) Amount withdrawn from the approved bank (the name of the bank to be specified) and the purpose for which the amount was withdrawn since the date of the previous draw;
- (d) How the prized subscriber was ascertained according to the terms of the chit agreement and particulars of tickets and prize amount. If the ascertainment of the prized subscriber related to a fraction of a ticket, particulars in respect of each such fraction shall be entered;
- (e) Full particulars of the commission paid to the foreman and amount of dividend assigned to each subscriber;
- (f) Names of subscribers or their authorised agents who bid at the drawing, their ticket numbers and signatures.

CHAPTER-III

FOREMAN

18. *Procedure in the case of security given by the foreman.*—(1) In case of cash deposited in an approved bank in the name of the Registrar under clause (a) of sub-section (1) of section 20, the receipt or the book issued by the approved bank mentioned in the chit agreement shall be delivered to the Registrar.

(2) In case of Government securities transferred in favour of the Registrar under clause (b) of sub-section (1) of section 20, the Registrar shall keep them in safe custody under his control in any Government Treasury.

(3) If the security charged is movable property other than deposit in an approved bank or Government securities, the foreman shall make all necessary arrangements for their deposit with the Registrar or with such bank or other agency as may be approved by the Registrar for ensuring that the property deposited is available as security for the proper conduct of a chit.

(4) In case of trustee securities to be transferred in favour of the Registrar under clause (c) of sub-section (1) of section 20,—

- (i) where the security is other than immovable property, the value of the security shall not be less than one and a half times the value of the chit amount; and
- (ii) in respect of security of immovable property, the value of the security shall not be less than two times the value of the chit amount.

(5) A foreman of a chit proposing to give movable (or immovable) property as security for the proper conduct of a chit shall apply to the Registrar in Form X. The application under this sub-rule shall clearly furnish the correct and complete information regarding the property offered as security. In case the property offered is immovable property, the application shall be accompanied by the documents of title to the property and an encumbrance certificate for 30 years relating to the property.

(6) Where the immovable property offered as security is situated outside the jurisdiction of the Registrar having jurisdiction over the chit, the inspection of the property shall, under the orders of the State Government, be made by the Registrar having jurisdiction over such property, who shall forward a report to the Registrar concerned as to the sufficiency of the security.

(7) If the security offered is accepted as sufficient by the Registrar, he shall record in writing on the application, a certificate of sufficiency in Form XI and attach a statement of the valuation made.

(8) If the security offered is not accepted by the Registrar, he shall give the applicant an endorsement to that effect.

19. *Valuation of chit amount in grain chits.*—In a grain chit, for the purpose of security under section 20, the grain shall be valued by the Registrar as follows:—

- (a) The total quantity of grain due from all subscribers at one instalment of the chit shall be ascertained;
- (b) The market value for the time being of the total quantity referred to in clause (a) shall then be calculated;
- (c) In assessing the market value, the Registrar shall adopt the current market prices at the nearest taluk town as ascertained from the Tehsildar having jurisdiction; and
- (d) One and quarter times the market value mentioned in clause (b) shall be taken to be the chit amount for the purpose of furnishing security by the foreman under sub-section (1) of section 20.

20. Substitution of security.—(1) During the currency of a chit, the foreman may apply to the Registrar in Form XII for permission to substitute the security given by him for the proper conduct of the chit by fresh security.

(2) The Registrar may grant permission after satisfying himself—

- (i) that the request of the foreman for substitution of the security given under section 20 is for the reasons stated in the application ; and
- (ii) that the fresh security offered is adequate.

(3) The procedure prescribed in rule 18 shall apply *mutatis mutandis* to the substituted security given by the foreman under this rule.

21. Procedure for accepting fresh security.—(1) The Registrar shall, if so required by the foreman, execute and register a deed of release in respect of the original security at the cost of the foreman.

(2) If the original security to be returned is Government securities deposited in a Government treasury, the Registrar shall arrange to return the securities offered by the foreman after making endorsements of re-transfer in the pass book (receipt) or Government security (or other record) as the case may be.

(3) If the original security to be returned is movable property other than Government security, the Registrar shall arrange to return such security by executing such deed or making such endorsement as may be necessary for an effective re-transfer in favour of the foreman.

22. Application for release of security.—On termination of the chit, the foreman may apply to the Registrar for the release of the security given by him.

23. Declaration by foreman.—The application for release of security under sub-section (5) of section 20 shall contain a declaration separately signed by the foreman stating that the claims of all the subscribers have been fully satisfied and that all dues payable by the foreman under the Act to the Registrar or any other officer have been fully paid.

24. Procedure for release of security.—(1) (a) The Registrar may, for the purpose of releasing the security under sub-section (5) of section 20 call upon the foreman to produce a copy duly certified to be a true copy of any register and book of accounts maintained by the foreman and shall exhibit a notice on his office notice board stating that the security is proposed to be released and that any person objecting to such release may file with the Registrar his statement of objections, if any, within fifteen days from the date of exhibition of the notice.

(b) If no objections are received within the period specified in the notice, the Registrar shall release the security.

(2) If any objections are received, the Registrar shall enquire into the objections summarily within fourteen days after the date of expiry of the period specified in the notice referred to in sub-rule (1) (a) and record his decision in writing and forward a copy thereof to the foreman and to the objector.

25. Books of accounts to be maintained by the foreman.—In addition to the book of minutes of draws mentioned in section 17, every foreman shall keep the following registers and books of accounts in the forms mentioned against each or in the forms as near thereto as possible:—

- (1) A register of subscribers in Form XIII.
- (2) A ledger in Form XIV.
- (3) A day book in Form XV.

- (4) A receipt book in Form XVI duly certified by the foreman as to the number of pages in duplicate.
- (5) A book containing copies of all notices issued by the foreman to the subscribers.
- (6) A file containing the letters of authorisation of the subscribers, for subscribing his name in the chit agreement and for participating in the auction of the chit.
- (7) A file containing the vouchers for payment made by the foreman.
- (8) A file containing documents relating to securities offered by the prized subscribers.

26. Accounts to be written up promptly.—(1) Every entry in the register of subscribers, the ledger or the day book mentioned in rule 25 shall be made as and when the particular event occurs.

(2) On receipt of any money, a receipt shall immediately be prepared or cause to be prepared by the foreman in Form XVI and delivered to the payer.

(3) The foreman shall, at the time of issuing every notice, prepare a copy thereof in the book mentioned under clause (5) of rule 25, certify it to be true copy and enter therein under his signature, the date of despatch of the notice.

(4) A voucher duly signed by the recipient shall be obtained by the foreman at the time any payment is made to him and such voucher shall be immediately filed in the file specified in clause (7) of rule 25 after due verification of all the particulars entered thereon.

(5) Every document relating to the security given by prized subscribers shall as soon as it is received be filed in the file mentioned in clause (8) of rule 25. The file shall contain an index for facilitating the scrutiny of the documents.

27. Filing of vouchers.—As soon as each payment is made, the foreman shall obtain a voucher from the payee. He shall verify whether the voucher specifies the purpose for which the payment was received and whether it is properly signed by the recipient and preserve it in the file mentioned in clause (7) of rule 25 after assigning a serial number thereto for each calendar month.

28. Date for submission of balance sheet.—(1) The balance sheet prepared in accordance with the provisions of section 24 shall be filed with the Registrar within a period of three months from the expiry of the period with reference to which it is prepared.

(2) Receipts and expenditure account and statement showing the assets and liabilities of the individual chit group shall be filed in the Form XXI with the Registrar within a period of **two months from the termination of the chit** when the duration of the chit does not exceed one year and when the duration of chit exceeds one year on expiry of every period of twelve months and also on the termination of the chit.

29. Audit by a chit auditor.—(1) If a foreman desires to have the balance sheet and profit and loss account audited by a chit auditor appointed under sub-section (2) of section 61, the foreman shall immediately after the preparation of the balance sheet make an application for such audit to the Registrar within whose jurisdiction the chit is conducted, specifying whether the audit shall be at the premises of the foreman or not. The application shall be accompanied by the amount of fee set out in Appendix II.

(2) The Registrar shall forward the application to the Inspector of chits having jurisdiction, who shall cause the balance sheet and profit and loss account to be audited by the chit auditor, as expeditiously as possible. On receipt of the application, the Inspector of chits shall forward it to the chit auditor, who shall thereupon call upon the foreman to produce the chit records on such date, time and place as he may fix and the foreman shall produce all registers, books of accounts and other records relating to the chit accordingly and furnish such information and give such facilities as may be necessary or required for the proper audit of the balance sheet and profit and

loss account and receipt and expenditure account of individual chit at the time and place fixed by the chit auditor.

(3) Notice of not less than seven days shall be given to the foreman as to the date of audit in the premises of the foreman or for the production of registers, books of account and other records relating to the chit business as the case may be.

30. Audit certificate and report of the chit auditor to be in quadruplicate.—The chit auditor shall prepare his report and audit certificate in quadruplicate and shall send one copy to the foreman, the second copy to the Registrar, the third copy to the Inspector of chits and keep the remaining copy for his own file.

31. Time for filing balance sheets audited by a chit auditor or other auditors.—(1) Where the audit is done by the chit auditor, the foreman shall file with the Registrar a copy of the balance sheet and profit and loss account together with the audit certificate and the auditor's report within one month from the date of the receipt of the audit certificate and audit report from the chit auditor or within three months from the last day of the period covered by the balance sheet, whichever is earlier.

(2) In the case of audit by an auditor qualified to act as auditor of companies under the Companies Act, 1956 (Central Act 1 of 1956) the foreman shall file with the Registrar the documents referred to in sub-rule (1) within three months from the expiry of the period with reference to which the balance sheet is prepared under section 24, and in the case of individual chit as referred to in sub-rule (2) of rule 28, within a period of 2 months.

CHAPTER IV

WINDING UP OF CHITS

32. Form of petition for winding up and presentation.—A petition for winding up of a chit shall contain the following particulars, namely:—

- (1) Full name, description, occupation and address of the petitioner.
- (2) Address of his advocate, if any, for the service of all notices, process etc.
- (3) Address of the foreman.
- (4) Particulars of the chit—
 - (i) Number and date of registration of the chit agreement;
 - (ii) Office where the chit agreement was registered;
 - (iii) The chit amount;
 - (iv) The total number of tickets;
 - (v) The number of subscribers and the number of tickets subscribed by each subscriber;
 - (vi) The number of non-prized subscribers on the date of the petition; and
 - (vii) The number of unpaid prized subscribers, if any.

(5) Facts on which the petitioner relies in support of the petition.

(6) Particulars relating to the award and execution of other process which has been returned unsatisfied in whole or in part, if the ground of the petition is that execution of other process issued on an award or order of the Registrar in favour of any subscriber in respect of the amounts due to him from the foreman was returned unsatisfied in whole or in part.

(7) Full details to show that the condition prescribed in clause (a) of the proviso to section 49 is satisfied, if the winding up of the chit is applied for under clause (d) of section 48 and if the said clause (a) applies.

(8) Whether the previous sanction of the State Government has been obtained, if clause (b) of the proviso to section 49 applies. (A copy of the relevant order of the State Government shall be attached).

33. Proposals for collection and distribution of chit assets.—(1) The Receiver shall as soon as possible settle and submit to the Registrar a statement (hereinafter referred to as the "Provisional statement") showing—

- (a) The names of subscribers and other persons from whom moneys are due to the chit;
- (b) The names of the subscribers and other persons to whom moneys are due from the chit;
- (c) Proposals as to how the chit assets are to be collected and applied in the discharge of its liabilities; and
- (d) The amount proposed to be paid to each of the persons specified in clause (b).

(2) Notice of the preparation of the provisional statement accompanied by a copy thereof shall be published and be served on the petitioner, the subscribers and other persons mentioned by the Receiver in such manner as the Registrar may direct. If the number of persons on whom notice is to be served is large, the notice may, in the discretion of the Registrar, be served on the petitioner only and advertised in one or more daily newspapers. The notice shall specify the date on which objections to the provisional statement will be heard and shall call upon any person having such objections—

- (i) to submit his statement of objections and the grounds therefor supported by an affidavit before the date appointed by the Registrar in this behalf; and
- (ii) to appear in person or by an advocate on the date of hearing with all the evidence in support of his objections.

34. Set-off to be allowed.—When money is due from the foreman to a subscriber and also from the subscriber to the foreman, the subscriber shall be allowed the benefit of a set-off.

35. Hearing of objections to the provisional statement.—On the date fixed for the hearing of the objections under sub-rule (2) of rule 33, the Registrar shall enquire into the objections and after considering the evidence, if any, adduced in support thereof pass orders on the objections and call upon the Receiver to revise, if necessary, the provisional statement in accordance with his orders. The Registrar shall fix a date by which such revision is to be made and intimate orally or in writing such date to the persons who have appeared in person or through their advocates on the date of the hearing.

36. Final orders of settlement by Registrar.—(1) As soon as possible thereafter and at least ten days before the date fixed under rule 35, the Receiver shall submit to the Registrar a fresh list of subscribers or other persons to whom or from whom moneys are due and fresh proposals for the distribution of the available chit assets after making such further enquiry as may be necessary. The Registrar shall thereupon consider the said list and proposals and approve or modify them in such manner as he considers necessary. The Registrar shall pass final orders accordingly on the date fixed under rule 35 for the collection and distribution of the chit assets. The Registrar may also pass such orders as may be necessary for the distribution of the available chit assets in case such assets happen to be insufficient to meet the sums which have to be paid to the subscribers.

(2) The final orders passed by the Registrar under this rule shall be conclusive evidence of the several claims to be met out of the chit assets.

37. Provision for expenses of winding up.—In making proposals for the distribution of the chit assets, the Receiver shall specify the estimated amount of the cost of winding up including remuneration for the Receiver and such other items of expenditure as are incidental to the winding up and such estimated amount shall first be provided for and deducted from the value of the chit assets and the balance amount shall also be proposed for distribution in the provisional statement and the fresh list mentioned in rule 36.

38. Filing of final accounts by Receiver.—(1) Upon the termination of the proceedings relating to the winding up, the Receiver shall file his final accounts with the Registrar within fifteen days of such final accounts being passed by the Registrar, the balance of money in the hands of the Receiver shall be paid to the Registrar. The Receiver shall also state how the balance amount may be disposed of together with the reasons for his proposals. He shall also deposit with the Registrar all books, accounts and all other records relating to the chit which has been wound up.

(2) The receiver may thereafter apply to the Registrar for a certificate of discharge from the duties as Receiver and for the vacating of his recognizance bonds entered into by him and the sureties, if any. On receipt of such application, the Registrar may pass orders of such discharge and vacating of the bonds and for the disposal of the final balance of the chit assets, if any.

39. Final order of winding up by the Registrar.—(1) After the affairs of a chit have been completely wound up, the Registrar shall make an order recording the fact of such winding up.

(2) A copy of such order shall be exhibited on the notice board of the Registrar.

40. Disposal of Records.—The books and papers of a chit which has been completely wound up and of the Receiver shall be retained and disposed of in such manner as the Registrar may direct.

41. Meetings.—When the number of subscribers is large and the Registrar, whether on application of the Receiver or not, at any stage considers that a meeting of all such parties is necessary in order to ascertain their wishes in any matter, the Registrar may pass an order for holding such a meeting. The Registrar may direct the manner in which and the time and place at which the meeting shall be held and the Receiver shall convene and hold the meeting accordingly.

CHAPTER V

FEEES

42. Table of fees.—The fees payable to the Registrar for matters specified in section 62 and section 63 shall be as set out in Appendix II and shall be paid in cash.

43. Receipt for fees.—The Registrar shall grant receipts for all fees received by him.

44. Refund of fees.—The Registrar may refund any fee paid to him in excess of the amount prescribed or any fee that is unearned.

Explanation.—The expression “fee that is unearned” in this rule means fees paid in connection with the registration of the chit agreement, the filing of a document or other service to be performed by the Registrar where such registration or filing is not actually effected or the service is not actually rendered.

CHAPTER VI

DISPUTES AND ARBITRATION

45. Reference of dispute.—A reference of a dispute under section 64 shall be made in writing to the Registrar in Form XVII. Wherever necessary, the Registrar may require the party referring the dispute to him to produce a certified copy of the relevant records on which the dispute is based and such other statements or records as may be required by him, before proceeding with the consideration of such reference.

46. Registrar's satisfaction regarding existence of a dispute.—Where any reference of a dispute is made to the Registrar or any matter is brought to his notice, the Registrar shall, on the basis of the reference (if any) made to him in Form XVII and the relevant records and statements submitted to him, record his decision together with the reasons therefor, whether he is or is not satisfied about the existence of a dispute within the meaning of section 64. Such recording of decision shall be sufficient proof of the Registrar's satisfaction whether the matter is or is not a dispute as the case may be.

47. Disposal of a dispute or reference to a Nominee.—(1) Where the Registrar is satisfied that there is a dispute, the Registrar may decide the dispute himself or refer it for disposal to his nominee.

(2) Neither the Registrar nor his nominee shall take up for consideration any dispute, unless the parties concerned comply with the conditions of affixing the court fees specified in rule 57 for determining the dispute.

48. Qualifications for appointment as registrar's nominees.—(1) The State Government may appoint a person to be a Registrar's nominee provided that—

- (a) he has practised as an Advocate, Pleader or Vakil for not less than five years, or
- (b) he is enrolled as an Advocate or holds a degree or other qualification in law of any University established by law or of any other authority which entitles him to be enrolled as an Advocate, and either (i) has held office not lower in rank than that of Deputy Registrar of Chits for not less than five year's or (ii) possesses good knowledge and experience of chit fund legislation and practice.

(2) The State Government may, by notification in the Official Gazette appoint as many persons as might be necessary to act as Registrar's nominees for settlement of disputes arising under the Act.

49. Procedure for hearing and decision of disputes.—(1) The Registrar or his nominee shall record in the official language in vogue in the State, the evidence of the parties to the dispute and the witnesses who attend. Upon the evidence so recorded and upon consideration of any documentary evidence produced by the parties, a decision shall be given by him in writing. Such decision shall be pronounced in the open court, either at once or as soon as may be practicable on some future day, of which due notice shall be given to the parties.

(2) Where neither party appears when the dispute is called out for hearing, the Registrar or his nominee may make an order that it be dismissed for default.

(3) Where the opponent appears and the disputant does not appear when the dispute is called out for hearing, the Registrar or his nominee may make an order that the dispute be dismissed, unless the opponent admits the claims or a part thereof, in which case the Registrar or his nominee, as the case may be, may make an order against the opponent upon such admission, and where, part only of the claim is admitted, may dismiss the dispute in so far as it relates to the remainder.

(4) Where the disputant appears and the opponent does not appear when the dispute is called out for hearing, then if the Registrar or his nominee is satisfied from the record and proceedings that the summons was duly served, the Registrar or his nominee may proceed with the dispute *ex parte*. Where the summons is served by any officer of the Registrar or his nominee, he shall make his report of service on oath.

(5) The Registrar or his nominee may not ordinarily grant more than two adjournments to each party to the dispute at his request. The Registrar or his nominee may, however, at his discretion grant such further adjournments on payment of such cost to the other side and such fees to the Registrar or his nominee as the Registrar or his nominee, as the case may be, may direct.

(6) Any party to a dispute may apply for and obtain a certified copy of any order, judgment or award made by the Registrar or his nominee on payment of copying fees, at the rate prescribed in Appendix II.

50. Summons notices and fixing of dates, place, etc. in connection with the disputes.—
(1) The Registrar, or as the case may be, his nominee, may issue summons or notices at least fifteen days before the date fixed for the hearing of the dispute requiring :—

- (i) the attendance of the parties to the dispute and of witnesses, if any; and
- (ii) the production of all books and documents relating to the matter in dispute.

(2) Summonses or notices issued by the Registrar or his nominee may be served through a Mamladar, Mahalkari, Tahsildar or any employee of the Chit Department or by registered post with acknowledgement due.

(3) The officer serving a summons or notice shall, in all cases in which summons or notices has been served, endorse or annexe or cause to be endorsed on or annexed to, the original summons or notice, a return stating the time when, and the manner in which, the summons or, as the case may be, notice was served, and the name and address of the person (if any) identifying the person served and witnessing the delivery or tender of the summons or the notice.

(4) The official issuing the summons or notice may examine the serving officer on oath or cause him to be so examined by the Mamladar or other officer through whom it is served and may make such further inquiry in the matter as he thinks fit; and shall either declare that the summons or, as the case may be, notice has been duly served or order it to be served in such manner as he thinks fit.

(5) The mode of serving summonses and notices as laid down in sub-rule (1) to (4) shall *mutatis mutandis* apply to the service of summonses or notices issued by the Registrar or the person authorised by him, when acting under section 46.

51. Investigation of claims and objections against any attachment.—Where any claim or objection has been preferred against the attachment of any property under section 68 on the ground that such property is not liable to such attachment, the Registrar, or as the case may be, his nominee shall investigate into the claim or objection and dispose of on merits:

Provided that, no such investigation shall be made when the Registrar or his nominee considers that the claim or objection is frivolous.

52. Procedure for the custody of property attached under section 68.—(1) Where the property to be attached is movable property, other than agricultural produce in the possession of the debtor, the attachment shall be made by actual seizure and the attaching officer shall keep the property in his own custody or in the custody of one of his subordinates, or of a Receiver, if one is appointed under sub-rule (2) and shall be responsible for the due custody thereof:

Provided that, when the property seized is subject to speedy and natural decay, or when the expenses of keeping it in custody is likely to exceed its value, the attaching officer may sell it at once.

(2) Where it appears to the officer ordering conditional attachment under section 68 to be just and convenient, he may appoint a Receiver for the custody of the movable property attached under that section and his duties and liabilities shall be identical with those of a Receiver appointed under order XL in the First Schedule to the Code of Civil Procedure, 1908.

(3) (i) Where the property to be attached is immovable, the attachment shall be made by an order prohibiting the debtor from transferring or charging the property in any way, and all persons from taking any benefit from such transfer or charge.

(ii) The order shall be proclaimed at some place on, or adjacent to, such property by beat of drums or other customary mode, and a copy of the order shall be fixed on a conspicuous part of the property and upon a conspicuous part of the village chavdi, and where the property is land paying revenue to the State Government, also in the office of the Collector of the district and in the office of the Mamladar or Mahalkari or Tahsildar or any other revenue officer within whose jurisdiction the property is situated.

53. Procedure for attachment and sale of property for realization of any security given by person in course of execution proceedings.—The procedure laid down in rules 51 and 52 shall *mutatis mutandis* apply for attachment and sale of property for the realization of any security given by a person in the course of execution proceedings.

54. Issue of proclamation prohibiting private transfer of property.—The Registrar when acting under clause (a) of section 71 shall, at the time of signing a certificate effecting any property, issue a proclamation in Form XVIII and in the case of immovable property shall also forward a copy of the proclamation to the Mamladar, Mahalkari or Tahsildar or any other revenue officer within whose jurisdiction the property is situated, who shall cause an entry about such certificate to be made in the Record of Rights.

55. Procedure for execution of awards.—(1) Every order or award passed by the Registrar, or his nominee under section 68 or 69 shall be forwarded by the Registrar to the foreman or to the party concerned with instructions that the foreman or, as the case may be, the party concerned should initiate execution proceedings forthwith according to the provisions of section 71.

(2) If the amount due under the award is not forthwith recovered, or the order thereunder is not carried out, it shall be forwarded to the Registrar with an application for execution along with all information required by the Registrar, for the issue of certificate under section 71. The applicant shall state whether he desires to execute the award through a civil court or through the revenue authorities as provided under section 71.

(3) On receipt of such application for execution, the Registrar shall forward the same to the proper authority for execution along with a certificate issued by him under section 71 and a proclamation issued under rule 54 in the manner prescribed therein.

(4) Every order passed in appeal under section 70 shall also be executed in the manner laid down in sub-rules (2) and (3).

56. Transfer of property which cannot be sold.—(1) When, in execution of an order sought to be executed under section 71, any property cannot be sold for want of buyers, if such property is in the possession of the defaulter or of some person on his behalf, or of some person claiming it under a title created by the defaulter subsequent to the issue of the certificate by the Registrar under clause (a) or (b) of the said section, the officer conducting the execution shall as soon as

practicable report the fact to the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be, and the judgment creditor applying for the execution of the said order.

(2) On receipt of a report under sub-rule (1) the judgment creditor may, within six months from the date of the receipt of the report or within such further period as may for sufficient reasons be allowed in any particular case by the Court or the Collector or the Registrar, submit an application in writing to the Court, the Collector or the Registrar, as the case may be, stating whether or not he agrees to take over such property.

(3) On receipt of an application under sub-rule (2) notices shall be issued to the defaulter and to all persons known to be interested in the property, including those whose names appear in the Record of Rights as persons holding any interest in the property, about the intended transfer.

(4) On receipt of such a notice, the defaulter, or any person owning such property, or holding an interest therein by virtue of a title acquired before the date of the issue of a certificate under section 71 may, within one month from the date of the receipt of such notice, deposit with the Court or the Collector or the Registrar, for payment to the foreman a sum equal to the amount due under the order sought to be executed together with interest thereon and such additional sum for payment of costs and other incidental expenses as may be determined in this behalf by the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be.

(5) On failure of the defaulter, any person interested, or any person holding any interest in the property, to deposit the amount under sub-rule (4), the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be shall direct the property to be transferred to the judgment creditor on the conditions stated in the certificate in Form XIX.

(6) The certificate granted under sub-rule (5) shall state whether the property is transferred to the judgment creditor in full or partial satisfaction of the amount due to him from the defaulter.

(7) If the property is transferred to the judgment creditor in partial satisfaction of the amount due to him from the defaulter, the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be, shall on the production by the judgment creditor of a certificate signed by the Registrar, recover the balance due in the manner laid down in section 71.

(8) The transfer of the property under sub-rule (5) shall be effected as follows:—

(i) In the case of movable property—

(a) where the property is in the possession of the defaulter himself or has been taken possession of on behalf of the Court or the Collector or the Registrar, it shall be delivered to the judgment creditor;

(b) where the property is in the possession of some person on behalf of a defaulter, the delivery thereof shall be made by giving notice to the person in possession directing him to give actual peaceful possession to the judgment creditor and prohibiting him from delivering possession of the property to any other person; and

(c) the property shall be delivered to a person authorised by the party to take possession on behalf of the judgment creditor.

(ii) In the case of immovable property—

(a) where the property is growing or standing crop, it may be delivered to the judgment creditor before it is cut and gathered and the judgment creditor shall be entitled to enter on the land, and to do all that is necessary for the purpose of tending and cutting and gathering it;

(b) where the property is in the possession of the defaulter or of some person on his behalf or some person claiming under a title created by the defaulter subsequent to the issue of a certificate under section 71, the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be, shall order delivery to be made by putting the judgment creditor or any person whom he may appoint to receive delivery on his behalf in actual possession of the property and if need be by removing any person who illegally refuses to vacate the same; and

(c) where the property is in the possession of a tenant or other person entitled to hold the same by a title acquired before the date of issue of a certificate under section 71, the Court or the Collector or the Registrar, as the case may be, shall order delivery to be made by affixing a copy of the certificate of transfer of the property to the judgment creditor in some conspicuous place on the property and proclaiming to such person by beat of drum or other customary mode at some convenient place that the interest of the defaulter has been transferred to the judgment creditor.

(9) The judgment creditor shall be required to pay expenses incidental to sale including the cost of maintenance of live-stock, if any, according to such scale as may be fixed by the Registrar from time to time.

(10) Where land is transferred to the judgment creditor under sub-clause (a) of clause (ii) of sub-rule (8) before the growing or standing crop is cut and gathered, the judgment creditor shall be liable to pay the current year's land revenue on the land.

(11) The judgment creditor shall forthwith report any transfer of property under sub-clause (b) or (c) of clause (ii) of sub-rule (8) to the village accountant for information and entry in the Record of Rights.

(12) The judgment creditor to whom property is transferred under sub-rule (5) shall maintain for each such defaulter a separate account showing all the expenses incurred including payment to outside encumbrances, land revenue and other dues on the property and all the income derived from it.

(13) The judgment creditor to whom property is transferred under sub-rule (5) shall use his best endeavour to sell the property as soon as practicable to the best advantage of the foreman as well as that of the defaulter, the first option being always given to the defaulter who originally owned the property. The sale shall be subject to confirmation by the Registrar. The proceeds of the sale shall be applied to defraying the expenses of the sale and other expenses incurred by the judgment creditor and referred to in sub-rule (9) and (12) and to the payment of the arrears due by the defaulter under the order in execution, and the surplus (if any), shall then be paid to the defaulter.

(14) Until the property is sold, the judgment creditor to whom the property is transferred under sub-rule (5) shall use his best endeavours to lease it or to make any other use that can be made of it so as to derive the largest possible income from the property.

(15) When the judgment creditor to whom property is transferred under sub-rule (5) has realised all his dues, under the order in execution of which the property was transferred from the proceeds of management of the property, the property, if un-sold shall be restored to the defaulter.

57. Payment of fees for decisions of disputes.—(1) The Registrar or his nominee, as the case may be, may take a dispute on file only if the application regarding reference for such dispute in Form XVII is affixed with court-fee stamps at the following scales, namely:—

	Proper court-fee Rs.P.
(i) Simple money claims—	
(a) When the amount of the claim in dispute does not exceed Rs. 1,000...	25.00
(b) When such amount exceeds Rs. 1,000 but does not exceed Rs. 5,000	50.00
(c) When such amount exceeds Rs. 5,000 ...	75.00
(i) Complicated money claims—	
(a) When the amount of the claim in dispute does not exceed Rs. 1,000...	50.00
(b) When such amount exceeds Rs. 1,000 but does not exceed Rs. 5,000	75.00
(c) When such amount exceeds Rs. 5,000 ...	100.00
(iii) All other disputes ...	100.00

Explanation.—For the purposes of this sub-rule, “simple money claim” means the claim of a foreman whose business consists of conducting chits including disbursement of prize amounts based on loan bonds, promissory notes, admissions or acknowledgements, and “complicated money claims” mean all money claims other than simple money claims. The question regarding the classification of a dispute for the purposes of this sub-rule shall be decided by the Registrar or his nominee deciding the dispute and the decision of the Registrar or his nominee, as the case may be, shall be final.

(2) No document of any of the kinds specified below shall be filed before the Registrar or his nominee unless it is affixed with the proper court-fee stamp as specified against it:—

						<i>Proper court-fee</i>	
						Rs.	P.
(i)	Vakalatnama	2.00
(ii)	Application for adjournment	10.00
(iii)	Application for interim stay or relief	25.00

(3) (a) The Registrar or his nominee deciding any dispute may require the party or parties to the dispute to deposit such sum as may, in his opinion be necessary to meet the expenses, including payment of fees to the Registrar or his nominee as the case may be.

(b) The Registrar or his nominee shall have power to order the fees and expenses of determining the dispute to be paid by the foreman out of his funds or by such party, or parties to the dispute, as he may think fit, according to the scale laid down by the Registrar, after taking into account the amount deposited as above.

(c) The Registrar may by general or special order specify the scale of fees and expenses to be paid to him or his nominee.

CHAPTER VII

MISCELLANEOUS

58. *Appeal to be in writing.*—(1) An appeal under section 70 or sub-section (1) and (2) of section 74 shall be either presented in person or sent by registered post to the State Government or to such officer or authority (hereinafter referred to as the appellate authority) as may be empowered by notification in the Official Gazette by the State Government in that behalf.

(2) The appeal shall be in the form of a memorandum which shall be affixed with court-fee stamps of Rs. 150.00.

(3) Every appeal shall—

- specify the names and addresses of the appellant as well as the respondent;
- state by whom the order appealed against was made;
- set forth concisely and under distinct heads the grounds of objections to the order appealed against with a memorandum of evidence;
- state precisely the relief which the appellant claims; and
- give the date of the order appealed against.

59. *Hearing and disposal of the appeal.*—(1) On receipt of the appeal, the appellate authority shall, as soon as possible examine it and ensure that—

- the appeal memorandum is affixed with court-fee stamps of the value specified in rule 58(2);
- the person presenting the appeal has the *locus standi* to do so;
- it is made within the specified time limit; and
- it conforms to all the provisions of the Act and those rules.

(2) In the proceedings before the appellate authority, the appellant and the respondent may be represented by an agent holding a power of attorney or by a legal practitioner.

(3) The appellate authority, on the basis of the enquiry conducted and with reference to the records examined, pass such order on appeal as may seem just and reasonable.

(4) Every order of the appellate authority under sub-rule (3) shall be in writing and it shall be communicated to the parties concerned and the Registrar.

60. Period of retention of records by the Registrar.—The records of a chit including registers and books of account shall be preserved in the office of the Registrar for eight years (a) from the release of the security in the case of chits which are terminated and (b) from the date when the affairs of the chit are completely wound up in cases dealt with in Chapter X of the Act and if orders passed under that Chapter are appealable, from the date of disposal of the appeal.

61. Register of records kept.—Every Registrar shall keep a separate register in which shall be entered particulars of all records relating to chits registered in his office.

62. Compounding of offences arising under the Act.—(1) Any officer empowered by the State Government shall issue a show cause notice before taking any action under sections 76 or 77 of the Act against any person who has committed, or reasonably suspected to have committed any offence under the Act, or rules made thereunder asking him to show cause within a period of fifteen days, why action under the said section 76 or as the case may be, under section 77 of the Act should not be taken against him.

(2) Notwithstanding anything contained in the said provision—

(i) any officer empowered by the State Government to compound the offence committed under the Act or reasonably suspected to have committed any offence under the Act and rules made thereunder may compound the said offence committed by any person, either before or after the institution of the criminal proceedings under the Act:

Provided that the said proposal to compound the offence is accepted by any officer authorised by the State Government;

(ii) on an approval of the said proposal by the officer empowered to approve such a proposal referred above, the officer empowered to compound the offence shall send an intimation in writing in that behalf to that person specifying therein,

(a) a sum determined by way of composition;

(b) the date on or before which the sum shall be paid.

Note.—It will be observed that while section 81 of the Chit Funds Act, 1982 merely empowers the State Government/Union territories to specify the conditions subject to which offences may be compounded, the provision in sub-rule (1) of rule 62 of the draft model rules forwarded to the State Government/Administration earlier goes a step further and specifies the offences which are compoundable. In other words, offences of a serious type such as those mentioned in section 76(1) and offences committed for the second time—*vide* section 77 of the Act, are not compoundable. A doubt had therefore arisen whether, in the circumstances, the provision in sub-rule (1) of rule 62 of the model rules might be struck down as *ultra vires* the provision in section 81 of the Act. With a view therefore, to remove doubts, if any, in this regard, a redraft of rule 62 as above has been suggested. However, the spirit under which new legislation was enacted is that offences under sub-section (1) of section 76 and offences committed for the second time—*vide* section 77 should not be compoundable. The State Government/Administration may therefore please issue suitable administrative instructions to the officials empowered under the aforesaid new rule 62 not to agree to compounding of these offences, after the proposed rules are brought into force.

APPENDIX I

FORM I

[See section 4(2) and rule 3]

(Form of application to be used by a foreman for obtaining prior sanction to commence or conduct a chit)

PLACE:

DATE:

FROM

.....

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
 Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

OR

(The Authorised Officer by designation).

Sir,

I,.....son/wife/daughter of.....
(here state profession or occupation) residing at.....
 /we, the Chairman and Secretary respectively* on behalf of..... (name of
 the firm, company, co-operative society, etc.) situate at/having its registered office at.....
 desire to commence and conduct a chit as foreman at..... (here specify the
 place with postal address in detail). Full particulars in this regard are given in the annexure hereto.

2. A certified true copy of the resolution passed by the Managing Committee/Board of
 Directors at its meeting held on the.....for
 commencing and conducting the chit in question is enclosed.

3. I/We remit herewith a sum of Rs..... (Rupees in words).....
only) being the fees prescribed for the purpose.

4. I/We hereby certify that the aggregate chit amount of the chits run by me/us is Rs.....
 (Rupees.....) on the date of this application and does
 not exceed the aggregate chit amount prescribed by section 13 of the Chit Funds Act, 1982
 (Central Act No. 40 of 1982).

5. I/We request you to accord your sanction for commencing and conducting the chit.
 On receipt of such sanction further steps for registration, etc., of the chit will be taken.

Yours faithfully

Chairman

Secretary

@for or on behalf of

Encls: Sheets.

Strike out or delete whatever is not applicable.

*Insert the designations as may be appropriate to the applicant.

@Here enter the name of the applicant institution, if any.

ANNEXURE

STATEMENT OF PARTICULARS

1. Name and address of the company/association of individuals/co-operative society/partnership/sole proprietorship (addresses of the Registered as well as the Head Office/Administrative Office, if any should be given).
2. Constitution i.e. whether incorporated as company/co-operative society or registered/un-registered association of individuals, partnership/sole proprietorship. (Also specify the provision of the Act under which incorporated/registered along with the date of incorporation/registration).
3. Names and addresses of the branches/offices, if any ...
4. Main objects of the institution (enclose a copy of the Memorandum and Articles of Association or as the case may be, of the Bye-laws or Rules regulating the activities of the institution).
5. Names, occupations and residential addresses of the directors or as the case may be, of the promoters/members of the committee of management/partners, etc.
6. Names and residential addresses of the Chief Executive Officer and two other officers immediately next to him, in the managerial set-up.
7. Names of the bankers and their addresses. ...
8. Names of the auditors and their addresses. ...
9. Particulars of the chit(s) to be started (such as the chit amount, duration of the chit, frequency of the draws, manner of draws, etc.—Also attach a copy of the draft of the chit agreement to be entered into with the subscribers).
10. Places where the chit scheme(s) are proposed to be conducted.
11. Names and addresses of the associate companies/co-operative societies/associations of individuals/partnerships/sole proprietorships.
12. Names, occupations and residential addresses of the directors or as the case may be, of the promoters/members of the committee of management, etc. of the institution (s) referred to in item 11.

I/We solemnly declare that the facts stated herein as also in the enclosures are true to the best of my/our knowledge, information and belief.

Dated this.....day of.....19...., at.....

Name(s) Signature(s)
Designation(s)
for and on behalf of.....*

*Here enter the name of the applicant institution, if any.

Strike out whatever is not applicable.

Note.—(i) If the space against any item is inadequate for furnishing full particulars, the required information should be given in separate sheets indicating the cross reference against the relative item of this statement.

(ii) A copy each of the latest available audited Balance Sheet and Profit and Loss Account, if any, should be attached.

FORM II

(See section 7 and rule 5)

APPLICATION FOR REGISTRATION OF THE CHIT AGREEMENT

Place:

Date:

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

Dear Sir,

1. (a) I,son of Shri.....
.....being the foreman conducting chit under the name and style of
@at.....
.....
or.....
.....
.....

(b) We.....
.....the Chairman and Secretary respectively of the foreman conducting
chit business under the name and style of @.....
at.....hereby apply for registration
of the chit agreement.

2. The chit agreement in duplicate is attached herewith together with a sum of Rs.....
being the registration fees as required under the Himachal Pradesh Chit Funds Rules, 1984.

3. The number of current chits which are running as on the date of this application is.....
.....and the aggregate chit amount of these chits involved therein is Rs.....
which is within the limits specified in section 13 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40
of 1982).

4. A certified true copy of the sanction obtained under section 4 of the above Act for com-
mencement and conduct of the chit in question is enclosed. A copy of the application dated the
.....together with its enclosures made to the State Govern-
ment/Authorised Officer in this behalf is also enclosed for information and ready reference.

5. I/We remit herewith a sum of Rs..... (Rupees in words).....
..... being the fee prescribed for the purpose.

DECLARATION

6. I/We have read the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) and the Rules
made by the State Government thereunder and I/we declare that the chit agreement has been
drawn up in conformity with the provisions of the said Act and the Rules.

The above statements are true and complete to the best of my/our knowledge, informa-
tion and belief.

Yours faithfully,

Chairman

Secretary

Name(s)

Designation(s)

@for and on behalf of (Foreman).

Note: (i) @Here enter the name of the applicant institution, if any.

(ii) Strike out or delete whatever is not applicable. Insert the designation(s) as may be
appropriate to the applicant.

FORM III

[See section 7(2) and rule 6]

ENDORSEMENT OF REGISTRATION

I hereby certify that the chit agreement relating to the chit proposed to be conducted by (the name and address of the foreman should be filled in here) as a foreman has this day of 19 been registered by me under sub-section (2) of section 7 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) as Chit No. of 19

Given under my hand and seal this day of 19, at

Signature of Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits, Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

(Seal).

FORM IV

[See section 8(4) and rule 9]

Place:
Date:

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits, Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

Dear Sir,

In terms of sub-section (4) of section 8 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) we hereby seek your approval for appropriating a sum of Rs. (Rupees in words) by withdrawal from the Reserve Fund of the Company. This withdrawal has been necessitated by the following circumstances—

(Here state the circumstances under which withdrawal from the Reserve Fund has become necessary).

2. We enclose for your information a copy each of the profit and loss account and the balance sheet for the last two accounting years as also a proforma of the balance sheet and profit and loss account for the current year ended 19 A true copy of the resolution passed by the Managing Committee/Board of Directors on the for appropriation of the said sum from the Reserve Fund is also enclosed. We shall be glad to furnish such further information as may be required by you.

3. We remit herewith a sum of Rs. (Rupees being the fees prescribed for the purpose.

4. We shall be glad if you will kindly grant us permission to withdraw a sum of from the Reserve Fund.

Yours faithfully,

Chairman

Secretary

*for and on behalf of (Foreman/company)

*Here enter the name of the applicant/company.

FORM V

[See section 9(1) and rule 10]

Place:

Date :

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

Dear Sir,

By your letter dated the.....you were pleased to grant me/us a certificate of registration to start a new chit of a chit amount of Rs..... and of a duration.....months.

2. I/We have subsequently enlisted the required number of members and we hereby declare in terms of sub-section (1) of section 9 of the chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) that all the tickets specified in the chit agreement have been fully subscribed.

3. I/We remit herewith a sum of Rs..... (Rupees in words)..... being the fees prescribed for the purpose of filing this declaration.

Yours faithfully,

Chairman

Secretary

for and on behalf of (Foreman).

Strike out or delete whatever is not applicable. Insert such designation(s) as may be appropriate to the applicant.

FORM VI

[See section 9(2) and rule 11]

CERTIFICATE OF COMMENCEMENT OF CHIT

Place:

Date:

Office of the Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits
Himachal Pradesh, Shimla-171 002

I hereby certify that.....* is entitled to commence and conduct the chit@....., the chit agreement in respect of which was registered in my office as Chit No.....of 19.....

Given under my hand and seal, this.....day of.....
19.....at

Seal.

Signature of Inspector General of
Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

*Here enter the name of the foreman.

@Here mention the chit amount and duration, etc., of the chit/s.

FORM VII

[See section 10(2) and rule 12]

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh, Shimla-171002.

Dear Sir,

The Chit Funds Act, 1982
(Central Act No. 40 of 1982)

I/wethe Foreman of the Chit/Chairman and Secretary on behalf of the foreman firm/company conducting the chit, the chit agreement bearing registration number.....of 19 has been registered in the office of the Registrar of Chits,.....do hereby certify that I/we have furnished to every subscriber of the chit a copy of the said chit agreement duly certified by me/us to be a true copy. The copies were furnished to each of the subscribers on.....

The date of obtaining the certificate of commencement of the said chit granted under sub-section (2) of section 9 is.....

The first draw of the said chit was held on.....

PLACE :
DATE

Yours faithfully,
Chairman
Secretary
for and on behalf of.....,
(Foreman).

Strike out/delete whatever is not applicable. Insert the designation (s) as may be appropriate to the applicant.

FORM VIII

(See section 6 and Rule 13)

FORM OF CHIT AGREEMENT

(Articles of Agreement between the foreman and the subscribers)

- (1) Office where the chit is registered
- (2) Year and Registered No.
- (3) Full name and address of foreman
- (4) Occupation (if applicable)
- (5) Age (-do-)

Year No.

I. Chit amount and number of tickets—

- (1) No. of tickets or fraction thereof held by each subscriber

Full
3/4
1/2
1/4
1/8

- (2) No. of instalments and amount payable for each ticket at every instalment

No. Amount
Rs.

(3) Chit amount

Rs.

II. Duration of the Chit—

(1) Date of 1st instalment

(2) Dates of subsequent instalments

(3) No. of instalments per year

(4) Date of termination

(5) Duration of the Chit

Years

Months

III. The place, time and probable date when the chit is to be commenced—

(1) Place (give full particulars)

(2) Probable date

(3) Time of commencement of the proceedings

IV. Particulars of security given or deposited by foreman—

(1) Under section 20 of the Act, the following security sufficient to the satisfaction of the Inspector General of Registration *cum* Registrar of Chits, Himachal Pradesh, Shimla-171002, the particulars of which are described below, has been given for the proper conduct of the chit—

[Here enter description of security such as cash/ Government security (immovable property.) etc. (In case immovable property has been charged, its particulars such as its description/location/market value etc. should be given.)]

(2) No. and date of the certificate of the Inspector General of Registration-*cum*-Registrar of Chits, Himachal Pradesh, regarding the sufficiency of security, if obtained.

(3) The foreman shall not get release of the security in full until all the liabilities under the chit are discharged.

V. Mode of conducting the chit—

(1) The subscriber who is to get the prize at any instalment shall be determined by lot or by auction at the time and place specified in Article III.

(Here specify the smallest fraction of a ticket, the prize for which will be determined by lot or by auction, and the time allowed for each process).

(2) Where the prize is to be determined by auction, a ticket or fraction thereof shall be auctioned for a sum not less than the chit amount minus foreman's commission, and the subscriber who bids for the highest discount not exceeding 30% of the total amount of the chit shall be entitled to have it confirmed in his name.

Note.—Where a fraction of a ticket is auctioned, the subscriber who bids it for the highest discount is entitled to have confirmed in his name at the same rate as many such fractions as he wished to bid.

(3) In cases where the subscribers are not prepared to bid any ticket or fraction thereof or where the discount is not sufficient to meet the foreman's commission, the subscriber who is entitled to the prize amount shall be determined by lot. The subscriber so determined shall be deemed to be the prized subscriber who shall be entitled to the chit amount for his ticket less foreman's commission for that ticket.

(4) A defaulter subscriber shall not be entitled to take part in the proceedings.

(5) If for any reason the subscriber is unable to take part in the proceedings, he may in writing authorise an agent in that behalf. Such agent shall have all the rights and privileges of a subscriber at such proceedings.

VI. Mode of payment of each instalment—

(1) Every subscriber shall on the date of each instalment pay to the foreman the amount due for his ticket for each such instalment and get a receipt in that behalf from the foreman.

(2) In the case of a prized subscriber, if the amount due from him for a particular instalment is not paid on the date of that instalment, it shall be paid within (here mention weeks or months) with interest at (here specify the rate) failing which it shall be competent to the foreman to realise from the defaulter in a lump all the future subscriptions due from him together with the interest due thereon and other incidental expenses.

(3) In the case of a non-prized subscriber, if the amount due from him for a particular instalment is not paid on the date of that instalment, it shall be paid within (here mention weeks or months) with interest at (here specify the rate) failing which it shall be open to the foreman to remove him from the list of subscribers and have another person substituted for such defaulter subscriber. The foreman shall duly inform the defaulter subscriber of the action taken against him.

Note.—Under clauses (2) and (3) the period within which the amount shall be paid and the rate at which interest due thereon shall be paid may be such as shall not be inconsistent with the provisions of the Act or any law for the time being in force.

(4) A non-prized defaulting subscriber shall be entitled to the amount paid by him and the discount due to him on his executing an acknowledgement in writing at the time the substituted subscriber draws the prize amount. If the defaulter subscriber fails to obtain the amount due to him, the foreman shall deposit the same in the approved bank. If the foreman fails to pay such subscriber, the amount so due to him on the due date, it shall be competent for such subscriber to realise such amount with interest permissible under the law for the time being in force.

VII. Procedure for receiving the prize amount by a prized subscriber—

(1) A prized subscriber or his nominee shall receive from the foreman the prize amount within (here specify the period) after furnishing to the satisfaction of the foreman sufficient security, for the payment of future subscriptions.

(2) In case the prized subscriber or his nominee fails to receive the prize amount after furnishing sufficient security, the foreman shall deposit the amount in the approved bank and inform the prized subscriber of that fact.

(3) In case the amount so deposited is not sufficient for the payment of future subscriptions, it shall be competent to the foreman to realise from such prized subscriber such amount as may be deficient together with the interest due thereon and all other incidental charges.

(4) In case there remains any portion of the amount deposited after paying the future subscriptions and other charges such portion shall be payable by the foreman to the prized subscriber after the termination of the chit, failing which it shall be competent to the prized subscriber or nominee to realise from the foreman such portion as remains together with the interest due thereon from the date of termination of the chit.

(5) If at any time after the prize amount is deposited in an approved bank, the prized subscriber or his nominee furnishes sufficient security, the foreman shall withdraw the amount so deposited and pay it to the prized subscriber or his nominee after deducting therefrom the amount due from him for the payment of the instalments prior to the date on which the security is furnished.

(6) If the foreman fails to pay the prize amount to the prized subscriber or his nominee furnishing sufficient security it shall be competent to such subscriber or nominee to realise from the foreman the prize amount together with the interest due thereon from the date of furnishing such security.

VIII. Disbursement of discount—

The discount for every ticket auctioned shall be distributed equally between the prized and non-prized subscribers after deducting therefrom the foreman's commission.

IX. Foreman's commission and the instalment at which the foreman is to get the prize—

(1)(Here specify the date and number of instalment at which the foreman is to get the prize) First and the last instalment not being subject to auction, the subscribers shall be liable to pay the full amount of their tickets.

(2)(Here specify the rate per cent of foreman's commission and the total amount of commission chargeable on the chit amount.

Note.—Any other amount agreed to by the subscribers for any other purpose may also be specified here.

X. Transfer how to be effected—

(1) It shall not be competent to any subscriber to transfer his rights in a chit except with the consent in writing of the foreman provided that no such consent shall be necessary in the case of transfer by a subscriber whose name has been removed by the foreman from the list of subscribers for default of payment of subscriptions. The transferee (whether he is already a subscriber or not) shall be entitled to no more rights than the transferor had in the chit in respect of the ticket or fraction thereof is transferred.

(2) No transfer of the rights of a foreman to receive subscriptions from the prized subscribers shall be made without the previous sanction in writing of the Registrar of Chits. Any such transfer shall, if it defeats or delays a non-prized subscriber, be avoidable at the instance of such subscriber.

XI. Balance Sheet and subscriber's right to examine chit records.—

(1) On termination of a chit, the foreman shall prepare balance sheet containing a summary of the assets and liabilities of the chit and giving such particulars as will disclose the nature of the assets and liabilities and how the value of the assets has been arrived at. Such balance sheet shall be made available for auditing by the auditors specified in rule 29 and a certificate of such auditing shall be received by the foreman and kept by him.

(2) The foreman shall make available for examination by the subscribers all the chit records between(here specify the time) on all the dates of the draw.

XII. Banks where chit money may be deposited—

[Here specify the name of the approved bank (s) the foreman proposes to deposit chit money].

XIII. Miscellaneous.—

(1) The subscriber who gets his prize at the last instalment shall be entitled to the chit amount less the foreman's commission. The foreman shall pay up such

amount within (here specify the period) after the date of termination of the chit failing which the prized subscriber shall be competent to realise the amount from the foreman together with the interest due thereon from the date aforesaid.

(2) Any amount due to the foreman from any subscriber on account of the chit shall be a first charge on the subscriptions paid by such subscriber. Similarly, the security and all chit moneys deposited by the foreman shall be liable for discharging any amount due from the foreman to the subscribers.

(3) Receipts shall be granted for all payments by the foreman to the subscribers or by the subscribers to the foreman.

(4) The chit amount shall in no case be enhanced; but if necessary it may be reduced.

(5) The foreman shall convene a meeting on the requisition in writing of not less than 25 per cent of the number of non-prized and unpaid prized subscribers for making any alteration in the chit agreement not inconsistent with the provisions of the Act and the Rules made thereunder.

(6) If for any default of the foreman, the conduct of the chit is not continued, the foreman shall pay to the non-prized subscribers their contributions including discount within (here specify the period), failing which it shall be competent to such subscribers to realise the amount together with the interest due thereon from the foreman or from all or any of the following assets:—

- (a) the security given or deposited by the foreman;
- (b) other properties belonging to the foreman;
- (c) the future subscriptions due to the foreman from the prized subscribers.

(7) In case where the foreman holds tickets as an ordinary subscriber in addition to the ticket of which he is entitled to the prize without deduction of the discount, he shall not have any more rights or privileges than the other subscribers have in the chit. When the foreman bids such tickets, he shall furnish sufficient security for the payment of future subscriptions as required by the Act and the Rules made thereunder.

(8) If before the termination of the chit, the foreman dies or otherwise becomes unable to conduct the chit—

- (i) Here specify the arrangements made for the conduct of the chit.
- (ii) In such a case any one or more of the non-prized subscribers authorised by a special resolution may, in the absence of any provision in this chit agreement for the future conduct of the chit, take the place of the foreman and have the right to continue the chit or to make suitable arrangements for the future conduct of the chit.

(9) Here specify any other provisions that may be agreed to such as payment of interest or penalty, if any, payable or any default in the payment of stipulated instalments, etc.

(10) The subscribers who have affixed their signature hereunder agreed to the above articles:—

Sl. No.	Name and full address of subscriber	No. of tickets taken	Subscriber's signature and date	Name, signature and address of witness
1.	Foreman			
2.				
3.				
4.				
5.				
etc.				

FORM IX

(See section 16 and rule 16)

Notice to subscribers of Chit Numberof 19

Sir,

This is to inform you that the.....draw in
 monthly/quarterly/half yearly/yearly Chit No. /19.....
 in which you are one of the subscribers will be held on.....day.....
 (month), 198.....at.....A.M./P.M. at.....(address)

You may kindly make it convenient to be present at the draw in person or by your duly
 authorised agent.

Yours faithfully,

Secretary

for and on behalf of foreman .

*Strike out or delete whatever is not applicable. Insert such designation(s) as may be appropriate.

FORM X

(See section 20 and rule 18)

Application for permission to furnish security for conducting the chit

To

The Inspector General
 Registration-cum-Registrar of Chits,
 Himachal Pradesh, Shimla-171 002.

Dear Sir,

I/We propose to give the undernoted security in respect of the chit proposed to be started by
 me/us, the certificate for commencement of which was granted by you on.....
 (vide No.....dated.....). Other
 particulars are also given below:—

1. Name and address of the applicant
2. Age and occupation
3. Chit amount
4. Details of cash/Government security/any
 other movable security offered as security.
5. Details of immovable properties offered
 as security

1. District.....
 Sub-District.....
 Taluka.....
 Village.....S. No.....
 Area.....etc.

6. Rights of the applicant over the property
7. Market value of the property
8. Details of prior encumbrances, if any, on
 the property.

2. -do- -do-
 etc.

9. Movable (and immovable) properties belonging solely to the applicant (to be shown separately).
10. Whether the applicant has any debt and if so, the amount of such debt.
11. Whether the applicant has conducted any chit before and if so, whether there is any subsisting liability under the same.

*I am/we are appending herewith:—

- (1) title deeds in support of title to the property offered as security; and
- (2) the encumbrance certificate of the property for the past 30 years.

The information and particulars furnished herein are true and correct to the best of my/our knowledge, information and belief.

Yours faithfully,
Chairman
Secretary
Signature(s),

PLACE :

DATE :

for and on behalf of.....

Note.—(1) *Applicable only when the security offered is immovable property.

- (2) Strike out/delete whatever is not applicable. Insert the designation as may be appropriate to the applicant.

Details of decision

Signature of Registrar of Chits.

(Seal)

FORM XI

(See rule 18)

Certificate of Sufficiency of security

Office of the Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits
Himachal Pradesh, Shimla-171 002

Place :

Date :

In the case of :

1. Cash/Government security/other movable security.

I hereby certify that I am satisfied that the amount/Government security/other security(to be specified), mentioned herein and deposited in an approved bank/transferred in my name is adequate and that the same can be accepted under section 20 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982).

(Seal)

*Signature of the Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh.*

2. Security of immovable property.

I hereby certify that the valuation of the properties as given in the application dated..... filed by the foreman/subscriber-foreman is correct, and that it can be accepted under section 20 of the Chit Funds Act, 1982.

(Seal)

*Signature of the Inspector General of Registration-
cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh.*

*Strike out/delete whatever is not applicable.

FORM XII

[See section 20 (3) and rule 20]

Application for the substitution of the security

To

The Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits,
Himachal Pradesh,
Shimla-171 002.

Place :

Date :

Dear Sir,

I/We propose to give the undernoted security in substitution of the original security for proper conduct of the chit, for the commencement of which a certificate had been granted by you (*vide* No.....dated.....).

Certain other particulars are also given below:—

1. Name of Foreman
2. Age and occupation if the Foreman is not a firm or a company
3. The office in which the chit agreement of the chit has been registered and the number and year of registration
4. Chit amount
5. Details of the original security given
6. Details of all movable (and immovable) properties belonging solely to the applicant
7. Whether the applicant has any debt and if so, the amount of any such debt and to whom they are due.
8. Details of Government security/other securities offered as substituted security.

Rs.

I/We hereby declare that the information and particulars furnished herein are true and correct to the best of my/our knowledge, information and belief.

*Yours faithfully,
Chairman
Secretary*

*Signature (s)
for and on behalf of.....*

*Strike out/delete whatever is not applicable. Insert the designations as may be appropriate to the applicant.

Seal.

*Decision of Inspector General of Registration-
cum-Registrar of Chits ,*

*Signature of Inspector of General of
Registration-cum-Registrar of Chits.*

FORM XIII
(See section 23 and rule 25)

Form of Register of subscribers to be maintained
Office where the chit agreement of the chit is registered

The registration number and year of registration of chit agreement of the chit

Serial number according to chit-agreement	Name and full address of the subscriber	Date of signing the chit agreement	Date of receipt of the copy of the chit agreement by the subscriber	Chit subscriber	
				Number of tickets	Amount
1	2	3	4	5	6
					Rs.

Assignment

Name and address of the assignee	Date of assignment	Number and fraction of tickets	Amount	Date on which the Foreman recognised the assignment
7	8	9	10	11
				Rs.

Substitution

Reason for the re- moval of subscriber	Date of removal	Name and address of the substi- tuted subscriber	Date of substitu- tion	Number and fraction of tickets	Amount	Date of intimation of the substitu- tion to the removed subscriber	Remarks
12	13	14	15	16	17	18	19
							Rs.

FORM XIV

(See section 23 and rule 25)

FORM OF THE LEDGER TO BE MAINTAINED

Office where the chit agreement of the chit is registered.....

Registration number of the chit agreement.....

Section I—Receipts and payments in respect of subscriber—

Number of subscriber ..
 Name of subscriber ..
 Number of tickets taken ..
 Chit amount .. Rs.

Ledger

Date	Number of instalment	On what account received or paid by the Foreman	Amount of subscription for each instalment	Dividend due to the subscriber for each instalment
1	2	3	4	5
			Rs.	Rs.

Amount paid by subscriber		Amount received back by subscriber	General number in the day book	Signature of the		Remarks
Share amount	Interest			Subscriber	Foreman	
6	7	8	9	10	11	12
	Rs.	Rs.				

Section II—Deposit and withdrawal account of the Foreman.....

Name of the bank in which money is deposited.....

Date	For what purpose deposited or withdrawn	Amount deposited	Interest accruing	Balance after each transaction	Amount withdrawn
1	2	3	4	5	6
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.

Balance	Number in the day book	Signature of the Foreman	Remarks
7	8	9	10
Rs.			

FORM XV.

(See section 23 and rule 25)

Form of the Day Book to be maintained

Office where the chit agreement of the chit is registered

Registration number of the chit agreement.....

DAY BOOK

Date	General number	On what account received or paid	Receipts				
			Subscriptions	Interest	Withdrawal from bank	Other items	Total receipts
1	2	3	4	5	6	7	8
			Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
<hr/>							
Reference to receipt in the receipt book	Expenditure						Total Expenditure
	Amount paid to subscriber	Foreman's Commissions	Deposit in the bank	Other items			
9	10	11	12	13			14
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.			Rs.
<hr/>							
Balance	Reference to the page number of the voucher in the file of vouchers				Signature of foreman		Remarks
15	16				17		18
Rs.							

- Note.*—(1) The balance should be struck in column (15) at the close of each day. The monthly total of receipts and expenditure shall be struck at the end of each month.
- (2) In column (2) each transaction shall be assigned a serial number. There shall be one separate set of serial numbers for each calendar year.
- (3) If any amount is received from or paid to more than one subscriber at a time the amount paid to or received from each subscriber should be entered as a separate item.
- (4) If more than one amount is received from or paid to the subscriber at a time each amount paid to or received from the subscriber should be entered as a separate item.

FORM XVI

(See section 23 and rule 25)

FORM OF THE RECEIPT BOOK TO BE MAINTAINED

Original	Receipts	Serial number
Duplicate		

Received from.....to the credit of.....the amounts detailed below in respect of the chit agreement registered under number..... of..... 19 .

Rs. P.

Payment for current instalment

...

Arrears of subscription (with details)

...

Penalty for overdue subscription

...

Fees for inspection of records

...

Other receipts (to be specified)

...

Total

...

(In words Rupees
Date :

Paise

)

for and on behalf of Foreman.

Note.—Strike out/delete whatever is not applicable. Insert the designation(s) as may be appropriate to the applicant.

FORM XVII

(See section 64 and rule 45)

APPLICATION FOR REFERENCE OF A DISPUTE TO ARBITRATION

BEFORE THE INSPECTOR GENERAL OF REGISTRATION-CUM-THE REGISTRAR/
ADDITIONAL/JOINT/DEPUTY/ASSISTANT REGISTRAR OF CHITS

1. Name	Age	}	Disputants
Occupation:	Address:		
2. Name:	Age:	}	
Occupation:	Address:		
3. Name.	Age:	}	
Occupation:	Address:		
<i>Versus</i>			
1. Name:	Age:	}	Opponents.
Occupation:	Address:		
2. Name:	Age:	}	
Occupation:	Address:		
3. Name:	Age:	}	
Occupation:	Address:		

(Here give full particulars of the claim or the facts of the case constituting the cause of action when it arose etc.)

The disputant/disputants prays/pray as under:—

.....
.....

In support of the above claim or relief sought I/we enclose documents and papers as per the list annexed hereto.

Date: (Signed).....
Disputant/Disputants.

I/We.....disputant/
disputants declare that the facts stated above are true to the best of my/our knowledge and belief.

Date: (Signed) (1)
(2) } Disputants.
(3)

Filed in the office of.....on.....19 .

- Note:**
- (1) In case there are more Disputants or Opponents their names, addresses, ages and occupations should also be mentioned.
 - (2) In disputes relating to monetary claims, the disputants should state the precise amount claimed but where this can not be exactly ascertained the disputants shall state the approximate amount claimed.
 - (3) When the disputant-foreman is a company/co-operative society or a partnership firm, a copy of the resolution of its Board of Directors or as the case may be Managing Committee shall accompany the application.

FORM XVIII

(See section 71 and rule 54)

PROCLAMATION TO BE ISSUED AT THE TIME OF THE ISSUE OF A CERTIFICATE

A. In the case of immovable property:

Whereas.....(Judgment-creditor) has obtained an award under section 69 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) for an amount of Rs..... against.....(judgment-debtor) and proposes to execute the same by sale of the undermentioned property of the said judgment-debtor and whereas the said judgment-creditor has obtained a certificate dated.....for execution of the award under section 71 of the said Act.

Notice is hereby given that any private transfer or delivery or, or encumbrance or charge on, the property made or created after the issue of the certificate shall be null and void against the said judgment-creditor under section 72 of the Act aforesaid.

DESCRIPTION OF THE PROPERTY

Date of award or order	Names of the parties against whom award or order has been passed and certificate under section 71 has been issued	Survey No. or House No.	Name of the village or town etc.	Area	Assessment or other taxes	Other description of the property such as boundaries etc.	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Rs.							

The notice shall be proclaimed at some place on or adjacent to such property by beat of drum or other customary mode, and a copy of the said notice shall be fixed on a conspicuous part of the property and upon a conspicuous part of the village Chavadi and also where the property is land paying revenue to the State Government, in the office of the Collector of the District in which the land is situated.

Place.....

Inspector General of Registration-
cum-Registrar of Chits.

Date:.....

B. In the case of movable property a similar notice may be given with necessary changes as to the description of the property. A copy of the notice shall be delivered to the judgment-debtor.

FORM XIX

[See rule 56(5)]

CERTIFICATE FOR TRANSFER OF PROPERTY

In the case of immovable property:

WHEREAS in execution of the award made under section 69 of the Chit Funds Act, 1982 (Central Act No. 40 of 1982) in favour of (hereinafter referred to as the judgment-creditor) an order was passed on the day of 19 for sale of the under-mentioned property of the person or persons (debtor or debtors);

And whereas the Court/the Collector/the Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits is satisfied that the said property cannot be sold for want of buyers;

It is hereby ordered that the right, title and interest of the debtor in the said property shall vest in the said judgment-creditor and shall be delivered to him subject to the terms and conditions laid down in the Schedule hereto annexed.

DESCRIPTION OF THE PROPERTY

Survey No. 1	Area and assessment 2	Nature of right, title and interest of the defaulter 3	Details of encumbrances to which property is subject 4
-----------------	--------------------------	---	---

THE SCHEDULE

The said property is transferred to the judgment-creditor in full/partial satisfaction of the amount due to him from the debtor.

Given under my hand and seal of the Court/Collector/Registrar this..... day of.....19 .

Court/Collector/Inspector General of Registration-cum-Registrar of Chits.

In the case of movable property:

(The form shall be similar with necessary changes as regards the description and the delivery of the property).

FORM XX

FORM OF LETTER OF AUTHORITY

[See sub-rule (c) of Rule 2]

I,.....who/am/is.....
(name)

.....of M/s.....
(Designation)

being a foreman of the Chit series No.....registered under registration No..... hereby appoint Shri.....as my authorised representative to attend on my/our behalf in the matters connected with the above chit to produce accounts and documents and to receive on my/our behalf any notice or document issued and to take all necessary steps in the matters.

The said Shri.....is also hereby authorised to act on my behalf/behalf of the said..... in the said matter.

I/We agree to ratify all acts done by the said Shri..... in pursuance of this authority.

Place:

Signature:

Date:

Status:

FORM XXI

[See rule 28(2)]

Name of the Foreman:

- | | |
|---|---|
| <p>(i) Office where the bye-laws of the Chit are registered.</p> <p>(ii) Date of which the balance sheet was Prepared.</p> <p>(iii) Number of instalments conducted till date of balance sheet.</p> | <p>(i) Registration number and year of the bye-laws of the Chit.</p> <p>(ii) Name of the Foreman.</p> <p>(iii) Chit amounts.</p> <p>(iv) Number of instalments.</p> |
|---|---|

I. RECEIPTS AND EXPENDITURE

Receipt	Current Year	Total including previous years.	Expenditure	Current year	Total including previous years.
	Rs. P.	Rs. P.		Rs.p.	Rs. P.
1. Subscriptions paid by the prized and non-prized subscribers.			1. Prize amounts disbursed to prized subscribers.		
2. Receipts under dividend.			2. Interest paid to subscribers.		
3. Interest realized from the subscribers.			3. Amounts paid to defaulter non-prized subscribers.		
4. Contributions by substituted or assignee non-prized subscribers in respect of dues of defaulters.			4. Amount contributed by Foreman for payment of the prize amount.		
5. Any other amount received from subscribers.			5. Foreman's commission.		
6. Amount contributed by the Foreman for payment of prize amount.			6. Amounts on account of interest realised for delayed payments and forfeited dividend.		
7. Interest accrued from investments.			7. Dividend paid		Rs. P.
8. Other items (details to be annexed).			8. Sinking fund.		
9. Investments withdrawn			9. Other items (details to be annexed).		
			Total expenditure.....		
			10. Investments made:		
Grand Total...			Grand Total:		

II. STATEMENT OF ASSETS AND LIABILITIES

<i>Assets</i>	<i>Rs. P.</i>	<i>Liabilities</i>	<i>Rs. P.</i>
1. Amounts due on account of arrears of subscription due from prized subscribers.		1. Amounts paid by non-prized subscribers (including dividend).	
2. Amounts due from the subscribers including the Foreman towards future subscriptions.		2. Amounts due to non-prized defaulter subscribers.	
3. Interest due from defaulter subscribers.		3. Arrears of prize amount due to prized subscribers.	
4. Investments in bank (including interest thereon).		4. The amounts due to the Foreman towards contributions made by him for the payment of prize amount.	
5. Other items (details to be annexed)		5. Other items (details to be annexed)	
6. Sinking fund		6. Sinking fund.	
Total:	_____	Total:	_____

III. DETAILS OF INVESTMENTS

<i>Receipts</i>	<i>Rs. P.</i>
1. Investment made on account of the failure on the part of prized subscribers to receive the prized amount due to them.	
2. Investment made on account of lump-sum collection made from defaulter prized subscribers.	
3. Amount deposited for payment to non-prized defaulter subscribers.	
4. Investments on account of other items of receipts of the Chit (details to be annexed).	
Total:	_____

IV. ASSESSMENT OF VALUE OF INVESTMENT

- Investment in pass book account number.
- *Amount due from the future instalments of the Chit as per bonds, etc., obtained for.....instalments of the chit including the arrears of Rs.....due on account of defaulting instalments from defaulters.
- Balance of contributions due from the Foreman on account of prize amount received by him.

Note.—To facilitate audit of balance sheets, the following statements of details should be annexed by the Foreman to the balance sheet:—

- Statement of details of receipts and expenditure for each instalments
- Of disbursement
- Of the prize amount in respect of each instalment; and
- Statement of details of arrears due on the date of the preparation of the balance sheet from the prized and non-prized subscribers.

*Particulars of documents to be entered here.

Security offered by the Foreman, hypothecation bonds, etc., executed under section 20, and hypothecation bonds etc., obtained from the prized subscribers under section 31 of the Act.

V. CERTIFICATE BY FOREMAN

I certify that the above accounts have been prepared correctly and that they contain a true and complete statement of the affairs of the chit.

Date:

Name and Signature of the Foreman.

VI. CERTIFICATE BY AUDITOR

Certified that I have examined the chit books and records maintained in respect of the chit.....the bye-laws of which have been registered in.....as number.....19....(conducted by Foreman.....and have verified the entries in the accounts with the books. The accounts are drawn up in conformity with the provisions of the Chit Funds Act, 1982 and the Rules framed thereunder.

Date:

Name and Signature of the Auditor.

Seal.

APPENDIX II

(See sections 62, 63 and rule 42)

LEVY OF FEES UNDER SECTION 62 AND 63 OF THE CHIT FUNDS ACT, 1982
(CENTRAL ACT No. 40 OF 1982)

TABLE OF FEES

Rs. P.

- | | | | |
|---|-----|-----|-------|
| 1. For the application of previous sanction to commence or conduct a chit under sub-section (2) of section 4 | ... | ... | 25.00 |
| 2. For filing a chit agreement under sub-section (1) of section 7 | ... | ... | 1.00 |
| 3. For issue of certificate of commencement of chit business under sub-section (2) of section 9 | ... | ... | 1.00 |
| 4. For filing of a certificate under sub-section (2) of section 10 | ... | ... | 1.00 |
| 5. For filing a copy of the minutes of the proceedings under section 17 | ... | ... | 0.50 |
| 6. For every application for registration of an alteration, addition or omission of any provision in a chit agreement under sub-rule (1) of rule 14 | ... | ... | 3.00 |
| 7. A fee of rupee one shall be levied in each case for filing with the Registrar:— | | | |
| (a) a copy of each entry relating to the removal of defaulting subscriber under sub-section (3) of section 28. | | | |
| (b) a true copy of each entry relating to the substitution of a subscriber under sub-section (2) of section 29. | | | |
| (c) a true copy of entry relating to transfer of the rights of Foreman under section 37. | | | |
| (d) a copy of entry relating to transfer or non-prized subscriber's rights under section 37. | | | |
| (e) a true copy of assent of non-prized subscribers and unpaid prized subscribers for withdrawal of a Foreman under section 41. | | | |
| (f) a true copy of consent of all non-prized or unpaid prized subscribers to the termination of chit under section 41. | | | |

(g) each petition protesting against or objecting to the orders passed or proposed to be passed by the Registrar. Rs. P.

- | | | | |
|-----|--|-----|-------|
| 8. | If the balance sheet is audited under section 24 or the chit books and records inspected by the Registrar or any officer authorised by the Registrar under section 46 or the accounts books and other records of the chit audited by the Chit Auditor at the premises of the Foreman or outside the office of the Registrar, for each such audit or inspection | .. | 50.00 |
| 9. | For inspection of one or more records relating to a chit under section 62 for each inspection | ... | 1.00 |
| 10. | For every 100 words or fraction thereof of a copy or extract of the records relating to a chit furnished under section 62 | ... | 0.25 |
| 11. | For every 100 words or fraction thereof of a certified copy of any order, judgment or award made by the Registrar or his nominee under section 69 | ... | 0.25 |
| 12. | For every appeal to the State Government under section 74 | ... | 5.00 |

